A Daily News Magazine
इंदौर
गुरुवार, 04 अप्रैल, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 174 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्यों 'स्वतंत्र व निष्पक्ष' चुनाव के पैमाने पर भी खरा नहीं दिख रहा चुनाव?

योगेंद्र यादव

चुनावी भविष्यवाणी के तौर पर एक बात बेधड़क कही जा सकती है: साल 2024 का आम चुनाव आज़ाद भारत का सबसे कम स्वतंत्र और सबसे कम निष्पक्ष आम चुनाव साबित होने जा रहा है। हां, हमें अभी ये नहीं पता कि ये चुनाव हद दर्जे का पक्षपाती साबित होगा या फिर पूरी तरह से एक प्रहसन में तब्दील हो जाएगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी सहित हाल-फिलहाल के घटनाक्रम से ये बात साफ हो गई है कि यह चुनाव अपनी गिरावट में चुनावी विश्वसनीयता के न्यूनतम ज़रूरी मानक को उलांघता हुआ और भी नीचे चला जाएगा। इस अर्थ में हमलोग अपने पड़ोसी पाकिस्तान या बांग्लादेश या फिर दूर-दराज के पड़ोसी रूस के हमराही हो गए हैं।

यों तो भारत में चुनावों से जुड़ी सत्यनिष्ठा का रिकॉर्ड सामान्य तौर पर साफ-सुथरा रहा है, लेकिन उसमें कहीं-कहीं दाग-धब्बे भी लगे हैं। साल 2019 के चुनाव में बीजेपी धन-बल, मीडिया-बल, सरकारी मशीनरी और चुनाव आयोग की तरफ से की जा रही तरफदारी के लिहाज़ से बढ़ी-चढ़ी थी, लेकिन तब जो भी पक्षपात हुआ हो, वो सब एक सीमा के भीतर ही था। लेकिन इस बार वे सारी हदें लांघी जा चुकी हैं. मैं जब इन पंक्तियों का लिख रहा हूं तो मेरे घर से कुछ कदमों की दूरी पर कायम एक जगह पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का छापा पड़ रहा है। एक स्थानीय नेता को निशाना बनाया गया है, जो आम आदमी पार्टी की तरफ से विधानसभा चुनावों का पूर्व प्रत्याशी रह चुका है।

द इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डेमोक्रेसी एंड इलेक्टोरल असिस्टेंस (IIDEA) एक अतर्राष्ट्रीय संगठन है, यह दुनिया के 173 देशों में 'प्रतिनिधित्व' की गुणवत्ता का मापन करती (जिसमें चुनावों की विश्वसनीयता तथा राजनीतिक दलों को हासिल आज़ादी आदि का मापन शामिल है)। चुनावी लोकतंत्र के इस पहलू में साल 2014 से 2022 के बीच भारत का स्कोर 71 से घटकर 60 पर आ गया है। बीते पांच सालों में भारत 50वें स्थान से खिसककर 66वें स्थान पर आ गया है। इससे पहले की आप इसे पश्चिमी दुनिया की तरफ से होने वाली साजिश का एक और उदाहरण करार दें, आपको संस्था की वेबसाइट देख लेनी चाहिए: भारत IIDEA का सदस्य देश है और संस्था की गवर्निंग काउंसिल में भारत का प्रतिनिधित्व कोई और नहीं बल्कि सुनील अरोड़ा कर रहे हैं। यानी भारत के निर्वाचन आयोग के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त जिन्हें वर्तमान सरकार ने नियुक्त किया था। अकादमिक स्वभाव के कारण विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित एक और 'परसेप्शन इंडेक्स' का उदाहरण लीजिए। इसका नाम है परसेप्शन ऑफ इलेक्टोरल इंटिग्रिटी इंडेक्स. इसकी हालिया रिपोर्ट में भारत का औसत अंकमान 59 प्रतिशत है। इस अंकमान के साथ भारत रिपोर्ट में 'येलो ज़ोन'(मतलब रोगी लोकतंत्र) वाली श्रेणी में आ गया है यानी ब्राज़ील, घाना और नेपाल जैसे देशों से पीछे, जहां लोकतंत्र काम तो कर रहा है, लेकिन उसमें गंभीर खामियां हैं।

गिरावट की रफ्तार ऐसी ही रहती है तो साल 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद आने वाली नई रिपोर्ट में भारत को चुनावी शुचिता और सत्यनिष्ठा के मामले में आप 'ऑरेन्ज ज़ोन' (मतलब मृत्यु-शैय्या पर लेटे होने की स्थिति) में शामिल देखेंगे। इसी कारण जो विद्वान जोर देकर कहा करते थे कि भारत भले ही उदारवादी लोकतंत्र न हो, लेकिन वह एक चुनावी लोकतंत्र ज़रूर है- आज अपनी इस राय में संशोधन कर रहे हैं।

साल 2024 के चुनाव के अभी तक सफर में हमलोग जो कुछ देख चुके हैं वो ये बताने के लिए पर्याप्त है कि लोकतांत्रिक मान-मूल्यों में आ रही निरंतर गिरावट चुनावी लोकतंत्र होने की न्यूनतम ज़रूरी सीमा-रेखा को लांघने को उद्धत है। साल 2024 का भारत का लोकसभा चुनाव भले ही रूस में हुए नवीनतम चुनाव की तरह पूरी तरह से प्रहसन में न बदले या फिर जैसा फर्जीवाड़ा हमने पाकिस्तान में हुए चुनाव में देखा वैसा हमारे देश के इस बार के आम चुनाव में न हो। तो भी, यह बात साफ हो चुकी है कि मुकाबले का मैदान सबके लिए समान रूप से खुला नहीं रहेगा। हम एक ऐसी विकट स्थिति की तरफ बढ़ रहे हैं जब चुनाव तो नियमित अंतराल पर होंगे, लेकिन उसमें वोटिंग मशीन का बटन दबाने और वोटों की गिनती को छोड़कर और कुछ भी मुक्त और निष्पक्ष नहीं होगा।

पहली बात ये कि स्वतंत्र चुनाव आयोग का वह युग जिसकी शुरूआत टी एन शेषन ने की थी - अब समाप्त हो गया है। निर्वाचन आयोग अब चुनाव-प्रबंधन निकाय भर रह गया है यानी चुनावों से जुड़े कामकाज का प्रशासक मात्र जैसा कि यह टीएन शेषन के मुख्य चुनाव आयुक्त बनने के पहले हुआ करता था, लेकिन इससे भी बुरी खबर ये है कि अब चुनाव आयोग सत्ताधारी दल के पक्ष में चुनावों के प्रबंधन का काम करने की एजेंसी में तब्दील हो सकता है। चुनाव आयोग की वैधानिकता का यह अपहरण चुनावों की विश्वसनीयता पर मंडराते संकट की एक और निशानी का पता देता है। यह निशानी है चुनावी मुकाबले के नियम यानी आदर्श चुनावी आचार संहिता को ही पटरी से उतार देना। पहले चुनावों की तारीख की घोषणा के साथ आचार संहिता के लागू होने की बात भर से मर्यादा की एक लक्ष्मण रेखा खिंच जाया करती थी कि अब सत्ताधारी दल और सरकार को एक हद के भीतर ही रहना है। लेकिन अब जिस बड़े पैमाने पर विपक्षी नेताओं को डराया-धमकाया जा रहा है वह हमें इसी राह पर ले जा रहा है।

इस सिलसिले की तीसरी बात ये कि विपक्ष के पास चुनाव-अभियान चलाने के लिए धन ही न रहे, इसके उपाय किए जा रहे हैं। पहली बार देखने को मिला है कि सत्ताधारी पार्टी धन-बल के मामले में भारी-भरकम गैर-बराबरी के बावजूद संतुष्ट नहीं है। चौथी बात है, मतदान और मतगणना प्रक्रिया का मुख्य-आधार यानी इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (EVM) और वोटर वरिफायबल पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT) पर रहस्य का पर्दा पड़ा रहना। इस बात पर दो राय नहीं कि ईवीएम में छेड़छाड़ को लेकर लोगों के मन में गहरी आशंकाएं हैं। जिम्मा निर्वाचन आयोग का बनता है कि वह इन आशंकाओं को निर्मूल साबित करे, लेकिन आयोग ने इस मोर्चे पर कुछ भी नहीं किया। आखिर को हमारे हाथ में बस एक ही चीज़ बची है और वह है चुनाव से संबंधित संवैधानिक और कानूनी ढांचा। यह ढांचा अब भी मजबूत और निष्पक्ष है, लेकिन, इस बची ज़मीन पर भी कब्ज़ा जमाने की कोशिशें शुरू हो गई हैं।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

खजुराहो सीट पर सबसे ज्यादा 9 प्रत्याशियों ने भरा पर्चा

- बैतूल-टीकमगढ़ में 2-2 कैंडिडेट्स; रीवा लोकसभा सीट पर 8 उम्मीदवारों ने जमा किया पर्चा
- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने नामांकन जमा किया है। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी भी थी मौजूद

भोपाल (नप्र)। लोकसभा चुनाव के लिए दूसरे चरण में बुधवार को कांग्रेस और बीजेपी के नेताओं का जमावड़ा रहा। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने बुधवार को पन्ना में बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष और खजुराहो प्रत्याशी वीडी शर्मा का नामांकन भराया। इस सीट पर सबसे ज्यादा 9 कैंडिडेट्स ने नामांकन जमा किया है।

सीएम यादव और पूर्व सीएम शिवराज ने सतना में भाजपा प्रत्याशी का नामांकन भरवाया

उधर, सीएम डॉ. मोहन यादव और पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान सतना में बीजेपी प्रत्याशी गणेश सिंह का पर्चा भराया। दूसरी ओर, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, प्रदेश प्रभारी जितेंद्र सिंह और वरिष्ठ नेता विवेक तन्खा, अरुण यादव बुधवार को बैतूल, टीकमगढ़ और होशंगाबाद में कांग्रेस प्रत्याशियों के नामांकन भरने के दौरान मौजूद रहें। रीवा, सतना, खजुराहो, बैतूल, टीकमगढ़, होशंगाबाद और दमोह में गुरुवार तक नामांकन जमा किए जाने हैं।

इसके चलते, अंतिम दो दिनों में अब कांग्रेस, बीजेपी समेत अन्य दलों के कैंडिडेट एक बार फॉर्म भरने के बाद अब वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में नामांकन जमा कर रहे हैं। दूसरे चरण में तीसरे दिन मंगलवार को नामांकन जमा करने वालों में बैतूल से दुर्गादास उइके बीजेपी और जनार्दन मिश्रा बीजेपी ने दो नामांकन भरे हैं।

दूसरे चरण की 7 सीटों पर नामांकन का अंतिम दिन कल

दूसरे चरण की रीवा, सतना, खजुराहो, बैतूल, टीकमगढ़, होशंगाबाद और दमोह लोकसभा सीट पर गुरुवार तक नामांकन जमा किए जाने हैं। अब तक रीवा लोकसभा सीट पर बीजेपी उम्मीदवार जनार्दन मिश्रा समेत 8 नामांकन जमा किए जा चुके हैं। इसी तरह बैतूल सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम और बसपा प्रत्याशी अशोक भलावी समेत 3 नामांकन दाखिल किए गए हैं।

पन्ना में स्मृति बोलीं-हार के डर से कांग्रेसियों को भागने की आदत, कहा-अबकी बार 400 पार

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा- हार के डर से कांग्रेसियों को भागने की आदत पड़ गई है। चाहे तो अमेठी वालों से पूछ लो। खजुराहो सीट पर भी कांग्रेस हार स्वीकार कर चुकी है। अबकी बार 400 पार।

स्मृति ईरानी ने ये बात बुधवार को पन्ना में आमसभा में कही। वे यहां खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी विष्णु दत्त शर्मा के नामांकन के मौके पर पहुंची थीं। सभा के बाद ईरानी और वीडी शर्मा खुले वाहन में कलेक्ट्रेट के लिए निकले। नामांकन का समय करीब होने और वाहनों की भीड़ के चलते वे रथ से उतरकर कार से कलेक्ट्रेट पहुंचे।

शर्मा ने दोपहर करीब 3 बजे नामांकन पत्र जिला निर्वाचन अधिकारी को सौंपा। इस मौके पर मध्यप्रदेश के कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल, विधायक संजय पाठक और बृजेंद्र प्रताप सिंह भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी पन्ना में वीडी शर्मा के पक्ष में रोड शो किया। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में शामिल खजुराहो सीट पर अब तक 9 कैंडिडेट्स ने नामांकन जमा किया है।

सुप्रभात

मैंने अपनी साँसों में
तुम्हारी महक पायी है

मैंने अपनी आँखों में
तुम्हारी ज्योति पायी है

मैंने अपने रक्त में
तुम्हारी लाली पायी है

मैंने अपने पैरों में
तुम्हारी गति पायी है

मैंने अपनी धड़कन में
तुम्हारी जीवन-लय पायी है

मैं अपने में कुछ नहीं
तुम्हारे प्यार में ही
अपने को पाया है।

- दुर्गाप्रसाद झाला

केजरीवाल बोले-बदनाम करने को हुई गिरफ्तारी

- ईडी का जवाब-घोटाला तो हुआ, हमारे पास सारे सबूत
- अंधेरे में तीर नहीं चलाया,हवाला ऑपरेटर्स के बयान हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। अरविंद केजरीवाल को राहत मिलेगी या उनकी मुश्किलें जारी रहेंगी? इसका फैसला करने को दिल्ली हाई कोर्ट में बुधवार को लंबी बहस हुई। अरविंद केजरीवाल की याचिका पर बहस के बाद हाई कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। केजरीवाल ने कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। एक दिन पहले ही इस केस में आप के राज्यसभा सांसद को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली है। जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा की पीठ के अरविंद केजरीवाल की तरफ से वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश हुए तो ईडी का पक्ष एएसजी एसवी राजू रख रहे हैं। सिंघवी ने जहां केजरीवाल को निर्दोष बताते हुए उनकी गिरफ्तारी की टाइमिंग पर सवाल उठाते हुए

दावा किया कि चुनाव में हिस्सा लेने से रोकने के लिए ऐसा किया गया है। वहीं, ईडी ने कहा कि इसमें कोई शक नहीं है कि घोटाला हुआ है। केंद्रीय जांच एजेंसी ने दावा किया कि उसके पास केजरीवाल के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। एएसजी ने कहा कि यह तथ्य कि धनशोधन का अपराध हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं है। अदालत इस अपराध पर संज्ञान ले चुकी है। संज्ञान अपराध पर होता है, अपराधी पर नहीं। अपराध पर संज्ञान के बाद आरोपियों को लेकर जांच होती है। जोकि इस मामले में भी हो रही है।

आरोपियों की जांच को लेकर बाधा उत्पन्न नहीं की जा सकती। एएसजी ने कहा कि आज केजरीवाल का रवैया यह है कि वह एक संत है। लेकिन वास्तव में केजरीवाल ने जो किया है वह बहुत ही चतुराई से किया है। ईडी ने कड़ी मेहनत से सबूत ढूंढे हैं। राजू ने चुनाव से पहले केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर उठाए जा रहे सवालों पर भी जवाब दिया। उन्होंने कहा सोचिए कि कोई चुनाव से दो दिन पहले हत्या कर देता है। इसका मतलब कि उसे गिरफ्तार नहीं किया जा सकता है? इसमें बेसिक स्ट्रक्चर (संविधान) आ जाता है। अपराधियों को गिरफ्तार करके जेल में डालना होता है।

जम्मू के कठुआ मेडिकल कॉलेज में शूटआउट

गैंगस्टर और पुलिस अफसर की मौत, पीछा करते वक्त अस्पताल में दाखिल हुए थे गैंगस्टर्स

कठुआ (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कठुआ मेडिकल कॉलेज में मंगलवार रात हुए शूट आउट में एक गैंगस्टर और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर की मौत हो गई। पुलिस को शुनू गैंग के मेंबर्स के बारे में सूचना मिली थी। जब टीम ने उनका पीछा करना शुरू किया तो गाड़ी में सवार गैंगस्टर्स मेडिकल कॉलेज परिसर में दाखिल हो गए थे। पुलिस के मुताबिक, शूटआउट रात 10 :35 बजे हुआ। शूटआउट में गैंगस्टर्स को लीड कर रहा वासुदेव मारा गया, जो मर्डर केस में आरोपी था। दो पुलिस अफसर दीपक शर्मा और अनिल कुमार घायल हो गए। असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर दीपक शर्मा को सिर में गोली लगी थी। अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। जम्मू-कश्मीर के उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा ने दीपक शर्मा की वीरता को सलाम किया। उन्होंने कहा कि उनका यह बलिदान हमेशा हमारे दिलों में जिंदा रहेगा। सिन्हा बोले कि इस मुश्किल वक्त में सरकार और पुलिस महकमा दीपक शर्मा के परिवार के साथ है।

भोजशाला में एएसआई सर्वे का 13वां दिन

हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस की अध्यक्ष रंजना अग्निहोत्री पहुंचीं धार, बोलीं-सर्वे से सामने आएगा सच

धार (नप्र)। भारतीय पुरातत्व विभाग (एएसआई) के अधीन भोजशाला में वैज्ञानिक पद्धति से सर्वे चल रहा है। आज इसका 13वां दिन है। सुबह करीब 8 बजे एएसआई अधिकारी और मजदूरों ने परिसर में एंट्री ली। हिंदू और मुस्लिम पक्ष के लोग भी भोजशाला पहुंचे।

दोपहर बाद हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस की राष्ट्रीय अध्यक्ष और लखनऊ की एडवोकेट रंजना अग्निहोत्री भोजशाला पहुंचीं। उनके साथ सुनील सारस्वत भी थे।

अग्निहोत्री

एडवोकेट रंजना अग्निहोत्री ने कहा कि एएसआई टीम नियम के अनुसार सर्वे कर रही है। जो चीजें मिल रही हैं, उनका नोटिफिकेशन किया जा रहा है। सर्वे का प्रोसेस स्लो होता है। टीम की रिपोर्ट सबमिट होने के बाद ही अधिकृत जानकारी सामने आएगी। तब सच सबके सामने आ जाएगा। उन्होंने कहा कि एएसआई टीम वैज्ञानिक तरीके से सर्वे करती है। उसकी रिपोर्ट कोर्ट में एविडेंस के तौर पर मान्य होती है।

मांडू भी जाएगी एएसआई की एक टीम

भोजशाला में सर्वेक्षण करने आए अधिकारियों ने अपनी 4 टीम बना रखी हैं, जो परिसर में अलग-अलग स्थानों पर काम कर रही हैं। इनमें से एक टीम जल्द ही मांडू जाएगी, जहां राज्य पुरातत्व विभाग के अधीन बना एक बड़ा संग्रहालय है। यहां सालों पहले भोजशाला से लाई गई परमारकालीन प्रतिमाएं रखी हैं। टीम इन प्रतिमाओं पर बनी आकृतियों का अवलोकन करेगी।

हरदा में दो लोगों की हत्या, शरीर पर मिले मारपीट के निशान

एक का शव रोड किनारे मिला, दूसरे ने जिला अस्पताल में दम तोड़ा, सिटी पुलिस ने शुरू की जांच

हरदा (नप्र)। हरदा में दो लोगों की मारपीट कर हत्या कर दी। दोनों के शवों पर मारपीट के निशान मिले हैं। 45 वर्षीय शैतान सिंह का शव रोड के किनारे मिला तो युवक सईद शाह को किसी ने जिला अस्पताल लाकर भर्ती कराया, जहां उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। हत्या की यह वारदात सिटी थाना अंतर्गत बुधवार तड़के चार से पांच बजे की बीच की है। आरोपित फिलहाल अज्ञात हैं।

सूचना मिलने के बाद पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी और सिटी थाना से बल मौके पर पहुंचा। पुलिस का कहना है कि दोनों पर डंडों से वार किए गए हैं। प्रारंभिक तौर पर तीन से चार लोगों द्वारा हत्या करने की बात सामने आ रही है। हालांकि पुलिस यह भी कह रही है कि जांच के बाद पता चलेगा कि सही स्थिति क्या है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है ताकि मौत के कारण का सही पता चल सके।

नसरुल्लागंज से आकर खरीदा था बगीचा- सईद शाह नसरुल्लांगज का रहने वाला है, जिसने करीब आठ दिन पहले रन्हाई रोड पर किसान याहया खान का आम का बगीचा खरीदा था। सईद उसकी पत्नी शहनाज और तीन बेटियों के साथ बगीचे में रहने आया था। पत्नी शहनाज ने यह भी कहा कि वह कुछ दिन पहले ही यहां रहने आए थे। उनका यहां किसी से कोई विवाद भी नहीं था।

शैतानसिंह का शव शहर की बंगाली कालोनी के सामने रन्हाई रोड पर मिला। उसके शरीर पर डंडे के निशान और अन्य चोट मिली। उसकी पत्नी ने पुलिस को बताया कि पति सुबह सुबह घर से निकले थे। कुछ देर बाद उनका शव मिला। उनके दो बेटे हैं। शैतान सिंह किसान खान के फार्म हाउस पर पिछले करीब बारह साल से काम कर रहा था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40 °c
न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे
इंदौर ■ गुरुवार, 04 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

बंगाल में बीजेपी के चार नेताओं को मिली केंद्रीय सुरक्षा

कोलकाता (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के बीच केंद्र सरकार ने कलकत्ता हाई कोर्ट के पूर्व जज अभिजीत गंगोपाध्याय, पूर्व बीजेपी सांसद अर्जुन सिंह, बीजेपी के जिला महासचिव अभिजीत बरमन और कूचबिहार के कार्यकारी सदस्य तापस दास को सुरक्षा कवर प्रदान की है। इन चारों नेताओं को अलग-अलग श्रेणियों में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की सुरक्षा प्रदान की गई है। जस्टिस अभिजीत गंगोपाध्याय और अर्जुन सिंह पिछले महीने ही भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए थे।

बिहार के दिग्गज बीजेपी नेता सुशील मोदी को कैंसर

पटना (एजेंसी)। भाजपा के दिग्गज नेता और बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम सुशील मोदी को कैंसर हुआ है। इस बात की जानकारी उन्होंने बुधवार को खुद अपने एक्स हैंडल पर साझा की। सुशील मोदी ने कहा कि मैंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बता दिया है कि मैं चुनाव में कुछ नहीं कर पाऊंगा। बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम ने एक्स पर लिखा, 'पिछले 6 माह से कैंसर से संघर्ष कर रहा हूं। अब लगा कि लोगों को बताने का समय आ गया है। लोक सभा चुनाव में कुछ कर नहीं पाऊंगा। पीएम को सब कुछ बता दिया है। देश, बिहार और पार्टी का सदा आभार और सदैव समर्पित।' पूर्व केंद्रीय मंत्री और बीजेपी सांसद रविशंकर प्रसाद ने सुशील मोदी के स्वास्थ्य पर कहा कि मैं बहुत दुखी हूं। मैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

पुलिस ने सूचना सेठ के खिलाफ दाखिल की चार्जशीट

पणजी (एजेंसी)। गोवा में अपने चार साल के बेटे की हत्या करने वाली सूचना सेठ के खिलाफ गोवा पुलिस ने चिल्ड्रन्स कोर्ट में 642 पन्नों की चार्जशीट दाखिल कर दी है। 7 जनवरी को बेटे का मर्डर करने के अगले दिन जब सूचना सेठ उसकी बॉडी को सूटकेस में भरकर टैक्सी से बेंगलुरु के लिए निकली, तो उसे कर्नाटक के चित्रदुर्ग से गिरफ्तार किया गया था। इस चार्जशीट में कैलेंगुट पुलिस ने लिखा है कि बच्चे की मौत गला घोंटे जाने के कारण सदमा लगने और सांस रुकने से हुई थी। चार्जशीट के मुताबिक, सेठ पर सेक्शन 302 (मर्डर) और 201 (सबूतों को मिटाना) और गोवा चिल्ड्रन्स एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। गोवा चिल्ड्रन्स कोर्ट इस मामले की सुनवाई 14 जून को करेगी। गोवा पुलिस ने चार्जशीट में 59 गवाहों का नाम लिखा है।

अब जनता तैयार कर रही मोदी-योगी का रिपोर्ट कार्ड

यूपी में केंद्र व राज्य सरकारों के काम की होगी परीक्षा

- राम मंदिर निर्माण का फायदा पार्टी को मिलने की उम्मीद

नई दिल्ली (एजेंसी)। सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव के तीन साल बाद हुए उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को 50 सीटों का नुकसान उठाना पड़ा।

2022 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी की सीटों की गिनती 311 से घट कर 251 पहुंच गई। आखिर दस साल में नरेंद्र मोदी ने उत्तर प्रदेश की जनता के लिए क्या किया। सात वर्षों में योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के विकास के लिए क्या किया। उत्तर प्रदेश की जनता प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के अब तक के किए गए काम का रिपोर्ट कार्ड तैयार कर रही है। हालांकि दो चुनावों से मोदी और योगी के उत्तर प्रदेश में नंबर कम आ रहे हैं।

दोनों के रिपोर्ट कार्ड में कम होती नंबरों की संख्या के बाद बीजेपी मुस्तैद है। इस बार के लोकसभा के चुनाव में पार्टी नेतृत्व कोई कसर छोड़ने की मुद्रा में नजर नहीं आ रहा है। बात दस साल पहले की है। 2014 में हुए सोलहवीं लोकसभा के चुनाव में उत्तर प्रदेश के मतदाताओं ने नरेंद्र मोदी को अपने सर आंखों पर बिठा लिया था।

लाजिम सी बात है, उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का लोकप्रियता का ग्राफ नीचे हुआ। बीजेपी को लगता है कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण से उसे इस लोकसभा के चुनाव में लाभ पहुंचेगा। लेकिन वह इसके बाद भी कोई कसर छोड़ने को तैयार नहीं। पार्टी ने इसी लिए छोटे राजनीतिक दलों को अहमियत दे कर उत्तर प्रदेश के जातीय गुणा-गणित को दुरुस्त करने की पुरजोर कोशिश की है। इतने के बाद भी पार्टी पूरे इत्मीनान में नजर नहीं आ रही है। अबकी बार चार सौ पार के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नारे को उत्तर प्रदेश की 80 में से अधिकांश सीटों पर जीत दर्ज करने की कोशिश में जुटे बीजेपी नेताओं ने इस सपने को साकार करने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है। पार्टी का हर छोटे से बड़ा नेता इस काम को अंजाम तक पहुंचाने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंके हुए है। बीजेपी की तैयारियों पर समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता राजेन्द्र चौधरी चुटकी लेते हैं।

मनुष्यता का विकास ही मनुष्य का विकास है : डॉ. भागवत

भोपाल। मध्य भारत प्रांत के बनखेड़ी में आयोजित 'नर्मदांचल सुमंगल संवाद' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने विकास की भारतीय अवधारणा को समझाते हुए कहा कि मनुष्यता का विकास ही मनुष्य का विकास है। केवल आर्थिक साधन और अधिकार प्राप्त कर लेना विकास नहीं कहलाता है।

भाऊसाहब भुस्कुटे न्यास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में ग्राम विकास तथा पर्यावरण गतिविधि के चयनित 100 सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सरसंघचालक डॉ. भागवत एवं निवर्तमान सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने समग्र ग्राम विकास, गौ संवर्धन, जल तथा पर्यावरण के लिए प्रयासरत संस्थाओं के द्वारा किये जा रहे कार्यों के वृत्तांत को सुना।

ग्राम विकास तथा पर्यावरण गतिविधि के कार्यकर्ताओं के साथ संवाद में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हमारे देश में हजारों वर्षों से खेती की जा रही है लेकिन भूमि बंजर नहीं हुई। परंतु आज की पद्धति ने अनेक देशों की खेती उजाड़ दी है। हमारी संस्कृति ने कहा है कि व्यक्ति का सुख परिवार के सुख से और परिवार का सुख गांव सुखी होने से आता है तथा गांव जनपद के और जनपद राष्ट्र के सुख से सुखी होता है। अतः हम सभी ने अपनी परंपरा का महत्व समझ समाज की सकारात्मक ऊर्जा को साथ ले ग्राम विकास और पर्यावरण के कार्य को करना ही होगा। इस अवसर भैयाजी जोशी ने नदी, भूमि और वृक्षों से संवाद की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने संघ से इतर समाज की सज्जन शक्ति के द्वारा चलाए जा रहे अच्छे कार्यों की सराहना की।

'नर्मदांचल सुमंगल संवाद' में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने सामाजिक कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। भाऊ साहब भुस्कुटे न्यास ने संस्कार, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार, जैविक कृषि, पर्यावरण, गौ सेवा व संवर्धन आदि क्षेत्रों में किये जा रहे कार्यों तथा 'मेरा गांव मेरा तीर्थ' योजना की विस्तृत जानकारी दी। प्रांत के आदर्श प्रभात ग्राम, जैसे-राजगढ़ जिले के ग्राम झिरी, बासौदा जिले के ग्राम झूकरजोगी तथा दतिया जिले के भरसूला गांव के कार्यों की जानकारी भी सरसंघचालक के सामने प्रस्तुत की गई।

इसके साथ की सामाजिक समिति हरदा एवं सिवनी मालवा की पर्यावरण जैविक कृषि समिति ने अपने स्तर पर किये जा रहे प्रभावी गौ संवर्धन, वृक्षारोपण, स्वरोजगार, जैविक कृषि तथा संस्कार पक्ष पर किये जा रहे कार्यों के बारे में बताया। वहीं, संस्था 'नर्मदा समग्र' ने नदी को जीवमान इकाई मानकर वैज्ञानिक पद्धति से किये जा रहे कार्यों तथा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक किये गये प्रयासों पर वीडियो प्रस्तुति दी।

भोपाल लोकसभा सीट पर नॉमिनेशन का यह प्लान

12 अप्रैल से भरे जाएंगे, 3 दिन छुट्टी भी रहेगी; पहली बार ईवीएम सीधे स्ट्रॉन्ग रूम पहुंचेंगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल लोकसभा सीट के लिए 12 अप्रैल से नॉमिनेशन लिए जाएंगे। कैंडिडेट्स 19 अप्रैल तक नॉमिनेशन जमा कर सकते हैं, लेकिन 3 दिन छुट्टी रहेगी। यानी, कैंडिडेट्स को 5 दिन ही मिलेंगे। लाल परेड ग्राउंड और एमवीएम स्टेडियम से मतदान दल रवाना होंगे, लेकिन पहली बार ईवीएम सीधे पुरानी जेल में बने स्ट्रॉन्ग रूम में पहुंचेंगी। लोकसभा चुनाव के नॉमिनेशन, चुनाव चिह्न आवंटन समेत कैंडिडेट्स और पार्टी नेताओं को क्या-क्या प्रोसेस अपनानी है, इसे लेकर जिला प्रशासन ने प्लान तैयार किया है। इस पर कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने पार्टी नेताओं से चर्चा भी की और उन्हें पूरी प्रोसेस समझाई। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने राजनीतिक पार्टियों को प्लान के बारे में भी बताया।

ईवीएम को लेकर अब तक यह है प्रोसेस: भदभदा रोड पर ईवीएम गोडाउन बना है। मतदान सामग्री वितरण के दौरान ईवीएम लाल परेड ग्राउंड और एमवीएम स्टेडियम में लाई जाती थी। यहां से मतदान सामग्री पोलिंग दलों को मिलती थी और फिर वहीं पर जमा होती रही है। इसके बाद सुरक्षा के कड़े घेरे में ये स्ट्रॉन्ग रूम में पहुंचती थी। विधानसभा चुनाव के दौरान भी यही प्रोसेस अपनाई गई थी, लेकिन लाल परेड ग्राउंड-एमवीएम स्टेडियम से स्ट्रॉन्ग रूम में ले जाने में अफसरों के सामने कई चुनौतियां भी रहती हैं। सुरक्षा के साथ ईवीएम को सुरक्षित तरीके से ईवीएम स्ट्रॉन्ग रूम तक पहुंचाया जाता रहा है।

नॉमिनेशन जमा कराने की यह प्रक्रिया रहेगी

- 12 अप्रैल, शुक्रवार से कलेक्टर कार्यालय में नॉमिनेशन सुबह 11 से दोपहर 3 बजे तक लिए जाएंगे। 19 अप्रैल नॉमिनेशन के लिए आखिरी दिन है।
- 13 अप्रैल को शनिवार, 14 अप्रैल को रविवार और 17 अप्रैल को रामनवमीं होने से नॉमिनेशन नहीं भरे जाएंगे।
- एक कैंडिडेट एक निर्वाचन क्षेत्र के लिए अधिकतम 4 नॉमिनेशन भर सकेगा, लेकिन वह दो से अधिक निर्वाचन क्षेत्र में नॉमिनेशन नहीं भर सकेंगे।
- सामान्य और ओबीसी वर्ग के कैंडिडेट के लिए 25 हजार रुपए लगेंगे। वहीं, एससी-एसटी वर्ग को आधी राशि देना होगी।
- कैंडिडेट्स पर यदि कोई आपराधिक प्रकरण दर्ज है या पूर्व में हुआ हो तो इसकी जानकारी भी उसे देना होगी।

राजनीति से विदा हुए पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह

- खड़गे ने चिट्ठी लिखी-संसद को आपके ज्ञान की कमी खलेगी, ये एक युग का अंत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह 33 साल बाद बुधवार को राज्यसभा से रिटायर हो गए हैं। वे 1991 में सबसे पहली बार असम से राज्यसभा पहुंचे थे। छठी और आखिरी बार वे 2019 में राजस्थान से राज्यसभा सांसद बने। मनमोहन सिंह के रिटायरमेंट पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने उन्हें खत लिखा। इसमें उन्होंने कहा- अब आप सक्रिय राजनीति में नहीं होंगे, लेकिन आपकी आवाज जनता के लिए लगातार उठती रहेगी। संसद को आपके ज्ञान और अनुभव की कमी खलेगी। राज्यसभा से कुल 54 सांसदों का कार्यकाल अप्रैल में खत्म हो रहा है। इनमें से 49 सांसद 2 अप्रैल को सदन से रिटायर हुए। मनमोहन सिंह समेत 5 सांसदों का कार्यकाल बुधवार को खत्म हो गया है। इन 54 सांसदों में 9 केंद्रीय मंत्री भी शामिल हैं। मनमोहन सिंह की जगह अब कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी पहली बार राज्यसभा पहुंचेंगी। 20 फरवरी को उन्हें राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुना गया था। मल्लिकार्जुन खड़गे ने मनमोहन सिंह को लिखे खत में कहा- अब आप सक्रिय राजनीति में नहीं होंगे, लेकिन आपकी आवाज जनता के लिए लगातार उठती रहेगी। तीन दशकों से अधिक समय तक आपने सेवा की है। आपके रिटायरमेंट से एक युग का अंत हो गया है। बहुत कम लोगों ने आपके जितना काम किया है।

बहन प्रियंका के साथ रोड शो, जनता से किया वादा

राहुल गांधी ने अलहदा अंदाज में किया वायनाड सीट से नामांकन

वायनाड (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और निवर्तमान सांसद राहुल गांधी ने बुधवार को वायनाड लोकसभा क्षेत्र से नामांकन किया। इस दौरान उनके साथ प्रियंका गांधी वाड्रा भी मौजूद रहीं। नामांकन से पहले राहुल गांधी ने वायनाड के कलपेट्टा से सिविल स्टेशन तक एक रोड शो भी किया। रोड में यूडीएफ के नेता और कार्यकर्ता भी शामिल रहे। इस मौके पर कांग्रेस नेता ने कहा कि वह वायनाड के मुद्दों को देश और दुनिया के सामने लाने के लिए हमेशा तैयार हैं। उन्होंने कहा कि अगर दिल्ली और केरल में कांग्रेस की सरकार बनी तो राज्य की सारी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। राहुल गांधी का मुकाबला सीपीआई की राष्ट्रीय नेता और लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) की उम्मीदवार एनी राजा और बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष के सुरेंद्रन से होगा।

लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को एक और झटका !

बीजेपी में शामिल हुए बॉक्सर विजेंदर सिंह, ली सदस्यता

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक मेडल विनर बॉक्सर विजेंदर सिंह ने कांग्रेस छोड़ दी है। विजेंदर ने बुधवार को बीजेपी का कमल थाम लिया। पार्टी महासचिव विनोद तावड़े की मौजूदगी में विजेंदर ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। बीजेपी में शामिल होने पर विजेंदर सिंह ने कहा कि आज मेरी घर वापसी हुई है। विजेंदर सिंह ने कहा कि लोगों की उम्मीद पूरा करने के लिए बीजेपी में शामिल हुआ हूं। उन्होंने कहा कि मैं बीजेपी में देश के विकास और लोगों की सेवा करने के लिए आया हूं। बिजेंदर सिंह साल 2019 में कांग्रेस में शामिल हुए थे। उन्होंने दक्षिणी दिल्ली संसदीय सीट से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव से पहले बाइडन को बड़ा झटका

- मुस्लिम नेताओं ने ठुकराई इफ्तार की दावत, गाजा युद्ध से खफा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। गाजा में जारी जंग के कारण अमेरिका में मुस्लिम समुदाय के नेताओं ने राष्ट्रपति जो बाइडन की ओर से आयोजित होने वाले रोजा इफ्तार पार्टी के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया है। इसके बाद व्हाइट हाउस ने गुरुवार शाम को छोटी इफ्तार दावत का आयोजन करने का फैसला किया है। इसमें सिर्फ प्रशासन में काम करने वाले लोग ही शामिल होंगे। मुस्लिम पैरोकार समूह 'एमगैज' की अगुवाई करने वाले वाइल अल जायत ने पिछले साल व्हाइट हाउस में आयोजित इफ्तार में हिस्सा लिया था लेकिन उन्होंने इस बार निमंत्रण ठुकरा दिया। इस साल नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से पहले जो बाइडन और डेमोक्रेटिक पार्टी के लिए इसे एक झटके की तरह से देखा जा रहा है। एमगैज ने बाइडन के साथ रोजा खोलने से यह कहते हुए इनकार कर दिया कि जब गाज़ा में भुखमरी के हालात हों तो इस तरह से दावत में शिरकत करना अनुचित है। व्हाइट हाउस ने अब अपनी योजना बदल दी है।

बीजापुर मुठभेड़ में 13 माओवादियों के शव बरामद

18 घंटे चला एनकाउंटर, गृहमंत्री बोले-सरकार नक्सलियों से चर्चा के लिए तैयार

बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में हुई मुठभेड़ में 13 नक्सलियों के शव बरामद हो गए हैं। मंगलवार देर रात तक 10 ही शव मिलने की सूचना थी। बीजापुर एसपी जितेंद्र यादव के मुताबिक करीब 18 घंटे चले एनकाउंटर में कुल 13 नक्सलियों के शव बरामद किए जा चुके हैं। इनमें महिला नक्सली भी हैं। मंगलवार सुबह 6 बजे से शुरू हुई मुठभेड़ रात करीब 11 बजे खत्म हुई। जवानों ने नक्सलियों के पास से एके-47, एलएमजी जैसे ऑटोमैटिक हथियार भी बरामद किए हैं। टेकलगुड़ेम मुठभेड़ की आज तीसरी बरसी है। 3 अप्रैल 2021 में इस मुठभेड़ में 22 जवानों को नक्सलियों ने मारा था। वहीं, 3 साल बाद उसी इलाके में पुलिस ने एक साथ 13 माओवादियों को ढेर किया है। मुठभेड़ पर छत्तीसगढ़ के डिप्टी सीएम और गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा है कि सरकार नक्सलियों से चर्चा के लिए तैयार है। पुलिस को सूचना मिली थी कि कोरचोली और लेंड्रा के जंगल में भारी संख्या में गंगालूर एरिया कमेटी के नक्सली मौजूद हैं। इस पर बीजापुर से डीआरजी, सीआरपीएफ, कोबरा, बस्तर फाइटर्स, बस्तरिया बटालियन के जवानों को सोमवार रात संयुक्त ऑपरेशन पर रवाना किया था।

पंजाब में अकाली दल ने सेकुलर होने की तरफ बढ़ाया कदम

अमृतसर-पटियाला सीटों पर उतारे जा सकते हैं हिंदू चेहरे, होशियारपुर पर चल रहा विचार

अमृतसर (एजेंसी)। लोकसभा चुनावों को लेकर इस बार कोई भी पार्टी गठजोड़ के साथ चुनावी मैदान में नहीं उतर रही है। जिसके चलते पंजाब के समीकरण बदलने लगे हैं। हिंदू पार्टी का टैग लेकर चलने वाली भाजपा ने सिख चेहरों को मैदान में उतारा है, वहीं पंथक पार्टी अकाली दल हिंदू चेहरों को मैदान में उतारने पर विचार कर रही है। सभी की कोशिश पंजाब में खुद को सेकुलर दिखाने की है, ताकि वोटरों को सोचने पर मजबूर किया जा सके। 2019 के चुनावों में 10 सीटों पर चुनाव लड़ने वाली अकाली दल इस साल 13 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। जिसके चलते पार्टी बड़ा दांव खेलने जा रही है। पटियाला व अमृतसर सीटों पर अकाली दल हिंदू चेहरों को उतारने पर विचार कर रही है। पटियाला में राज घराने की बहू परनीत कौर के सामने अकाली दल एनके शर्मा को उतारने की सोच रही है, वहीं अमृतसर से अनिल जोशी को उतारने पर विचार चल रहा है।

लव मैरिज के बाद सुरक्षा के लिए कोर्ट पहुंचे पति-पत्नी

युवती बोली मेरे पिता कांग्रेस नेता, शादी के बाद से लगातार मिल रही धमकियां

इंदौर (नप्र)। इंदौर हाईकोर्ट में बुधवार को एक प्रेमी जोड़ा पहुंचा। यहां उन्होंने बताया कि दोनों ने प्रेम विवाह कर लिया। युवती ने कहा उसके पिता को यह शादी मंजूर नहीं। वे उज्जैन में कांग्रेस के नेता हैं। उन्होंने हमें जान से मारने की धमकी दी है। इसलिए दोनों को सुरक्षा दी जाए। शिकायतकर्ता युवती अवनी शुक्ला का कहना है कि उनके पिता रवि शुक्ला कांग्रेस नेता हैं। वे मध्य प्रदेश कांग्रेस के सचिव हैं। पिता को मेरी और मेरे पति आदर्श मिश्रा की शादी पसंद नहीं। हमारी शादी को एक माह हो गया। लेकिन हमें लगातार धमकियां मिल रही हैं। इससे हम दोनों काफी परेशान हैं। अवनी ने वीडियो जारी कर कहा कि उसे अपने पति आदर्श और सास ससुर की भी चिंता है।

इसलिए वे बुधवार को अपनी सुरक्षा के लिए हाईकोर्ट पहुंचे। बेटी अवनी शुक्ला के हाई कोर्ट पहुंचने की जानकारी लगी तो पिता रवि शुक्ला भी कोर्ट पहुंच गए। यहां पति आदर्श मिश्रा और उसके परिवार के लोग पहले से मौजूद थे। यहां दोनों परिवार के बीच जमकर कहासुनी हुई। इसके चलते पुलिस को मोर्चा संभालना पड़ा। पुलिस ने दोनों परिवारों को अलग-अलग किया।

हाईकोर्ट परिसर में अवनी ने पिता पर पति आदर्श से धक्का-मुक्की करने और धमकाने का आरोप लगाया है। हालांकि कोर्ट की तरफ से मौके पर पहले ही पुलिस को बुला लिया गया है। अवनी कथक डांसर है और उसके पति महाकाल मंदिर में पुजारी है। दोनों ने एक माह पहले शादी कर चुके हैं।

इंदौर में टायर की दुकान में लगी आग

- मौके पर पहुंची दमकल टीम ; आग बुझाने का प्रयास जारी

इंदौर (नप्र)। इंदौर में एक टायर गोदाम में आग लग गई। आग इतनी भीषण है कि इसकी लपटें कई किलोमीटर दूर से दिख रही हैं। आसपास के इलाके में अफरा तफरी का माहौल बन गया। मार्केट और घरों से लोग बाहर निकल आए। घटना भंवरकुआं थाना क्षेत्र के ट्रांसपोर्ट नगर की है। सूचना मिलते ही दमकल की टीम मौके पर पहुंची है। आग पर काबू पाने का प्रयास किया जा रहा है। फिलहाल आग लगने का कारण अभी अज्ञात बताया जा रहा है। घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। घटना में कितने दुकानें चपेट में आई हैं अभी इस बात का भी खुलासा नहीं हो सका है।

समर शेड्यूल में कम हुए इंदौर नासिक उड़ान के फेरे

- यात्रियों की कमी के कारण अब सप्ताह में तीन दिन ही चलेगी

इंदौर (नप्र)। समर शेड्यूल में जहां इंदौर काशी से जुड़ गया है वहीं इंदौर से नासिक के लिए रोजाना संचालित होने वाली उड़ान के फेरे अब एयरलाइंस ने कम कर दिए हैं। अब इस उड़ान का संचालन सप्ताह में केवल तीन दिन किया जाएगा। संभवतः यात्रियों की कमी से यह निर्णय लिया गया है।

जानकारी के अनुसार उड़ान संख्या 6ई-7108-7109 अब तक रोजाना संचालित होती थी। लेकिन अब इस उड़ान का संचालन मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को ही होगा। जिसमें विमान सुबह 9.30 बजे इंदौर से उड़ान भरकर 10.45 बजे नासिक पहुंचेगा और वहां से 11.05 बजे उड़ान भर कर 12.20 बजे से इंदौर आ जाएगा।

ट्रेवल एजेंटों ने बताया कि नासिक उड़ान को बेहतर रिस्पांस मिला था, लेकिन अब अचानक से इस उड़ान के फेरे कम कर दिए गए हैं। नासिक के लिए पहले टिकट बुक करवाने पर किराया भी काफी लगता था । करीब 3 हजार रुपये में एक तरफ का टिकट मिल जाता था, जबकि वाल्वो बस का किराया ही 2 हजार रूपये के करीब होता हैं। महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में से एक नासिक जाने का एक बड़ा कारण इसके पास ही स्थित त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग भी है, जो नासिक से सिर्फ 30 किलोमीटर दूर है। यहां इंदौर सहित देश-दुनिया से बड़ी संख्या में श्रद्धालु कालसर्प दोष और पितृ दोष आदि के निवारण की पूजा के लिए जाते हैं। लेकिन इसके बाद भी उड़ान के फेरे कम हो गए हैं।

दिन में फिर धूप तेज हुई

बादल छाने से तापमान कम हुआ

इंदौर (नप्र)। इंदौर में मौसम में लगातार बदलाव हो रहा है। मंगलवार को इंदौर में तेज धूप थी तो वहीं बुधवार को दिनभर बादल छाए रहने से सूरज के तेवर थोड़े नरम हो गए थे। लेकिन सुबह से ही धूप फिर से तेज हो गई है। राजस्थान से हवा आने से मौसम बदल गया। सोमवार को दिन का अधिकतम तापमान 36.6 डिग्री दर्ज किया गया था तो वहीं 24 घंटे बाद यानी मंगलवार दिन के तापमान में 0.6 डिग्री सेल्सियस की गिरावट के साथ ही तापमान 36 डिग्री दर्ज किया गया था।

इंदौर में पश्चिमी दिशा से लगभग 13 किमी की रफ्तार से हवा चल रही है। अधिकतम तापमान 36.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से एक डिग्री अधिक रहा। जबकि न्यूनतम तापमान 24.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो 1 डिग्री सेल्सियस अधिक है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले दो दिन तापमान बढ़ेगा।

गर्मी अधिक रहने से गरम हवाएं भी चलेगी। वहीं मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि एक दिन पूर्व देश में प्रवेश कर चुका पश्चिमी विक्षोभ सोमवार से उत्तर-पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक द्रोणिका के रूप में बना हुआ

है। इसके अतिरिक्त पूर्वी मप्र से लेकर तमिलनाडु तक भी एक द्रोणिका बनी हुई है। ऊपरी मंडल में हवा का बहाव उत्तर-पश्चिमी हो जाने के चलते तापमान में वृद्धि का सिलसिला सोमवार को थम गया। प्रदेश भर में न्यूनतम और अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई।

5 अप्रैल के बाद फिर गिरेगा तापमान

वर्तमान में सूर्य की किरणों सीधी पड़ रही हैं और 12 घंटे से अधिक धूप तप रही है। ऐसे में मौसम प्रणालियों का असर कम होते ही तापमान में बढ़त का क्रम फिर दिखेगा। अगले दो से तीन दिनों में दो से तीन डिग्री की बढ़त देखने को मिल सकती है। हालांकि, पांच अप्रैल को एक नए पश्चिमी विक्षोभ के उत्तर भारत में आने से कुछ स्थानों पर फिर बादल छा सकते हैं। उसके बाद तापमान में कुछ गिरावट हो सकती है।

दो थानों में दो मनचलों पर एफआईआर

एक ने छात्रा को लिफ्ट में परेशान किया तो दूसरे ने छात्रा को घर में घुसकर छेड़ा

इंदौर (नप्र)। इंदौर में दो नाबालिग लड़कियों को छेड़ने के दो घटनाक्रम सामने आए हैं। दोनों मामलों में नाबालिग छात्राओं ने पहले परिवार फिर पुलिस से शिकायत की है।

लिफ्ट में ले जाकर छेड़ा, फिर ब्लैकमेल करने लगा- पलासिया पुलिस ने बताया कि 10वीं कक्षा की स्टूडेंट से छेड़छाड़ के मामले में केस दर्ज किया है। छात्रा आरोपी सिद्धार्थ को एक साल से जानती है। उसने छात्रा को 8 मार्च को आनंद बाजार में बुलाया। फिर एक बिल्डिंग की लिफ्ट में ले गया। यहां छात्रा के साथ छेड़छाड़ की। फिर धमकी दे कर चुप रहने को कहा।

छात्रा चुप रही तो आरोपी ने उसे दोबारा बुलाया और फिर लिफ्ट में ही छेड़छाड़ करने लगा। छात्रा ने बताया कि 23 मार्च को वह अपनी सहेली के घर थी तब सिद्धार्थ वहां पहुंचा और यहां भी गंदी हरकत करने लगा। छात्रा ने मंगलवार 2 अप्रैल को सिद्धार्थ की हरकतों से परेशान होकर पूरी घटना अपनी मां को बताई। फिर मां के साथ पलासिया थाने जाकर सिद्धार्थ के खिलाफ केस दर्ज कराया।

स्कूल से किया पीछा, घर तक आ पहुंचा- छेड़छाड़ का दूसरा मामला आजाद नगर इलाके का है। यहां पुलिस ने 14 साल की नाबालिग की शिकायत पर विशाल विश्वकर्मा निवासी खाती मोहल्ला पर छेड़छाड़ का केस दर्ज किया है। पीड़िता ने बताया कि वह इलाके के निजी स्कूल में पढ़ाई करती है।

विशाल उसका स्कूल आने जाने के दौरान पीछा करता रहता। 15 जनवरी को विशाल ने उसका रास्ता रोका और हाथ पकड़ लिया। इसके बाद विशाल कई दिनों तक पीछा करता रहा। बात करने की कोशिश भी की। लेकिन छात्रा ने जवाब नहीं दिया। 27 को मां-पिता गांव गए थे। भाई-बहन भी घर पर नहीं थे। तब विशाल घर में आ गया और यहां गंदी हरकत करने लगा। चिल्लाई तो विशाल धमकी देकर भाग गया। 2 अप्रैल को माता पिता खरगोन से इंदौर आए।

चुनाव के लिए जिला प्रशासन की तैयारियां पूरी

हर दो घंटे में जारी होगा मतदान प्रतिशत

इंदौर (नप्र)। लोकसभा चुनाव के लिए जिला प्रशासन ने तैयारियां लगभग पूरी कर ली है। अधिकारियों की ट्रेनिंग के साथ साथ अब चुनाव के दौरान मतदान प्रतिशत हर दो घंटे में जारी करने के लिए निर्वाचन आयोग ने ऐप जारी किया है। मतदान प्रतिशत ऐप के माध्यम से नियुक्त पीठासीन अधिकारी अपनी सभी जानकारियां हर दो घंटे में लोड करेंगे।

इसके लिए निर्वाचन आयोग ने निर्देश जारी किए हैं कि जिले के प्रत्येक मतदान केंद्र के लिए नियुक्त पीठासीन अधिकारी अपने अपने मोबाइल पर मतदान दिवस के दो दिन पूर्व अनिवार्य रूप से मत प्रतिशत ऐप लोड कर लें, वहीं एक दिन पूर्व मोबाइल ऐप पर लॉगिन कर लें।

सामग्री प्राप्ति से लेकर मतदान दल रवाना होने और मतदान समाप्ति, मतदान केंद्र से वापसी, सामग्री जमा करने तक की समस्त जानकारी इस ऐप पर लोड की जाएगी। निर्वाचन आयोग ने निर्देश जारी करते हुए सभी जिला कलेक्टरों को निर्देशित किया है कि पीठासीन अधिकारी द्वारा सही-सही जानकारी समय-समय पर दर्ज की जाए, उसका पूरा ख्याल रखा जाए।

निर्वाचन आयोग के निर्देश के आधार पर ऑनलाइन माध्यम से गूगल मीट द्वारा अधिकारियों को उसका प्रशिक्षण दिया गया है, वहीं दूसरे दौर का प्रशिक्षण 15 अप्रैल को दिया जाएगा। निर्देश में साफ उल्लेख किया गया है कि इस ऐप के माध्यम से सहायक रिटर्निंग अधिकारियों को मतदान दल की ट्रेनिंग के दौरान अपनी-अपनी विधानसभा के पीठासीन अधिकारियों के मोबाइल पर उक्त ऐप डाउनलोड कराना सुनिश्चित करना है। इसके साथ ही द्वितीय रेण्डमाइजेशन के बाद दल गठन होने और मतदान दलों की ड्यूटी तय होने के पूर्व इस ऐप पर केंद्रवाद पीठासीन अधिकारियों की मोबाइल नं. की सूची भी एक्सेल फार्मेट में लोड की जाएगी। अधिकारियों द्वारा उपयोग किए जा रहे मोबाइल नम्बरों के आधार पर सूची तैयार की जाएगी। मतदान के एक दिन पूर्व तक यदि किसी अधिकारी को अपना मोबाइल नं. बदलना है तो उसे परमिशन लेना होगी। हालांकि इसकी परमिशन भी मत प्रतिशत के डेस्क बोर्ड से ही दी जाएगी।

नशे की लत में युवक ने किया सुसाइड

इंदौर (नप्र)। इंदौर के बाणगंगा में रहने वाले एक युवक ने जहर खाकर जान दे दी। बताया जाता है कि वह नशा करने का आदी था। मंगलवार शाम वह नशे में घर पहुंचा जब परिवार से रुपए को लेकर कहासुनी हुई। इस दौरान उसने जहर खा लिया। पुलिस के मुताबिक करण (23) पुत्र संजय को उसका रिश्तेदार राजा मंगलवार शाम उपचार के लिये एमवाय अस्पताल लेकर आया। यहां करीब एक घंटे बाद उसकी मौत हो गई। रिश्तेदारों ने पुलिस को बयान में बताया कि वह काम नहीं करता था। जिसके कारण डिप्रेशन में था। पुलिस ने दोस्तों से पूछताछ की तो नशे की बात सामने आई। जिसमें नशे को लेकर ही घर वालों से रूपये मांगे और विवाद किया।

इंदौर से छात्रा को कोटा ले गई राजस्थान पुलिस

इंदौर (नप्र)। राजस्थान के कोटा से गायब शिवपुरी की छात्रा को इंदौर क्राइम ब्रांच की टीम ने ढूंढ़ निकाला है। छात्रा को लेने के लिए मंगलवार रात कोटा पुलिस इंदौर पहुंची। इंदौर पुलिस ने कार्रवाई पूरी करने के बाद छात्रा और उसके दोस्त को कोटा पुलिस को सौंप दिया है। दोनों को राजस्थान पुलिस कोटा ले गई है।

मामले से एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि काव्या और हर्षित को उसकी सहेली के रूम से बरामद किया गया था। इसके बाद कोटा पुलिस को सूचना दी गई। कोटा पुलिस जैसे ही इंदौर पहुंची प्रारंभिक कार्रवाई के बाद दोनों को उनके हवाले कर दिया गया है। सहेली का रूम देवगुराड़िया (खुड़ैल) के आगे इंडेक्स मेडिकल कॉलेज के पास है। सहेली इसी कॉलेज से नर्सिंग का कोर्स कर रही है।

इन दोनों ने अमृतसर में काफी समय बिताया। इनके पास पैसा नहीं था तो एक गुरुद्वारा में रहे। शिवपुरी के बैराड़ की रहने वाली काव्या धाकड़ (20) बीते 18 मार्च को अपने दोस्त हर्षित के साथ लापता हुई थी। उसकी आखिरी लोकेशन इंदौर में भोलाराम उस्ताद मार्ग पर मिली थी।

रची थी खुद के अपहरण की साजिश; सहेली के रूम में छिपी थी

अपने ही अपहरण की रची थी झूठी कहानी- काव्या के परिजन ने उसे नीट की तैयारी करने कोटा भेजा था। पिता रघुवीर धाकड़ को 18 मार्च की दोपहर 3 बजे मोबाइल पर बेटी की किडनैपिंग का मैसेज आया था। बेटी के हाथ-पैर और मुंह बंधी फोटो भी भेजी गईं। कुछ फोटो में काव्या के चेहरे पर खून भी नजर आ रहा था। उसे जिंदा छोड़ने के एवज में 30 लाख रुपए की फिरौती मांगी गई थी। मैसेज भेजने वाले ने बैंक खाते की डिटेल भी भेजी थी। रघुवीर ने इसकी शिकायत स्थानीय पुलिस से की। जहां से मामला कोटा पुलिस को भेजा गया था। कोटा पुलिस को तहकीकात के दौरान पता चला कि अपहरण की कहानी झूठी है।

दोस्त के मकान में लिए थे लड़की के हाथ-पैर बंधे फोटो- कोटा की एसपी अमृता दुहान ने बताया था कि मामले में हर फैक्ट को चेक करने के बाद क्लियर हो गया कि छात्रा के साथ कोई वारदात नहीं हुई है। वह अपने दो दोस्तों के साथ थी।

तुलसी नगर में दिन दहाड़े घर के ताले तोड़े

- पति-पत्नी काम पर गए थे, घर से सोने-चांदी के आभूषण चोरी

इंदौर (नप्र)। लसूड़िया में रजिस्ट्रार के यहां चोरी की वारदात हो गई। चोर लाखों रुपए का माल लेकर फरार हो गए। रजिस्ट्रार ने थाने में जाकर मामले की शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने चोरी गए माल को लेकर अलग से जानकारी देने की बात कही है। लसूड़िया पुलिस के मुताबिक सोमेश पुत्र कन्हैयालाल मौर्य निवासी बी तुलसीनगर की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ केस दर्ज किया है। सोमेश ने बताया कि वह रजिस्ट्री का काम करते हैं। मंगलवार को सुबह वह काम पर चले गए। इस दौरान पत्नी शिवांगनी भी अपने ऑफिस चली गई। शाम को वह घर पहुंची तो घर का ताला टूटा था। घर के अंदर जाकर देखा तो अलमारी खुली थी। सोमेश ने बताया कि उनकी अलमारी से सोने-चांदी के आभूषण और नकदी गायब हैं। जिसकी कीमत लाखों में है। उन्होंने पुलिस को अलग से चोरी गए पूरे सामान का बिल देने की बात कही है।

छात्रों के रूम से लैपटॉप और मोबाइल चोरी

इंदौर के भंवरकुआ में रहकर पढ़ाई करने वाले स्टूडेंट योगेश खटोरे निवासी मोनिका प्लाजा ने बताया कि वह अपने दोस्त युवराज और भतीजे मोहित के साथ यहां पढ़ाई करते हैं। रात में वह सो गए। इस दौरान अज्ञात बदमाश उनके दो मोबाइल और लैपटॉप चुराकर ले गया। पुलिस के मुताबिक छात्रों की जानकारी के बाद बिल्डिंग के पास में चोर के फुटेज मिले हैं। आरोपी की तलाश की जा रही है।

बंद खदान से गिट्टी निकालते रहे इंदौर के पूर्व विधायक

140 करोड़ का जुर्माना वसूलने का नोटिस, 216 करोड़ की प्रॉपर्टी के मालिक हैं शुक्ला

इंदौर (नप्र)। पूर्व विधायक व कांग्रेस नेता के परिवार पर खनिज विभाग ने 140 करोड़ रुपए वसूलने की तैयारी हो गई है। मामला खनिज के अवैध खनन से जुड़ा है। इसका पट्टा उनके पिता 'बड़े भैया' के नाम पर है। लेकिन उनके निधन के कारण बेटे और उनके बड़े भाई से जुर्माना वसूला जा सकता है। अपर कलेक्टर कोर्ट में पेश किया गया जहां से नोटिस जारी कर दिया गया है। सुनवाई 19 अप्रैल को होगी। केस में दोनों भाइयों के अलावा ईडन गार्डन गृह निर्माण संस्था, नीलेश पंसारी, मेहरबान राजपूत व अन्य को भी पार्टी बनाया गया है। अपर कलेक्टर गौरव बैनल ने बताया खनिज विभाग की ओर से केस फाइल पेश होने के बाद उस आधार पर वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

7 साल पहले खदान बंद करने के आदेश, फिर भी करते रहे खनन- खनिज विभाग के अनुसार उज्जैन रोड स्थित बारोली के सर्वे नंबर 4/1/1 और 4/2/1, 9/3/1 की 1.437 हेक्टेयर जमीन पंडित शुक्ला के नाम पर खनन के लिए आवंटित हुई थी। इसमें क्रेशर मशीन लगाकर गिट्टी और मुरम का खनन किया गया। 2017 में प्रदूषण विभाग ने खदान बंद करने के आदेश दिए थे, लेकिन इसके बाद भी खुदाई चलती रही।

इंदौर के तत्कालीन कलेक्टर डॉ. इलैयाराजा टी के आदेश पर यहां छापा मारकर क्रेशर मशीन जब्त कर कमेटी बनाकर जांच कराई गई। खदान को सील कर दिया। विभाग के मुताबिक यह पैनल्टी करीब 140 करोड़ रुपए की बन रही है। शुक्ला परिवार पर अवैध खनन के मामले में सांवेर के अलावा महू, देपालपुर, हातोद में भी कार्रवाई हुई थी। ब्लास्टिंग मशीन सहित 14 वाहन जब्त किए गए थे।

नपती के बाद पता चला कि कितना हुआ अवैध खनन

प्रशासन द्वारा कराई गई नपती के बाद पता चला कि जो खदान आवंटित हुई उससे करीब चार किमी दूर तक यह अवैध खनन चल रहा था। इस मामले में पहली बार फरवरी 2017 में केस दर्ज किया गया था। अवैध खुदाई मामले में राज्य सरकार के निर्देश पर प्रशासन ने भाजपा के वरिष्ठ नेता दिवंगत विष्णुप्रसाद शुक्ला और उनके पुत्र व कांग्रेस नेता संजय शुक्ला के खिलाफ केस दर्ज किया था।

कार्गो, ट्रांसपोर्टेशन और खेती है आय का मुख्य साधन

इंदौर-1 से कांग्रेस के पूर्व विधायक की कुल संपत्ति 216 करोड़ है। यह संपत्ति 5 साल में 80 करोड़ बढ़ी है। उनकी पत्नी भी 35 करोड़ की चल-अचल संपत्ति की मालिक हैं। शुक्ला का मुख्य कारोबार कार्गो, ट्रांसपोर्टेशन का है, कृषि आय भी है।

संपादकीय

इन आंकड़ों में कितना सच?

अगर सरकार देश के आर्थिक प्रगति के आंकड़ों से संतुष्ट है और उसे चुनाव जीतने का पूरा भरोसा है तो फिर इतनी जोड़तोड़, तोड़फोड़ और विपक्ष को सलाखों के पीछे सरकाने के पीछे वजह क्या है? एक तरफ सरकार मान रही है कि देश आर्थिक महाशक्ति बन रहा है, दूसरी तरफ प्रधानमंत्री जीरो बिजली बिल की बात कर रहे हैं। ऐसे में आम मतदाता के सामने सवाल यह है कि हकीकत क्या है? जो दिख और महसूस हो रहा है, वह सही है या फिर सरकार जो दावे कर रही है, उसमें दम है। मजे की बात यह है कि इस चुनाव में मोदी सरकार के लौटने की संभावना ज्यादा है, लेकिन कोई भी सौ फीसदी दावे के साथ ऐसा नहीं कर सकता। फिर भी सरकार 2047 तक के आर्थिक तस्वीर रंगने का काम कर रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अगले साल के लिए जीडीपी में आठ फीसदी का विकास दर बता दिया है। अभी हाल के समय तक आंकड़ों का खेल ऐसा नहीं था। विदेश व्यापार और औद्योगिक उत्पादन में एक महीने उतार दिखता था तो किसी महीने चढ़ाव। विदेश व्यापार का घाटा कभी रिकॉर्ड स्तर पर दिखता था तो कभी आयात कम होने से काफी कम। एक गरीबी के ही आँकड़े को लीजिए तो कई तरह के आँकड़े पेश किए जा रहे हैं। ऐसे में लग रहा है कि जो आंकड़े बताए जा रहे हैं, कहीं वह बनावटी तो नहीं हैं? जो गुलाबी तस्वीर सरकार लगातार पेश करने की कोशिश कर रही है, वह जमीनी असलियत से कितनी मेल खा रही है? बल्कि हो तो यह भी रहा है कि अगर आंकड़े सरकार के अनुकूल न हो तो उन्हें साफ तौर पर छुपाया जा रहा है ताकि लोग सच्चाई न जान सके। सबसे बड़ा मजाक तो जनगणना के आंकड़ों का है। सरकार ने 2021 में होने वाली जनगणना को कोरोना का बहाना बताकर रोक दिया था। लेकिन उसके तीन साल बाद भी यह काम नहीं किया गया। सरकार को चिंता थी कि कहीं सामने आए आंकड़ों उसके दावों की पोल न खोल दें। जनगणना के आंकड़े मौजूद न होने के कारण यह पता लगाना असंभव है कि बीते 10 साल में विभिन्न मोर्चों पर हुए कामों का जमीनी असर क्या है। जबकि कोरोना समाप्त होने के बाद जनगणना 2023 में आराम से कराई जा सकती थी। इन बातों से जो धनात्मक बातें हैं उनका महत्व कम नहीं होता। जीएसटी का संग्रह और भविष्य निधि कोष के सदस्यों की संख्या निरंतर बढ़ती गई है जिसे सरकार अपनी उपलब्धि ही नहीं, रोजगार बढ़ाने के वायदे को पूरा करने की तरह पेश कर रही है। मोदी राज के ज्यादा समय पेट्रोलियम पदार्थों की कीमत कम रही है और सरकार ने उस अनुपात में आम उपभोक्ताओं को राहत न देकर मोटा राजस्व जमा किया जिसका उपयोग-दुरुपयोग क्या हुआ यह हिसाब भी सरकार देने के लिए बाध्य नहीं है। जो लोग इस विरोधाभास पर नजर रखे हुए हैं वे अपने हिसाब से कुछ कारण और समाधान भी बताते हैं लेकिन चुनाव जीतने भर की चिंता वाली सरकार को इन पर ध्यान देने का होश नहीं लगता। निरंतर गिर रहा है। माना जाता है कि हमारे यहाँ महामारी की तुलना में आज करीब डेढ़ करोड़ ज्यादा मजदूर खाली बैठे हुए हैं। दूसरी ओर देश में अरबपतियों की संख्या बढ़ रही है। सरकार आर्थिक असमानता को भी छुपाना चाहती है। देश में अरबपति अगर बढ़ रहे हैं तो अच्छी बात है, लेकिन ऐसा धन के समान वितरण के साथ हो तो बेहतर है, देश के करोड़ों लोगों के जीवन में जहर घोलकर नहीं।

नजरिया

अनुराग बेहार

लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सीईओ एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइस चांसलर हैं।

तो गैस कांड जैसी घटना कम त्रासद होती

बचपन की यादें बड़ी विचित्र होती हैं। जंगली बैंगनी फूल तब भी खिले होंगे, लेकिन मुझे याद नहीं है। जबकि मुझे यह याद है कि बच्ची को दफ़नाने से पहले उसकी आँख से मलबे की धूल झाड़ दी गई थी। मैंने निश्चित रूप से ऐसा नहीं किया था। यह हमारे दिलों में बसी वह तस्वीर है..जो 1984 की भयावह सर्दियों की रात में बच गए थे। बाकी सब धुंधला है। स्ट्रेचर, शरीर और आतंक। हम भी बच्चे थे, अब तक की सबसे भीषण औद्योगिक आपदा के बाद मदद के लिए आगे बढ़ रहे थे। हमने ऐसा क्यों किया, मुझें नहीं पता। शायद सिर्फ इसलिए क्योंकि हम वहां साथ थे।

मेरे बचपन की यादों में सर्दी के मौसम में खिलने वाले जंगली, बैंगनी फूल नहीं बसते। वहीं किसी रास्ते पर वह मुझसे आगे-आगे चल रही थी। एक कुत्ता इधर उधर खेल-कूद में लगा था। दाहिनी तरफ एक भरी-पूरी खिली हुई नदी थी और बाईं तरफ घने दरख्तों के लिए सरहद बनाते हुए झाड़ियों की कतारें। सुबह ठंडी थी और उसने दूर से उसे तैरते हुए देखा। अपनी चाल तेज़ करते हुए वह चिल्लाने लगी, 'क्या कर रहा है, अम्मा के पास जा। जा, जा, नहीं तो पीटूंगी'। उसने गोता लगाया और हँसते हुए ठीक उसी जगह सतह पर आकर फिर गायब हो गया, जहाँ हम रास्ते पर थे। हम आगे बढ़े और वह गुस्से में बड़बड़ाती रही। 'स्कूल जाना है दस बजे, और अम्मा का इतना काम है। हमें माँ के लिए बहुत काम करना है'।

मैंने पूछा, 'वह कौन है?' 'मेरा बड़ा भाई', उसने जवाब दिया। 'तुमसे कितना बड़ा है?' 'दो साल'। 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' 'चौदह साल'। 'और तुम उसकी पिटाई करोगी?' 'हाँ, करूँगी'। 'मैं हमेशा से ही करती हूँ। 'वह मुझसे पिटता है, उसने कहा। 'वह दुनिया का सबसे अच्छा भाई है'। हम नदी को पीछे छोड़कर ऊपर की ओर बढ़े। ऊपर से हम बस्ती को देख पा रहे थे, जहाँ लगभग 50 बिखरी हुई झोपड़ियाँ थीं। 'वह अम्मा की झोपड़ी है', उसने बताया। 'लेकिन क्या तुम लोग उस गांव में नहीं रहते जहां से हम आ रहे हैं', मैंने पूछा। 'हाँ, रहते हैं', उसने कहा। मेरी दो अम्मा है।

उसने पूछा, 'वे लोगों की हत्या क्यों करते हैं? मैंने आश्चर्य से पूछा, 'कौन किसको मार रहा है। उसने कहा 'वे तो बस हत्याएं करते हैं, नहीं क्या? उन्होंने भाई को मार डाला, इसीलिए अम्मा अकेली हैं। हम बस्ती तक पहुंचे। जो लोग मेरी बाट जोह रहे थे, उन्होंने तुरन्त मेरा साथ दिया और दिशा दिखाई। इसी बीच वह तो कहीं और चली गई। मुझे बातचीत में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरी नजरें तो बस उसे ही ढूंढ रही थीं। आखिर मैंने उसके बारे में पूछ लिया। उन्होंने कहा कि वह बहुत अच्छी लड़की है। उसका भाई भी अच्छा है। पीछे की ओर खड़ी एक बुजुर्ग महिला की ओर इशारा करते हुए उन्होंने बताया कि उसके लिए वे सारा काम करते हैं।

मैंने पूछा, यह कैसी हत्या है जिसके बारे में लड़की बात कर रही थी। उनका कहना था कि महिला का बेटा किसी बड़े शहर में निर्माण कार्य में लग गया था। करीब तीन साल पहले अन्य लोगों के साथ उसकी भी हत्या कर दी गई। उन्होंने कहा, 'एक पुलिस केस चल रहा है, लेकिन आप जानते हैं कि यह सब कैसे काम करता है। तब से, वह और उसका भाई उसके लिए लगभग सब कुछ कर रहे हैं'। 'क्यों', मैंने पूछा। तब तो वह मुश्किल से 11 वर्ष की रही होगी। 'हम नहीं जानते', उन्होंने कहा। 'शायद उसका बेटा उनके प्रति बहुत दयालु था। हमें नहीं लगता कि वह जानती भी है कि वे यह सब क्यों करते हैं'।

हमें वापस उसी राह पर चलना पड़ा। मैं दूसरों के साथ चलना नहीं चाहता था। लेकिन उसकी कोई खबर ही नहीं मिली। तभी मुझे याद आया कि वह स्कूल गई होगी। उसी पल बस्ती के छोर पर, वृक्षों की कतार के पीछे से वह अचानक प्रकट हुई। मैंने पूछा, 'तुम स्कूल नहीं गई?' उसने कहा, 'मैं तुमसे बात करना चाहती हूं; मुझे एक दिन गैरहाजिर होना पड़ेगा पर कोई दिक्कत नहीं है। वे मुझे पसंद करते हैं'।

बाकी लोगों को पीछे छोड़ते हुए हमने चाल तेज़ कर दी। उसने पूछा, 'वे बच्चों को क्यों मार रहे हैं?' 'तुम किस बारे में बात कर रही हो?' 'मुझे पता है', उसने कहा। 'मैंने पढ़ा है,

और तस्वीरें भी देखी हैं। वे हजारों बच्चों को मार रहे हैं। उनकी अम्माओं की देखभाल कौन करेगा?'

'आप हत्या नहीं रोक सकते? आपने कहा कि आप बच्चों के साथ काम करते हैं; क्या आप कुछ नहीं कर सकते? कुछ छोटी-मोटी बातें भी? कुछ भी?' उसने पूछा, 'आप रो रहे हो?'। 'नहीं'। 'हां, आप रो रहे हैं'। 'मैंने तस्वीरें देखी हैं', उसने फिर से कहा। छोटी लड़कियाँ और लड़के। उनकी आँखों में खून था। मलबे के नीचे दबा हुआ'।

बचपन की यादें बड़ी विचित्र होती हैं। जंगली बैंगनी फूल तब भी खिले होंगे, लेकिन मुझे याद नहीं है। जबकि मुझे यह याद है कि बच्ची को दफ़नाने से पहले उसकी आँख से मलबे की धूल झाड़ दी गई थी। मैंने निश्चित रूप से ऐसा नहीं किया था। यह हमारे दिलों में बसी वह तस्वीर है..जो 1984 की भयावह सर्दियों की रात में बच गए थे। बाकी सब धुंधला है। स्ट्रेचर, शरीर और आतंक। हम भी बच्चे थे, अब तक की सबसे भीषण औद्योगिक आपदा के बाद मदद के लिए आगे बढ़ रहे थे। हमने ऐसा क्यों किया, मुझे नहीं पता। शायद सिर्फ इसलिए क्योंकि हम वहां साथ थे।

दिवाली के पटाखों से डरकर गली के कोने पर रहने वाला एक मासूम बूढ़ा कुत्ता अपने घर से बहुत दूर भागता है और लगातार भागता जाता है। 2 करोड़ लोगों के अभिशप्त शहर में कहीं खो जाता है। उन लोगों से अलग हो गया है जो उसकी देखभाल करते हैं, जिनसे वह जुड़ा हुआ है। ऐसे में आप क्या करेंगे? आप उसे 20 किमी दूर से खोजकर वापस घर ले आयेंगे? क्या उस महानगर में, जहाँ एक जैसे दिखने वाले हज़ारों कुत्ते हों, यह असंभव नहीं है? यदि आप काफी जिद्दी हैं तो शायद नामुमकिन नहीं।

ज़िद्दी हर उस चीज़ के लिए मेरा प्रतीकात्मक रूपक है जो आपको एक अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए चाहिए। चाहे जीत हो या हार। लेकिन सिर्फ अच्छी लड़ाई के लिए नहीं। किसी चीज़ के लिए भी, जो शायद और भी कठिन हो। अपने आस-पास के लोगों के प्रति हर दिन दयालु बनें और उनकी देखभाल करें। हमारी अपनी दैनिक माँगों, तुच्छ असफलताओं और छोटी-छोटी चिंताओं के बावजूद। मतभेदों और बांटने की कोशिशों के बावजूद। बावजूद इसके कि हमें ध्वज, महान सिद्धांतों या आदर्शवाद से कोई प्रेरणा नहीं मिली है। सिर्फ इसलिए कि हम वहां एक साथ हैं। दया और परवाह, एकजुटता के साथ, काम और भाईचारे के जरिये व्यक्त होने वाली सहानुभूति, भरोसे के सहारे...ये साथ मिलकर एक समुदाय का निर्माण करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा को अखंड रखते हुए एक साथ रहने की ललक।अच्छाई के लिए होने वाली लड़ाई में सफल होने के लिए यह आवश्यक है, भले ही पर्याप्त न हो। अच्छाई के लिए होने वाली लड़ाई विफल हो जाए संभव है, पर अच्छी बात यह भी है कि बूढ़ा कुत्ता घर वापस आ गया है। अच्छाई के लिए संघर्ष होता रहे तो शायद गैस रिसाव जैसी घटना कम त्रासद होगी, कोई अम्मा अकेली नहीं रहेगी और हम अपने बच्चों को नहीं मारेंगे। अगर हम जिद्दी हैं, हमने ठान ली है तो हर दिन दयालु बने रहेंगे।उसने कहा कि उसे खेद है कि उसने मुझे रुलाया। 'भगवान उन लोगों को कभी माफ नहीं करेंगे। आप कुछ नहीं कर सकते, यह भी ठीक है। वैसे भी आप दूसरे काम कर रहे हैं, आप अच्छे हैं। उसने हिदायत दी कि फिर भी कोशिश कीजिये। क्योंकि बच्चों को मारना बहुत बुरा है'। उसने हाथ लहराए और गायब हो गई। उसके जैसा कोई जिद्दी इंसान ही एक दिन नियति के साथ हमारी मुलाकात को संभव बना सकेगा।

अंग्रेजी अखबार मिंट में प्रकाशित आलेख से अनुदित

सेहत

डॉ. तेज प्रकाश पूर्णानन्द व्यास

अपने आप में जीवन शैली है 'ब्लू जोन आहार'

समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियाः।
आकर्षकात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थः इत्यभिधीयते ॥

जिस व्यक्ति के दोष (वात, कफ और पित्त) समान हों, अग्नि सम हों, धातु भी सम हों, और मल भी सम हों, शरीर की सभी क्रियाएं समान क्रिया करें, इसके अलावा मन, सभी इंद्रियां और आत्मा प्रसन्न होती हैं, वह मनुष्य स्वस्थ है। यहाँ 'सम्' का अर्थ 'संतुलित' (न बहुत अधिक न बहुत कम) है। कुछ लोग 100 या उससे अधिक तक कैसे जीवित रहते हैं? जैसे-जैसे 20वीं सदी ख़त्म हुई, लेखक और शिक्षक डैन ब्यूटनर ने इसका उत्तर ढूंढ़ना शुरू कर दिया। उनकी योजना आहार, जीवनशैली और पर्यावरण के विशिष्ट पहलुओं का अध्ययन करना था जो कुछ मनुष्यों को लंबे समय तक जीने में सक्षम बनाता है। नेशनल जियोग्राफिक और मानवविज्ञानी, महामारी विज्ञानियों और शोधकर्ताओं के मिश्रण के साथ मिलकर, डैन ने दुनिया भर में पांच क्षेत्रों की पहचान की, जहां शताब्दी का प्रतिशत सबसे अधिक है।

इन क्षेत्रों को ब्लू जोन कहा जाता है; उनमें पुरानी बीमारी की दर कम है और वैज्ञानिकों का मानना है कि उनका आहार इसका प्रमुख कारण है। जबकि यह आहार लगभग 20 वर्षों से मौजूद है, इसे हाल ही में नेटफ्लिक्स श्रृंखला 'लाइव टू 100: सीक्रेट्स ऑफ द ब्लू जोन' ने लोकप्रिय बनाया है। वोइला ! एक नया आहार यहां है जिसका लक्ष्य सौ वर्ष तक पहुंचना है: ब्लू जोन आहार। इसके पांच 'जोन' हैं। जापान में ओकिनावा; ग्रीस में इकारिया; सार्डिनिया, इटली में नुओरो प्रांत; कोस्टा रिका में निकोया प्रायद्वीप; और कैलिफोर्निया में लोमा लिंडा। ब्लू ज़ोन आहार ज्यादातर पौधों पर आधारित खाद्य पदार्थ खाने पर केंद्रित है। (और मांस, डेयरी, अंडे और चीनी को सीमित करता है।) श्रेयस्कर है कि पूर्ण इंद्रधनुषी रंग के फल और सब्जियों का उपयोग किया जाए, जिससे कि पर्याप्त मात्रा मे विटामिन और खनिज मिल जावें। जो चिर स्वस्थ जीवन दायक हैं। मांस, अंडा तो पूर्ण वर्जित है। ब्लू जोन क्या हैं?

क्लिनिकल आहार विशेषज्ञ और प्रमाणित मधुमेह शिक्षक अपेक्षा ठक्कर बताती हैं, 'ब्लू जोन वे क्षेत्र हैं जहां लोगों की उम्र बेहतर होती है और वे कम नैदानिक बीमारियों के साथ अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं। ब्लू ज़ोन आहार पौधे-आधारित खाद्य पदार्थों जैसे कि साबुत अनाज, नट्स और फलियां के सेवन को प्रोत्साहित करता है। यह परिष्कृत और प्रसंस्कृत उत्पादों के न्यूनतम उपयोग को बढ़ावा देता है। मांस और डेयरी भी इसका हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन सीमित मात्रा में। पोषण संबंधी मोर्चे के अलावा, यह नियमित व्यायाम और सावधानीपूर्वक खाने के अभ्यास को बढ़ावा देता है।'

ये खाद्य प्राथमिकताएँ चयापचय बूस्टर के रूप में काम करती हैं, फाइबर, विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सिडेंट की प्रचुर मात्रा प्रदान करती हैं, सूजन और संक्रमण को कम करती हैं, रक्तचाप को कम करती हैं, शरीर को क्षारीय बनाती हैं, हृदय, आंत और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देती हैं। जो लोग ब्लू ज़ोन

आहार को अपने जीवन में शामिल करना चाहते हैं, उनके लिए ठक्कर सलाह देते हैं, 'हमेशा भोजन के पशु स्रोतों को पौधे-आधारित स्रोतों के साथ मिलाकर शुरू करें, शुरुआत में 1:2 का अनुपात रखें। इसके बाद कोई भी व्यक्ति पशु स्रोतों को पौधे आधारित खाद्य स्रोतों से बदलना शुरू कर सकता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि परिवर्तन क्रमिक है। शुरुआती लोगों के लिए, पौधों पर आधारित स्नैक्स जैसे छोटे बदलाव एक व्यावहारिक विकल्प हो सकते हैं। एडामे, बीज, दाल, दालें और अंकुरित अनाज जैसे असंसाधित सोया को शामिल करने से आवश्यक प्रोटीन की दैनिक खुराक मिल सकती है।

शोध से पता चलता है कि ब्लू ज़ोन के लोगों की लंबी उम्र और घातक बीमारियों में कमी के पीछे एक मजबूत तंत्र उनके आहार विकल्पों के सूजन-रोधी लाभ हैं।

सही खाने के साथ-साथ सही तरीके से खाने पर भी ध्यान देना चाहिए। आहार इस बात पर केंद्रित है कि आप कैसे खाते हैं और क्या खाते हैं। ओकिनावावासी 80 प्रतिशत पेट भर जाने पर खाना बंद कर देते हैं। वीपीएस लक्षेशोर, कोच्चि में क्लिनिकल न्यूट्रिशनिस्ट और मुख्य आहार विशेषज्ञ डॉ. मंजू पी. जॉर्ज टिप्पणी करती हैं, 'माइंडफुल ईटिंग, जिसके तहत कोई बिना किसी दबाव के जानबूझकर खाना खाता है और बंद या संशोधित करता है, भोजन के प्रति हमारे नियमित दृष्टिकोण के लिए एक आदर्श अभ्यास है। यह हमें तनाव-मुक्त रखता है और हार्मोनल संतुलन बनाए रखने में मदद करता है-हमारे अंदर सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाता है।'

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ब्लू ज़ोन केवल एक विशिष्ट आहार नहीं है। यह अपने आप में एक जीवनशैली है, जो पौधे-आधारित खाद्य उत्पादों, सरल, पौष्टिक सामग्री और तनाव प्रबंधन, सामुदायिक समर्थन और नियमित आंदोलन जैसी सावधानीपूर्वक प्रथाओं को अपनाती है। स्वास्थ्य और कल्याण कोच और पोषण चिकित्सक दिव्या सुहानी बताती हैं, 'ब्लू ज़ोन समुदाय अक्सर मजबूत सामाजिक संबंधों पर जोर देते हैं। इन क्षेत्रों में लोग घनिष्ठ समूहों के रूप में रहते हैं जहाँ सदस्य एक-दूसरे का समर्थन करते हैं।

वे सामाजिक संपर्क को भलाई का एक अनिवार्य पहलू मानते हैं, जो तनाव के स्तर को कम करने और अपनेपन की भावना में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, उद्देश्य की भावना, या इकिगाई (जापान में ब्लू ज़ोन से जुड़ा एक शब्द) को समग्र कल्याण के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें सुबह उठने का एक कारण शामिल है, चाहे वह काम हो, परिवार हो, या कोई व्यक्तिगत जुनून हो। उद्देश्य की स्पष्ट समझ बेहतर मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है। ब्लू ज़ोन आहार की अवधारणा स्थानीय संस्कृतियों और स्वदेशी ज्ञान के महत्व पर जोर देती है। एक समानांतर रेखा खींचते हुए, सुहानी ने विस्तार से बताया, 'आयुर्वेद, सबसे पुरानी समग्र उपचार प्रणालियों में से एक, इसी तरह कल्याण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण शामिल है जो सिर्फ आहार से परे है। आयुर्वेद शरीर के प्राकृतिक संतुलन और जीवन शक्ति का समर्थन करने के लिए मुख्य रूप से पौधे-आधारित आहार का समर्थन करता है, जिसमें ताजे, मौसमी फलों और घर पर पकाई गई सब्जियों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। स्थानीय स्तर पर जो उपलब्ध है उसे खाना और हमारे पूर्वजों ने जो उपदेश दिया था उसका अभ्यास करना अधिक सार्थक है।'

यह समझना महत्वपूर्ण है कि ब्लू ज़ोन आहार में दुनिया भर की आदतें शामिल हैं और इसकी उत्पत्ति विभिन्न संदर्भों में हुई है। इसलिए, सभी के लिए एक जैसा समाधान नहीं हो सकता। सुहानी कहती हैं, 'ब्लू ज़ोन के सिद्धांतों को अपनाने से व्यक्तिगत परिस्थितियों के आधार पर अनुकूलन की अनुमति मिलती है। अंततः, यह उन तत्वों की पहचान करने के बारे में है जो आपकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ संरेखित होते हैं। 'ब्लू जोन' नाम ब्लू पेन वैज्ञानिकों से आया है, जिन्होंने उन गांवों को चिह्नित करने के लिए मूल सर्वेक्षण किया था जहां बड़ी आबादी रहती थी। प्रकृति को अपने मूल में रखते हुए, ब्लू ज़ोन आहार के बाद हरा रंग अपनाना सबसे अच्छा है।

एनसीईआरटी किताबों पर प्रश्न चिह्न

शिक्षा

श्याम कुमार कोलारे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

अप्रैल माह शुरु होते ही स्कूलों की घंटी के साथ अभिभावकों की जेबे ढ़ीली शुरू होने लगती है। बच्चे अपनी नई कक्षा के लिए बड़े बेसब्री से इंतजार करते है; नई कक्षा में जाने की तैयारी की ख़ुशी उनके चेहरे पर देखते ही बनती है। स्कूल के शुरु होते ही पुस्तकों की दुकान में एक जन सैलाव देखने को मिलता है द्य निजी स्कूलों में पढ़ाने वाले बच्चों के अभिभावक अपने-आप को एक ठगाने के लिए एक कतार में नजर आने लगते है द्य स्कूल की नई-नई किताबों का बोझ देखकर बच्चों के कंधे पहले से ही सहम जाते है। जिस नन्ही काया की हड्डी इतनी मजबूत भी नहीं होती कि वो बोझ उठा पाए, उसे किताबों के बोझ से दबाने की तैयारी होने लगती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए नीतियों और कार्यक्रमों पर केंद्र और राज्य सरकारों की सहायता और सलाह देता है। एनसीईआरटी और इसकी घटक इकाई स्कूली शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों में शोध कार्य करना, उसे बढ़ावा देना और समन्वय करना; मॉडल पाठ्य पुस्तकों का निर्माण, नवीन शैक्षिक तकनीकों और प्रथाओं का विकास और प्रसार करता है, अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, प्रकाशन और प्रसार गतिविधियों के अलावा, एनसीईआरटी स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के लिए एक कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य करता है। देश में शिक्षा की बेहतर स्थिति प्रदान करने के लिए देश के सर्वोच्च शिक्षाविदों की टीम लगातार कार्य करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, एनसीईआरटी (क) प्रारंभिक शिक्षा (ईसीसीई), (ख) स्कूल शिक्षा और (ग) वयस्क शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) विकसित करने के लिए नोडल एजेंसी है जो बेहतर शिक्षा के लिए रूपरेखा बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। यानि देखा जाये तो एनसीईआरटी की किताबों में वो सब है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) इन्ही बातो को ध्यान में रखकर बनाया गया है। एनसीईआरटी की किताबों में भाषा, अंग्रेजी, गणित, पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों को इतने अच्छे से निर्माण किया गया है जिससे बच्चों को सभी प्रकार के आवश्यक कौशल सिखाया जा सके, इसके अतिरिक्त कोई पुस्तक को बच्चों के लिए लाना समझ से परे है। इन सबके रहते हुए भी निजी स्कूल एनसीईआरटी की किताबों के बदले निजी प्रकाशकों की किताबें चला रहे हैं। इससे बच्चों पर बस्ते का बोझ बढ़ रहा है, साथ ही अभिभावकों को महंगी किताबें खरीदनी पड़ती है। आम आदमी आज जहां पहले ही महंगाई के बोझ तले दबा है, ऐसे में निजी स्कूल उसके बोझ और बढ़ा देते हैं। हर साल एडमिशन के दौरान निजी स्कूल नए नियमों के तहत अपनी जेबें भरते हैं और अभिभावक बोझ तले दबते जाते हैं। पहले बड़े बच्चे की किताबों से उनका छोटा बच्चा पढ़ लेता था क्योंकि किताबें वही रहती थी। अब बड़े बच्चों की किताबें छोटा बच्चा प्रयोग नहीं कर पाता क्योंकि हर साल जान-बूझकर किताबों में कोई न कोई बदलाव कर दिए जाते हैं, ताकि हर बार नई किताबे खरीदनी पड़े। स्कूलों द्वारा तय निजी प्रकाशकों की किताबें एनसीईआरटी की किताबों से पांच गुना तक महंगी हैं। निजी स्कूलों में कमीशन के चक्कर में हर साल किताबें बदलने के साथ अलग-अलग प्रकाशकों की महंगी किताबें लगाई जाती हैं। अभिभावक भी बच्चों के भविष्य को लेकर ज्यादा विरोध नहीं कर पाते। छोटे-छोटे बच्चों की चुनिंदा किताबें लेना अब अभिभावकों की मजबूरी बन गई हैं। निजी स्कूलों की मनमानी से माता-पिता पिस रहे हैं। स्कूलों में नया सत्र शुरू होते ही अभिभावकों की परेशानी बढ़ गई है। एक से दो माह की फीस के साथ स्कूलों में डेवलपमेंट फीस के नाम पर ली जाने वाली मोटी रकम भरनी है तो कॉपी-किताब भी खरीदनी है। कॉपी-किताब का सेट इतना महंगा है कि उसे खरीदने में अभिभावकों के पसीने निकले जा रहे हैं। कई निजी स्कूलों में तो पहली व आठवीं कक्षा की किताबों का सेट छह से दस हजार रुपये पड़ रहा है। प्रशासन और शिक्षा विभाग इस लूट पर चुप्पी साधे हुए हैं। इन दिनों सभी पुस्तक विक्रेताओं के यहां लंबी लाइनें लग रहीं हैं। परिजन बच्चों की किताबें खरीदने चुनिंदा दुकानों पर पहुंच रहे हैं। स्कूलों द्वारा तय निजी प्रकाशकों की किताबें एनसीईआरटी की किताबों से पांच गुना तक महंगी हैं।

निजी स्कूल की अतिरिक्त किताबों का चलन एनसीईआरटी की किताबों पर एक प्रश्न चिन्ह लगता है कि शायद निजी स्कूलों की नजर में यह किताबें पर्याप्त व पूर्ण नहीं है। शायद इनका मानना है एनसीईआरटी की किताबों के आलावा अतिरिक्त निजी प्रकाशन की किताबें से ही बच्चों को बेहतर शिक्षा दी जा सकती हैद्य यदि ऐसा है तो सरकार को भी इन्ही निजी प्रकाशन की पुस्तकों को हर सरकारी एवं निजी विद्यालय में संचालन के लिए मान्य कर देना चाहिए। निजी प्रकाशन की किताबों से अच्छी शिक्षा मिलती है तो इससे सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे क्यों वंचित रहे? सरकार एवं प्रशासन को इस ओर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति में बच्चों की शिक्षा एवं उसके सर्वांगीण विकास के लिए निति निर्धारण किया है, उसमे निजी प्रकाशन की किताबों का चलन एवं मान्यताओं पर ध्यान देकर कार्य करने पर विचार करना चाहिए। देश में एक शिक्षा पद्धति होना चाहिए, एक सा पाठ्यक्रम होना चाहिए। सरकारी स्कूल एवं निजी स्कूलों के बीच की खाई को दूर कर सभी बच्चों को एक सी शिक्षा का अधिकार होना चाहिए, न की निजी एवं सरकारी स्कूली शिक्षा के मतभेद।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

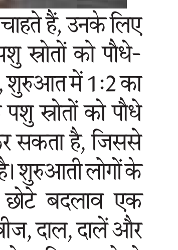

डंडे का जादू

इस बात को साफ कर देना उचित होगा कि पहले भी असुर सत्ता में आते रहे हैं। हमारी किताबें, कथाएं, ग्रन्थ वगैरह राक्षस राजाओं की कहानियों से भरे पड़े हैं। असुरों का कुशासन कोई नयी बात नहीं है। जब भी मौका मिलता है वे सत्ता में आ जाते हैं। लोकतंत्र की व्यवस्था असुरों को सत्ता से दूर रखने के लिए भी बनायी गयी थी। लेकिन सब जानते हैं कि चौकीदार और पुलिस रखने के बावजूद चोरियां होती रहती हैं। प्रायः सिस्टम का पेंदा पतला होता है। नहीं होता है तो भी उसमें सूराख बना लिए जाते हैं। चौकीदार तो चतरा होता है। 'जागते रहो' की आवाज मारते रहना ही उसका काम है। वह जानता है कि डर ही चौकीदारी को बनाये रखने की पहली शर्त है। डरे हुए लोग चौकीदार के हाथ में लाठियां और बन्दूक देख कर अपने को सुरक्षित समझते हैं। खैर, पुरानी बात करते हैं। बहुत पहले एक असुर द्वीप था। वहां एक महात्माजी पधारे तो सीमा पर ही सिपाहियों ने उनके चरण पखारे, कहा- 'महात्माजी, द्वीप में असुरों को नियंत्रित करना कठिन हो रहा है। उनकी उद्दंडता दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। कृपया कोई तगड़ा सा आशीर्वाद दीजिए, हम दीन-हीन सरकारी चाकर, करें तो डांटें जाएं, न करें तो फटकार पड़े। कोई जादू की छड़ी दीजिए जिसको घुमाते ही असुर ठीक हो जाए।' महात्मा जानते थे कि सिपाही जादू की छड़ी क्यों मांग रहे हैं। इन आलसी मोटों को अपनी तौंद से प्रेम होता है। डंडे का वजन सम्हालने में कठिनाई होती है। बोले- 'तुम्हारा काम हो जाएगा सिपाहियों, परंतु पहले कुछ शंकाओं का समाधान करो। ये बताओ कि तुम असुरों से सांठ-गांठ क्यों रखते हो।' सिपाही लगभग रोते हुए बोले- क्या करें महात्माजी, राज असुरों का है, उनकी नहीं सुनेंगे तो चलेगा कैसे! बात बात में फटकार, धमकी, तबादला या सस्पेंशन हो जाता है। हम भी बाल-बच्चेदार हैं, लाचार हैं। महात्मा बोले- सुना है असुरों से पैसा वगैरह भी लेते हो और बदले में छूट देते हो !

सिपाहियों की नजरें झुक गई, घिघियाते हुए बोले- विवशता है जी, छूट तो वे ले ही लेते हैं। मंहगाई हम लोगों के लिए भी उतनी है जितनी औरों के लिए। द्वीप वाले हमें सामान तक उधार नहीं देते हैं। हमें भी अपने बच्चों को पढ़ाना-लिखाना है, वेतन कम पड़ता है सो ले लेते हैं.... ।

''फिर तो तुम्हें उनसे शिकायत नहीं होना चाहिए।' महात्मा बोले। सिपाही चरणों में गिर गए- ' महाराज, हम असली चाकर, जो भी मांई-बाप होता है उसी की हजूरी करना पड़ती है। समझ में नहीं आता कि हम सिपाही हैं या असुर द्वीप की नगरवधुएं ! आप तो जादू की छड़ी दे दो महाराज, वरना हम भी किसानों की तरह फंदा चूम लेंगे , फिर आप ही कहोगे कि ये क्या किया !' आखिर महात्माजी पिघले- 'सिपाही भक्तों , अपने पद और कार्य पर गर्व करो। तुम्हारे हाथ में जादू की छड़ी नहीं डंडा है। इसका जादू तभी दिखाई देगा जब तुम दबंगों पर इसका प्रयोग करोगे। बेबस गरीबों पर प्रयोग करोगे तो डंडा बोझ हो जाएगा। उठो, डंडा उठाओ और इसके जादू को महसूस करो। जाओ।' बाहर निकल कर सिपाहियों को लगा कि महात्मा जी ने दिया तो कुछ नहीं, उल्लू बना दिया। डंडे में जादू तभी हो सकता है जब उसका नियंत्रण भी हमारे पास हो। हाथ हमारे हैं, डंडा हमारा नहीं है। चिढ और गुस्से में एक सिपाही ने सड़क किनारे बैठे कुत्ते को डंडा मार दिया। दूसरा बोला ङ्क अरे इसे क्यों मार दिया !

कोरोना काल

अभय बेडेकर (आईएएस)
(लेखक प्रशासनिक अधिकारी हैं)

पीड़ित परिजनों को ढांढस बंधाना बहुत मुश्किल था

ब्लैक फंगस की कहानी और मरीजों की संख्या कोरोना सिर्फ फेफड़े से जुड़ी बीमारी ही नहीं थी, जो उसकी पहचान रही। इसके साथ लोगों ने कई ऐसी बीमारियां भी भोगी है जिनके बारे में कभी सुना भी नहीं गया। ऐसी ही एक बीमारी है 'ब्लैक फंगस' जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में म्यूकर माइकोसिस कहा जाता है। इंदौर में जब दूसरी लहर दौरान कोरोना चरम पर था, ब्लैक फंगस के भी करीब 200 मरीज भर्ती थे। कमजोर इम्युनिटी कारण जब फंगस शरीर पर हमला करता है तो क्या हालत बनते हैं, ये देखना भी किसी पीड़ा से कम नहीं था।

कोरोना की दूसरी लहर के अंतिम दिनों में जब मैं अपने रूटीन राउंड पर बॉम्बे हॉस्पिटल गया था तो वहाँ एक मरीज़ को देखा जिसे चेहरे पर एक गंभीर घाव, फोड़ा और लाल सूजन थी जो धीरे-धीरे आँख की तरफ़ बढ़ रही थी। मैं उस दृश्य को देखकर दहल गया। क्योंकि, मैंने आजतक कोई भी ऐसा गंभीर वायरल इन्फेक्शन नहीं देखा था, जो इतना घबराहट पैदा करने वाला हो। मैंने जब डॉक्टर से पूछा कि ये क्या है, तो उन्होंने बताया कि ये 'म्यूकर माइकोसिस' है जिसे आम भाषा में ब्लैक फंगस भी कहते हैं और ये अत्यंत गंभीर और जानलेवा वायरल इन्फेक्शन है। म्यूकर माइकोसिस एक बेहद दुर्लभ बीमारी है, जो ज्यादातर उन लोगों को प्रभावित करती है जिनकी प्रतिरक्षण प्रणाली स्टेरॉयड, अनियंत्रित मधुमेह मेलिटस, सह-रुग्णता (प्रत्यारोपण पश्चात/घातकता) के कारण कमजोर है। जो वोरिकोनाज़ोल थेरेपी से गुज़र चुके हैं, या लंबे समय तक आईसीयू में रहे हैं उन्हें भी यह बीमारी अपनी चपेटे में लेती है।

कोविड-19 की शुरुआत के बाद ब्लैक फंगस के उद्भव, जिसे जाइजो माइकोसिस या म्यूकर माइकोसिस के नाम से भी जाना जाता है। उसने ध्यान आकर्षित किया था। कोविड के दौरान जिन लोगों की इम्यूनिटी कम थी, वे म्यूकर माइकोसिस के निशाने पर थे, जो एक दुर्लभ फंगल इन्फेक्शन है। यह सड़ती हुई रोटी, मिट्टी या खाद के ढेर से पैदा हुई फंगी से हो सकता है और काफी जानलेवा भी है। यदि इसका शुरुआती चरण में इलाज नहीं किया गया तो मृत्यु की संभावना हो सकती है। ज्यादातर यह उन लोगों को प्रभावित करता है जिन्हें कोरोना हुआ है। यह वायरस भोजन, पर्यावरण और अन्य चीजों में मौजूद रहता है। ब्लैक फंगस डिजीज का मूल कारण सांस के माध्यम से वातावरण से फंगस को अंदर लेना है। ये फंगल इन्फेक्शन साइनस, मस्तिष्क और लंग्स इन्फेक्शन का कारण बनता है। दूसरा तरीका त्वचा के माध्यम से है यदि आपकी त्वचा पर कोई चोट है तो यह आपकी त्वचा के माध्यम से प्रवेश कर सकता है और त्वचा में संक्रमण का कारण बन सकता है।

खुद को माइक्रोस्कोपिक फंगल इन्फेक्शन से दूर रखना काफी मुश्किल है। ये इन्फेक्शन्स तब तक हानिकारक नहीं होते हैं जब तक कि आपका इम्यून सिस्टम कमजोर न हो। ब्लैक फंगल सांस के साथ शरीर के अन्य हिस्सों में भी फैल सकता है। जब इंदौर के अस्पतालों में ब्लैक फंगस के मरीज बढ़ने लगे और हर तरफ़ उसके बारे में बात होने लगी तो सभी का ध्यान उसकी तरफ गया और इस बात की तलाश होने लगी कि आख़िर ब्लैक फंगस हो क्यों हो रहा है! फिर सब तरफ़ चर्चा होने लगी, डॉक्टर सेमिनार हुए, टीम मीटिंग हुई और मेडिकल फील्ड में बड़े लेवल पर भी ये बात पहुंची कि आख़िर ब्लैक फंगस क्यों फ़ैल रहा है!

तब तीन- चार बातें निकल कर सामने आयी कि जिन मरीजों का हाल ही में कैंसर का ऑपरेशन हुआ है। जो किसी गंभीर बीमारी जैसे एड्स, हार्ट डिजीज या कैंसर से ग्रस्त हैं और जिनकी इम्युनिटी एकदम कम हो चुकी है। जो व्यक्ति नशे के आदि हों या स्टेरॉयड लेते रहे हो। जिनका ऑर्गन ट्रांसप्लांट हुआ हो। जिन्हें कोरोना हुआ हो और जिससे उनकी इम्युनिटी बहुत कम हो गई हो। इन सारे मरीज़ों की इम्युनिटी एकदम निचले लेवल पर होती है और ये किसी भी वायरस या बैक्टीरिया के अटैक के प्रति अत्यंत संवेदनशील हो चुके होते हैं। इसलिए जैसे ही कोई भी वायरस इन पर अटैक करता है तो ये तुरंत ही उस से प्रभावित हो जाते हैं।

कोरोना के समय ऑक्सीजन की कमी पड़ने पर अस्पतालों ने और लोगों ने ऑक्सीजन कंसंट्रेटर ख़रीदे थे। ऑक्सीजन कंसंट्रेटर में पानी डालना पड़ता है जिससे वह

ऑक्सीजन बनाकर मरीज़ तक पहुंचाता है। पर ये पानी डिस्टिल्ड वॉटर होना ज़रूरी है अन्यथा पानी में उपस्थित फ़ंगस (जो आँखों से दिखते नहीं है) ऑक्सीजन के रास्ते मरीज़ के शरीर में पहुँच सकते हैं और वो क़हर ढा सकते हैं। इन्हें ब्लैक फ़ंगस कहते हैं और जो जानलेवा हो सकता है। कोरोना काल की दूसरी लहर के अंतिम दिनों में यही हुआ जिन मरीज़ो की इम्युनिटी कोविड-19 से ग्रस्त होने के कारण एकदम कम हो चुकी थी और उन्होंने ऑक्सीजन कनसंट्रेटर का उपयोग किया था उनके नाक में और मुंह में फ़ंगस पहुंचा और यही ब्लैक फ़ंगस की बीमारी थी। ये ऐसी ख़तरनाक बीमारी थी कि अगर मरीज़ के नाक में पहुंच जाए तो नाक काटनी पड़ती थी और अगर आँख तक पहुंच जाए तो आँख ही निकालना पड़ती थी। ये सब इसलिए कि ब्लैक फ़ंगस मस्तिष्क तक न पहुँच जाये अन्यथा मरीज़ की मृत्यु निश्चित है। मैंने ऐसे अनेक मरीज़ उस समय बॉम्बे अस्पताल और सुपर स्पेशलिटी अस्पताल इंदौर में देखे जिनको देखकर घबराहट से भागने का मन करता था। किसी की नाक कटी हुई थी तो किसी की आँख निकली थी। उनके घर वालों को ढाढस बंधाना कितना मुश्किल था वो अनिर्वचनीय है। ब्लैक फ़ंगस की बीमारी जितनी ख़तरनाक है, उसकी दवाई भी उतनी ही ज़हरीली और ख़तरनाक है। एम्फोटेरिसिन बी, पॉसकोनाज़ोल ये दोनों ही दवाइयाँ ब्लैक फ़ंगस के लिए दी जाती थी और ये दोनों ही दवाइयाँ बहुत ख़तरनाक और ज़हरीली हैं। एम्फोटेरिसिन-बी अत्यंत टॉक्सिक मेडिसिन है जो सिर्फ़ डॉक्टर्स की देख-रेख में ही दी जा सकती है। अगर इसे बिना डॉक्टर के पूछे दिया गया तो ये किडनी और लिवर को हमेशा के लिए डैमेज कर सकता है।

ब्लैक फ़ंगस कितनी ख़तरनाक बीमारी है इसका अन्दाज़ इसी से लगाया जा सकता है कि कोविड-19 में भारत में मृत्यु दर 1.15 प्रतिशत थी जबकि ब्लैक फ़ंगस में मृत्यु दर 50 प्रतिशत के लगभग थी। एम्फोटेरिसिन-बी का डोज़ एक मरीज़ को 20 इंजेक्शन का था जो उस कठिन समय में मिलने बहुत मुश्किल थे। इसकी राशनिंग हो चुकी थी और ये बहुत मुश्किल से मिल रहे थे। क्योंकि, मई 2021 तक भारत में ब्लैक फ़ंगस के 8848 मरीज़ हो चुके थे। एम्फोटेरिसिन-बी नामक ये दवाई मूलतः डेनमार्क में बनती है और भारत में इंपोर्ट की जाती है। उस समय इस दवाई की वैश्विक डिमांड होने से भारत में इसकी पूर्ति नहीं हो पा रही थी और लोग परेशान थे।

तब इंदौर के तत्कालीन कलेक्टर मनीष सिंह इस पर बहुत कड़ी नज़र रखे हुए थे और हमारे साथ दवाइयों की उपलब्धता की रोज़ समीक्षा करते थे, ताकि इंदौर के मरीज़ों को परेशान न हो। मैं और उसके साथ के अधिकारी रोज़ अस्पतालों का दौरा करते और स्थिति पर नज़र बनाकर रखने के साथ साथ मरीज़ो और उनके परिजनों की हिम्मत बढ़ाते रहते थे। इंदौर में एक समय ब्लैक फ़ंगस के 200 से ज़्यादा मरीज़ थे और उन्हें दवाई पहुँचाना अत्यंत कठिन काम था। कोरोना की दूसरी लहर के ख़त्म होने के साथ ही इस घातक बीमारी में भी कमी आई और स्थिति सामान्य होने लगी। वो दौर याद करके भी कंपकंपी सी आ जाती है। भगवान करे कि वो ख़तरनाक समय फिर कभी किसी के सामने न आए। **(लेखक वर्तमान में अलीराजपुर कलेक्टर हैं और कोरोना के दौरान इंदौर में एडीएम रहते हुए कोरोना के इंतजामों से जुड़े रहे)।**

मुद्दा

सुरेश उपाध्याय

इलेक्टोरल बांड, महंगा चुनावी खर्च और समाधान की राह

वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने धनाभाव के चलते चुनाव न लड़ने की मंशा जाहिर कर चाहे-अनचाहे एक जरुरी मुद्दे की ओर ध्यानाकर्षण तो किया ही है. यह एक हकीकत है कि चुनाव की प्रक्रिया बहुत महंगी है तथा प्रत्याशी बनना किसी सामान्य व्यक्ति के बस की बात नही रही है. चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित सीमा से कई गुना अधिक चुनाव खर्च की स्वीकारोक्ति दिवंगत नेता श्री गोपीनाथ मुंडे ने भी एक सार्वजनिक सभा में कही थी. श्रीमती सीतारमण का बयान ऐसे समय आया है जबकि इलेक्टोरल बांड की प्रक्रिया को असंवैधानिक निरुपित करते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से सच्चाई सामने आई है तथा सूची के प्रकाशन के बाद विशेषज्ञो, विश्लेषकों व राजनीतिज्ञो के बयान व निष्कर्ष जनता के समक्ष आए हैं.

इस सूची के विश्लेषण के जो मोटे मोटे परिणाम सामने आए हैं उसके अनुसार बांड की राशि केंद्र या राज्य में जो सत्ताधारी दल हैं, उनके हिस्से में आई है. इसका सीधा अर्थ है कि अपने व्यवसायिक हितो के लिए ही बांड खरीदे गए हैं तथा सम्बंधित दलों को प्रदत्त किए गए हैं. बांड की राशि का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा भारतीय जनता पार्टी को मिला है जिसकी केंद्र व कई राज्यो में सरकारे हैं.

यह तथ्य भी व्यवसायिक हितो के लिए बांड खरीदने व सम्बंधित दल को दिए जाने की पुष्टी करते हैं. जिन्होने बांड के रुप में चंदा दिया है, उन्हे किस प्रकार व्यवसायिक लाभ पन्हुचा है यह भी सार्वजनिक चर्चा में आया है तथा 'तुम मुझे चंदा दो/मैं तुम्हे धंधा दूंगा' का नारा सुनाई दिया है. राजनीतिक दलों व इन चंदा देने वालों के परस्पर हितो की कीमत तो कन्ही न कन्ही से वसूली ही जानी थी और स्वाभाविक रुप से वह भारत की जनता थी, जिसने इस कीमत को चुकाया है.

व्यवसायिक लाभ के अतिरिक्त केंद्रिय एजेंसियों यथा ईडी, सीबीआई, आयटी के छापों से सम्बंधित तिथियों व उन तिथियों के आसपास छापा पडने वाले समूहों से सम्बंधितों द्वारा इलेक्टोरल बांड खरीदने के आकंडो ने हफ्ता वसूली / वसूली भाई जैसी शब्दावाली को ईजाद किया है. इसे लोकतांत्रिक मूल्यों में आई गिरावट के रुप में देखा जाना चाहिए. इन्ही संदर्भो में चुनाव की घोषणा से पूर्व झारखंड के मुख्यमंत्री शीबु शोरेन (गिरफ्तारी के पूर्व त्यागपत्र) तथा चुनाव की घोषणा के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल (जिन्होने तिहाड़ जेल जाने के बाद भी त्यागपत्र नही दिया) की गिरफ्तारी के समय ने संदेह का घेरा गहरा किया है. कांग्रेस को आयकर की पेनेल्टी का नोटिस भी इसी तरह देखा जा सकता है, जिसे बाद में न्यायालयीन प्रक्रिया में चुनाव तक स्थगित रखने की बात कही गई है. किसी भी लोकतंत्र के लिए यह आदर्श स्थिति नही कही जा सकती है. किसी भी कर्मचारी की सेवाकाल में 24 घंटे से अधिक की गिरफ्तारी पर उसे निलम्बित (सस्पेंड) करने का प्रावधान है तथा उसका पालन सुनिश्चित किया जाता है.

न्यायायिक हिरासत व तिहाड जेल जाने के बाद भी अरविंद केजरीवाल का त्यागपत्र नही देना तथा जेल से सरकार चलाने की बात कहना किसी भी तरह से आदर्श व नैतिक लोकतांत्रिक मूल्य नही माना जा सकता है..ऐसे समय में विश्व की सबसे बडी राजनीतिक पार्टी, इलेक्टोरल बांड की सबसे बडी हिस्सेदार पार्टी, पांच व सात सितारा स्टेटस के आफिस वाली पार्टी, चुनाव का टिकट ही जीत की ग्यारंटी वाली पार्टी, तीसरी बार सरकार बनाने के आकंठ विश्वास वाली पार्टी की सरकार की केंद्रिय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण का यह बयान समझ से परे है. पार्टी द्वारा इस बयान पर चुप्पी को यदि स्वीकृति माना जाए तो यह और भी विस्मित व परेशान करने वाली बात है.. खैर, यह श्रीमती सीतारमण का व्यक्तिगत निर्णय है लेकिन लोकतंत्र को व्यापक व समावेशी स्वरुप देने के लिए इस समस्या की राह अवश्य खोजी जानी चाहिए.

चुनाव खर्च को पार्टी व व्यक्ति पर छोडने के बजाए सरकार इस खर्च को उठाए, एक विकल्प यह हो सकता है. इसके लिए प्रतिवर्ष बजट में प्रावधान कर फंड बनाया जा सकता है. विश्व आर्थिक विषमता रिपोर्ट के अनुसार देश की शीर्ष दस प्रतिशत आबादी के हिस्से देश की सम्पत्ति का साठ प्रतिशत हिस्सा आता है. इस सम्पत्ति पर प्रतिवर्ष न्यूनतम कर के माध्यम से इस राशि को आय का हिस्सा बनाकर खर्च की पूर्ति की जा सकती है.

दूसरा विकल्प चुनाव आयोग के नियंत्रण व देखरेख में फंड बनाया जा सकता है जिसमे कोई भी व्यक्ति, संस्थान, समूह अंशदान कर सकता है. जिस पर उसे आयकर में छूट प्रदान की जा सकती है. पिछ्ले चुनाव में राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त मतो के आनुपातिक आधार पर इस राशि का वितरण विभिन्न मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलो में वितरित किया जा सकता है तथा चुनाव उपरांत उनसे हिसाब लिया जा सकता है. पारदर्शी व स्वैच्छिक इस प्रक्रिया से चुनाव को कालेधन के प्रभाव से मुक्त किया जा सकता है तथा बडे स्तर पर भ्रष्टाचार पर भी रोक लगाई जा सकती है. चुनाव खर्च को न वहन कर सकने वाले आमजन व साधारण कार्यकर्ता भी इससे चुनाव लडने में हिचकिचाएंगें नहीं तथा लोकतंत्र को व्यापक व समावेशी बनाने की प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा. चंदे के बदले समूहों को दी जाने वाली सुविधा/हित की राशि शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी बुनियादि सुविधाओं व लोककल्याण की योजनाओं के लिए प्रयोग की जा सकती है.

लोकसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है तथा प्रक्रिया जारी है और यह उपयुक्त समय इस पर निर्णायक चर्चा का दिखाई देता है. देश की बडी समस्या भ्रष्टाचार से निपटने तथा लोकतंत्र को व्यापक, प्रभावी व समावेशी बनाने में इससे मदद मिलेगी, ऐसा विश्वास है।

सांस्कृतिक विरासत

अमित राव पवार

भोजशाला का महत्व

विश्व का केंद्र भारत और भारत का हृदय स्थल मध्यप्रदेश तथा मध्यप्रदेश के केंद्र में स्थित मालवा, जो सदियों से अपनी अलग पहचान लिए इतिहास के पन्नों के साथ विश्व में हमेशा ही प्रसिद्ध रहा है। सांस्कृतिक विरासत से लेकर प्राचीन भारत और राजनीति परिदृश्य को हम इस मालवा में निहार सकते हैं। इसका और अधिक महत्व तब बढ़ जाता है, जब तक्षशिला व नालंदा विश्वविद्यालय के बाद धारानगरी अथवा भोजशाला का उल्लेख होता है। इस राज्य की यह अयोध्या कही जाने वाली एक नगरी है, जो भोजशाला के कारण विश्व प्रसिद्ध है। परमार वंश के राजा भोज जो कि प्राचीन नगर धारानगरी के राजा थे। जिन्होंने अपने राज्य का एक विशालकाय मैदान (अपने राज्य की खाली जगह) संस्कृत शाला के रूप में परिवर्तित की। इसी स्थान पर अपने अनन्य भक्त को माँ सरस्वती ने साक्षात दर्शन दिए। आगे चलकर इस स्थान को भोज की शाला (शाला अर्थात् अध्यन करने का स्थान या कक्ष) भोजशाला कहा जाने लगा, जो विश्व में संस्कृत का अध्ययन केंद्र रहा।

राजा भोज ने अपने शासनकाल के दौरान इस जगह का निर्माण करवाया था। आप माँ सरस्वती के अनन्यभक्त में से एक कहे जाते हैं। देवी ने अपने भक्त की भक्ति और प्रसन्नता देखकर साक्षात दर्शन दिए। जिस स्थान पर दर्शन दिए वह स्थान भोजशाला 'वाग्देवी मंदिर' के नाम से विश्व प्रसिद्ध हुआ। इसका निर्माण 11वीं सदी का माना जाता है। विश्व में यह संस्कृत विद्या का अपने आप में एक अलग केंद्र हुआ करता था। हजारों विद्यार्थी यहाँ संस्कृत वेदों, शास्त्रों, निषेध, उपनिषद का अध्ययन करने के साथ ही कला ,संगीत,वासुशास्त्र आदि के लिए दुनिया भर से विद्यार्थियों व शोधार्थियों का आना लगा रहता था। इतिहास के साक्ष्य तथा शिलालेख व मंदिर पर की गई नक्काशी और संस्कृत के श्लोक यह दर्शाते हैं कि यह माँ सरस्वती का प्रकट स्थल है। यहाँ पर अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ शिखर पर स्थित भोजशाला की भव्यता बढ़ा रही थी। एक विशालकाय भवन जिसमें हजारों कक्ष थे। वर्तमान में जो शेष दिखाई दे रहा है, यह भवन का गर्भगृह जिसमें देवी सरस्वती की प्रतिमा थी। इसी के ठीक सामने प्रांगण के मध्य में यज्ञ कुंड है, जिसमें सैकड़ो वर्षों तक निरंतर यज्ञ होता रहा। सन् 1035 में सरस्वती जन्मोत्सव बसंत पंचमी पर देश-विदेश के हजारों विद्वान् हिंदू धर्माचार्य संतों के सानिध्य में सरस्वती महायज्ञ के साथ वाग्देवी प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा भोजशाला में की गई। यह आयोजन 40 दिन महोत्सव के रूप में मनाया गया। इसके एक वर्ष पूर्व 1034 में प्रसिद्ध मूर्तिकार मंथल द्वारा स्फटिक की माँ वाग्देवी की प्रतिमा का रूप देना आरंभ किया गया था।

इस मंदिर अर्थात् भोजशाला के बारे में अनेक विद्वानों का कहना है कि बुद्धि व ज्ञान की देवी सरस्वती का प्रकट इसी स्थान पर बसंत पंचमी फागुन मास में हुआ था। माँ सरस्वती की विशेष दृष्टि व कृपा ने राजा भोज विश्व के राजाओं में कुछ अलग दिखाई पड़ते है, जो 72 कलाओं तथा 36 प्रकार के युद्ध निर्माण में निपुण होने के साथ ही 84 ग्रन्थो की रचना इन्होंने की।मध्य प्रदेश के धार में अपने समय का विश्व प्रसिद्ध संस्कृत अध्ययन केंद्र तथा देवी सरस्वती का मंदिर, जिसे भोजशाला के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण राजा भोज ने अपने शासनकाल 1010 ई.से 1055 ई. (44 वर्ष के) शासन के दौरान कराया। राजा की भक्ति साधना से प्रसन्न होकर देवी सरस्वती ने साक्षात राजा भोज को दर्शन दिए थे प्रकट स्थल पर राजा भोज ने देवी के उसी 'स्वरूप वाग्देवी रूप' को स्थापित किया, जिस रूप में देवी ने दर्शन दिए थे। सन 1464 में मोहम्मद खिलची ने धारानगरी पर आक्रमण कर भोजशाला को नष्ट कर माँ वाग्देवी की प्रतिमा को खंडित कर परिसर से बाहर किया। (यहाँ एक बात सिद्ध होती है कि इस स्थान पर आक्रमण के पूर्व मंदिर था।) सन 1875 में खुदाई के दौरान माँ वाग्देवी की मूर्ति मिली, जिसे सन 1980 में ब्रिटिश शासन के राजनीतिक अभिकर्ता मेजर किनकेड अपने साथ लंदन ले गए। तब से ही मूर्ति लंदन संग्रहालय में है। जिसकी पुष्टि सन 1961 में प्रसिद्ध इतिहासकार एवं पदम् श्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर जी स्वयं लंदन जाकर की। 18-19 फरवरी 2003 को भोजशाला आंदोलन में तीन कार्यकर्ताओं का बलिदान तथा 1400 कार्यकर्ताओं पर प्रतिघात्मक कार्रवाई हुई। 650 वर्षो बाद 8 अप्रैल 2003 को हिंदुओं को पूजन-दर्शन का अधिकार प्राप्त हुआ। इसी के साथ कुछ शर्तों पर सहमति की गई। इसके तहत हर मंगलवार और बसंत पंचमी पर सूर्योदय से सूर्यास्त तक हिंदुओं को पूजा की अनुमति और शुक्रवार को मुस्लिम को नमाज की अनुमति (मुस्लिम समुदाय इस जगह को मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती धारावी की 1238-1330 की दरगाह/मस्जिद मानता है। 'यहां भी स्पष्ट होता है कि पूर्व में यहां वाग्देवी मंदिर ही था।') दी गई, शेष पांच दिन भोजशाला पर्यटकों के लिए खुली रहती है।

मध्यप्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने ज्ञानवापी की तर्ज पर धार की भोजशाला का सर्वे करने का आदेश 11 मार्च (सोमवार) 2024 को दिया तथा 6 सप्ताह में सर्वेक्षण कर रिपोर्ट सौपने को कहा। अधिवक्ता श्री विष्णु प्रसाद जी जैन ने याचिका में बताया कि यह हजार साल प्राचीन वाग्देवी मंदिर है, जो एएसआई की देखरेख में है। कई तस्वीरें भी है, जिसमें यह नजर आता है कि यह मंदिर है मस्जिद नहीं। बगल में प्राचीन जल कुंड है, यह मंदिर का हिस्सा है। भोजशाला के भीतर कैमरा भी है जहाँ एएसआइ का ताला है। भोजशाला में हवन का स्थान है, संस्कृत में दीवारों पर श्लोक भी लिखे हैं, देवी देवताओं की कई छविया और मूर्तियां अभी भी मंदिर परिसर के भीतर है, कई मूर्तिया फर्श के नीचे है, हनुमान जी की एक बड़ी मूर्ति भी है। दीवारों ,खंभों पर कई साक्ष्य और संकेत है, छत पर धर्म चक्र और पारंपरिक हिंदू शैली में नक्काशीदार स्तंभ है जो मंदिरों में पाए जाते हैं। स्तंभों पर हिंदू भगवान देवी-देवताओं की छवि भी है। भवन के स्तंभ पर सूर्यदेव की खंडित छवि भी है। मस्जिदों में इस प्रकार के स्तंभ नहीं पाए जाते। जिसे देखते हुए अयोध्या व ज्ञानवापी की तरह वैज्ञानिक सर्वेक्षण की माँग की थी।सन 1960 से साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला ज्ञानपीठ पुरस्कार का स्वरूप चिन्ह भी भोजशाला की माँ वाग्देवी से लिया गया है। नागरशैली का यह मंदिर जिसका हर हिस्सा स्वतः ही अपनी गवाही देता है।कि यहाँ पर उत्कृष्ट एक-एक चिन्ह सनातन और हिन्दू धर्म से सम्बंधित है।बीच-बीच मे आक्रांताओं द्वारा आक्रमण करने के कारण इस स्थान को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। कांच में बंद ब्राह्मणी लिपि में लिखे शब्द जिन्हें जैन मुनियों द्वारा पढ़ा गया जिससे ज्ञात होता है कि परमार काल मे यहां हिंदू धार्मिक कार्य किये जाते रहे है।

पं.माखनलाल जी की जयंती पर विशेष

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी
(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में प्रोफेसर हैं।)

'यह सुधार-समझौतों वाली मुझको भाती नहीं ठिठोली'

माखनलाल जी सदैव असंतोष एवं मानवीय पीड़ाबोध को अपनी पत्रकारिता के माध्यम से स्वर देते रहे। पत्रकारिता के क्षेत्र में कोई भी जंजीर उन्हें बांध नहीं पायी। उनकी लेखनी भद्रता एवं मर्यादा की तो कायल थी किंतु वे भय, संत्रास एवं बंधनों के खिलाफ थे। 'कर्मवीर' के संपादक कैसे संपादक थे, इसे बताने के लिए उन्होंने कहा कि - 'हम फक्कड़ सपनों के स्वर्गों को लुटाने निकले हैं। किसी की फरमाइश पर जूते बनानेवाले चर्मकार नहीं हैं हम।' यह निर्भीकता ही उनकी पत्रकारिता की भावभूमि का निर्माण करती थी। स्वाधीनता आंदोलन की आँच को तेज करने में उनका कर्मवीर अग्रणी बना। कर्मवीर की परिधि व्यापक थी। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विषयों पर समान अधिकार से चलने वाली संपादक की लेखनी हिंदी को सोच की भाषा देने वाली तथा युगचिंतन को भविष्य के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त करने वाली थी। कर्मवीर जिस भाषा में अंग्रेजी राजसत्ता से संवाद कर रहा था, उसे देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय जनमानस में आजादी पाने की ललक कितनी तेज थी।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी और उनकी संपूर्ण जीवनयात्रा, आत्मसमर्पण के खिलाफ लड़ने वाले संपादक की यात्रा है। रचना और संघर्ष की भावभूमि पर खड़ी हुयी उनकी लेखनी में अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध का जज्बा न चुका, न कम हुआ। वस्तुतः वे एक साथ कई मोर्चों पर लड़ रहे थे और कोई मोर्चा ऐसा न था, जहां उन्होंने अपनी छाप न छोड़ी हो। सही मायने में 'कर्मवीर' के संपादक ने अपने पत्र के नाम को सार्थक किया और माखनलाल जी स्वयं कर्मवीर बन गए। 4 अप्रैल, 1889 को होशंगाबाद (मप्र) के बाबई जिले में जन्में माखनलालजी ने जब पत्रकारिता शुरू की तो सारे देश में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव देखा जा रहा था। राष्ट्रीयता एवं समाज सुधार की चर्चाएं और फिरंगियों को देश बदर करने की भावनाएं बलवती थीं। इसी के साथ महात्मा गांधी जैसी तेजस्वी विभूति के आगमन ने सारे आंदोलन को एक नई ऊर्जा से भर दिया। दादा माखनलाल जी भी उन्हीं गांधी भक्तों की टोली में शामिल हो गए। गांधी के जीवन दर्शन से अनुप्राणित दादा ने रचना और कर्म के स्तर पर जिस तेजी के साथ राष्ट्रीय आंदोलन को ऊर्जा एवं गति दी वह महत्व का विषय है।

इस दौर की पत्रकारिता भी कमोवेश गांधी के विचारों से खासी प्रभावित थी। सच कहें तो हिंदी पत्रकारिता का वह जमाना ही अजीब था। आम कहावत थी- जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो। और सच में अखबार की ताकत का अहसास आजादी के दीवानों को हो गया था। इसी के चलते सारे देश में आंदोलन से जुड़े नेताओं ने अपने पत्र निकाले। जिनके माध्यम से ऐसी जनचेतना पैदा की कि भारत आजादी की सांस ले सका। वस्तुतः इस दौर में अखबारों का इस्तेमाल एक अस्त्र के रूप में हो रहा था और माखनलाल जी का 'कर्मवीर' इसमें एक जरूरी नाम बन गया था।

हालांकि इस दौर में राजनीतिक एवं सामाजिक पत्रकारिता के समानांतर साहित्यिक पत्रकारिता का एक दौर भी चल रहा था। सरस्वती और उसके संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी उसके प्रतिनिधि के रूप में उभरे। माखनलाल जी ने भी 1913 में प्रभा नाम की एक उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिका के माध्यम से इस क्षेत्र में सार्थक हस्तक्षेप किया। लोगों को झकझोरने एवं जगानेवाली रचनाओं के प्रकाशन के माध्यम से प्रभा शीघ्र ही हिंदी जगत का एक जरूरी नाम बन गयी। दादा की 56 सालों की ओजपूर्ण पत्रकारिता की यात्रा में प्रताप, प्रभा व कर्मवीर उनके विभिन्न पड़ाव रहे। साथ ही उनकी राजनीतिक वरीयता भी बहुत उंची थी। वे बड़े कवि थे, पत्रकार थे पर उनके इन रूपों पर राजनीति कभी हावी न हो पायी। आजादी के बाद 30 अप्रैल, 1968 तक वे जीवित रहे पर सत्ता का लोभ उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाया। इतना ही नहीं 1967 में भारतीय संसद द्वारा राजभाषा विधेयक पारित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रपति को वह पद्मभूषण का अलंकरण भी लौटा दिया जो उन्हें 1963 में दिया गया था। उनके मन में संघर्ष की ज्वाला हमेशा जलती रही। वे निरंतर समझौतों के खिलाफ लोंगों में चेतना जगाते रहे। उन्होंने स्वयं लिखा है- अमर राष्ट्र, उदंड राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र, यह मेरी बोली यह सुधार-समझौतों वाली मुझको भाती नहीं ठिठोली।

माखनलाल जी सदैव असंतोष एवं मानवीय पीड़ाबोध को अपनी पत्रकारिता के माध्यम से स्वर देते रहे। पत्रकारिता के क्षेत्र में कोई भी जंजीर उन्हें बांध नहीं पायी। उनकी लेखनी भद्रता एवं मर्यादा की तो कायल थी किंतु वे भय, संत्रास एवं बंधनों के खिलाफ थे।

'कर्मवीर' के संपादक कैसे संपादक थे, इसे बताने के लिए उन्होंने कहा कि - 'हम फक्कड़ सपनों के स्वर्गों को लुटाने निकले हैं। किसी की फरमाइश पर जूते बनाने वाले चर्मकार नहीं हैं हम।' यह निर्भीकता ही उनकी पत्रकारिता की भावभूमि का निर्माण करती थी। स्वाधीनता आंदोलन की आँच को तेज करने में उनका कर्मवीर अग्रणी बना। कर्मवीर की परिधि व्यापक थी। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विषयों पर समान अधिकार से चलने वाली संपादक की लेखनी हिंदी को सोच की भाषा देने वाली तथा युगचिंतन को भविष्य के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त करने वाली थी। कर्मवीर जिस भाषा में अंग्रेजी राजसत्ता से संवाद कर रहा था, उसे देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय जनमानस में आजादी पाने की ललक कितनी तेज थी। स्वाधीनता आंदोलन में अपने प्रखर हस्तक्षेप के अलावा कर्मवीर ने जीवन के विविध पक्षों को भी पर्याप्त महत्व दिया। आए दिन होने वाली घटनाओं को मापने- जोखने एवं उनसे रास्ता निकालने की दिव्यदृष्टि भी कर्मवीर के संपादक के पास थी। अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राजनीति के अलावा साहित्य कला

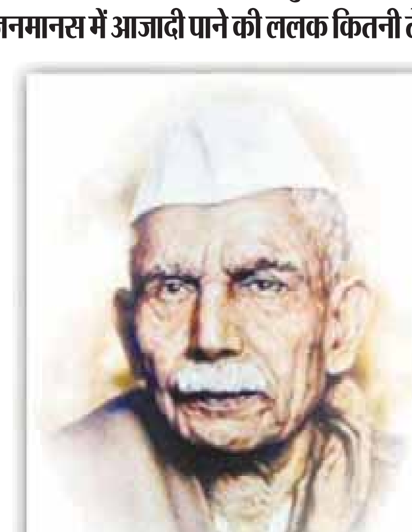

और संस्कृति को भी उन्होंने महत्व दिया। साहित्यिक पत्रों के संदर्भ में उनकी समझदारी विलक्षण थी वो कहते हैं- 'हिंदी भाषा का मासिक साहित्य बेढंगें और बीते जमाने की चाल चल रहा है। यहां बरसाती कीड़ों की तरह पत्र पैदा होते हैं। फिर भी यह आश्चर्य नहीं कि वे मर क्यों जाते हैं। यूरोप में हर पत्र अपनी एक निश्चित नीति रखता है। हिंदी वालों को इस मार्ग में रीति की गंध नहीं लगी।' यह टिप्पणी आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है।

अपने लंबे पत्रकारीय जीवन के माध्यम से दादा ने नई पीढ़ी को रचना और संघर्ष का जो पाठ पढ़ाया वह आज भी हतप्रभ कर देने वाला है। कम ही लोग जानते होंगें कि दादा को इसकी कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। उनके संपादकीय कार्यालय यानी घर पर तिरसठ बार छापे पड़े, तलाशियां हुयीं। 12 बार वे जेल गए। कर्मवीर को अर्थाभाव में कई बार बंद होना पड़ा। लेखक से लेकर प्रूफ रीडर तक सबका कार्य वे स्वयं कर लेते थे। इन अर्थों में दादा विलक्षण स्वावलंबी थे।

कर्मवीर एक ऐसा पत्र था जिसके संपादक आजादी के आंदोलन के अग्रणी नेता थे। इसलिए राष्ट्र प्रथम उसकी वैचारिक नीति भी रही। आजादी के समय देश के बंटवारे का दंश पूरे देशवासियों के मनों को मथ रहा था। इस भावना को व्यक्त करते हुए 'कर्मवीर' के 15 अगस्त,1947 को माखनलाल जी लिखते हैं- 'यह 15 अगस्त है, भारत दो टुकड़े हैं, किंतु आजाद है, क्या पूर्ण आजाद है...? यह जवाहर और जयप्रकाश जानें कि भारत पूर्ण स्वतंत्र होगा या उपनिवेश बनकर रह जाएगा। नोआखली को जानेवाले यात्री गांधी से गांधी से देश 'स्वागत' नहीं कह सकता, क्योंकि देश खंडित है। बिदा भी नहीं कह सकते क्योंकि अखंड भारत और पूर्ण स्वातंर्त्य का स्वप्न अभी अपनी मुठ्ठी में लिए वह चला जा रहा है। यह 15 अगस्त है।' इसी तरह पत्रकारिता उनके लिए राष्ट्रसेवा और समाज के जागरण का ही एक माध्यम थी। कर्मवीर के माध्यम से वे यही कर रहे थे। भरतपुर के संपादक सम्मेलन में वे पत्रकारिता जगत का आह्वान करते हुए कहते हैं- 'यदि समाचार पत्र संसार की एक बड़ी ताकत है तो उसके सिर जोखिम भी कम नहीं है। पर्वत की जो शिखरें हिम से चमकती हैं और राष्ट्रीय रक्षा की महान दीवार बनती हैं, उन्हें ऊंची होना पड़ता है। जगत में समाचार पत्र यदि बड़प्पन पाए हुए हैं, तो उनकी जिम्मेदारी भी भारी है।बिना जिम्मेदारी के बड़प्पन का मूल्य ही क्या है?' कर्मवीर अपने समय का एक ऐसा पत्र बना जिसने समकालीन रचनाशीलता को बहुत प्रोत्साहित किया। तमाम उदीयमान लेखक इसके माध्यम से लेखन की दुनिया में आए।

ठेकेदारों पर मेहरबान नगर पालिका, निर्माण कार्यों से गुणवत्ता नदारद, यूरिनल निर्माण में मजदूर बने मिस्त्री तो कहीं बिना काम के ही ठेकेदारों को कर दिया भुगतान

आमला। कहावत है जब सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का! कुछ इसी तर्ज पर इन दिनों पूरा नगरपालिका प्रशासन बिना किसी से डरे बिना किसी नियम और शर्तों को माने,बगैर काम को अंजाम दे रहा है, हालत ये हो गए हैं कि इन दिनों नगर पालिका द्वारा जो लाखों रुपए की लागत से निर्माण कार्य कराए जा रहे हैं, उसे ठेकेदारों के भरोसे छोड़ दिया गया है, फिर चाहे निर्माण कार्यों में गुणवत्ता रहे ना रहे मापदंड के हिसाब से काम हो रहा हो या नहीं हो रहा हो, कोई देखने वाला नहीं है ऐसे में जनता की मेहनत की कमाई का जो नगर पालिका में बंदरबाँट हो रहा है, उससे कई सवाल खड़े हो गए हैं, खासकर नगर पालिका इंजीनियर नगर पालिका अधिकारी और परिषद के भी कई जिम्मेदारों पर सवाल उठने लगे हैं, कि आखिर शहर में कराए जा रहे, लाखों रुपए के शासकीय निर्माण कार्यों की गुणवत्ता आदि की जांच क्यों नहीं की जा रही है, वहीं पिछले दिनों तो मुख्यमंत्री आदर्श संरचना के तहत शहर में कराए गए लगभग 2 करोड़ के निर्माण कार्यों के पूरा होने से पहले ही सारणी की लक्ष्मी कंस्ट्रक्शन कंपनी को आधे से ज्यादा राशि का भुगतान भी कर दिया गया है, यहां भी किसी मापदंड से और बिना किसी गुणवत्ता की जांच किए बगैर भुगतान किया गया है,

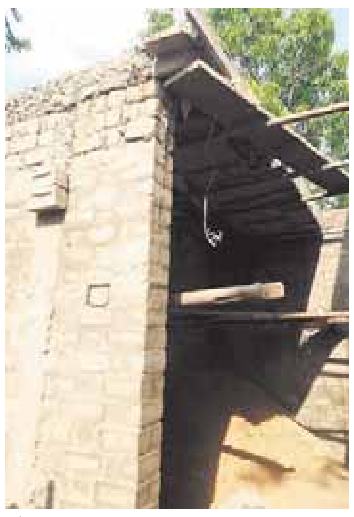

और यह आरोप परिषद में विपक्ष के ही कई पार्षद भी उठा रहे हैं, किंतु नगर पालिका इंजीनियर नगर पालिका अधिकारी और परिषद में सत्ता पक्ष की खामोशी भ्रष्टाचार की कहानी खुद सुनाते नजर आती है।

ये रिश्ता क्या कहलाता है

इधर नगर पालिका के जिम्मेदारों और ठेकेदारों के बीच चल रही सांठ-गांठ पर विपक्ष के पार्षद और आमजन भी अब सवाल पूछने लगे हैं कि आखिर यह रिश्ता क्या कहलाता है दरअसल बीते कुछ समय से नगर पालिका के द्वारा कराया जा रहे ज्यादातर निर्माण कार्यों में भारी लापरवाही और गुणवत्ता विहीन निर्माण कार्यों को लेकर लोग सवाल उठा रहे हैं, उसके बावजूद भी बिना किसी ख़ौफ़ के नगर पालिका के जिम्मेदार अपनी मनमर्जी से काम करवा रहे हैं, उसे शासन प्रशासन के किसी बड़े जिम्मेदार की संलिप्तता से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

मजदूरों को बनाया मिस्त्री खुलेआम लीपापोती

शहर में इस समय पूर्व स्वीकृत लगभग 2 करोड़ से ज्यादा के निर्माण कार्य चल रहे हैं, इसमें वार्ड क्रमांक 17 की संजीवनी हॉस्पिटल हो, वार्ड क्रमांक 4 में बन रहे सड़क या नाली, या वार्ड क्रमांक 6 में बन रहा यूरिनल हो सभी स्थलों पर भर्राशाही का जो आलम चल रहा है, उससे कोई गैर जानकार भी सवाल उठा सकता है, बेसिक स्कूल के पास न्यू मार्केट में बनाया जा रहा लगभग 2 लाख की लागत का यूरिनल को तो मजदूर ही तैयार कर रहे हैं यहां हमारे सूत्रों द्वारा पता चला है कि यहां पर ठेकेदार द्वारा यूरिनल निर्माण के दौरान गुणवत्ता का कोई भी ध्यान नहीं रखा जा रहा है, जिससे यहां बनाया जा रहा यूरिनल कितने दिनों तक चल पाएगा कहना मुश्किल नहीं है।

इन्होंने कहा

देखो मैं तो कई महीनों से बोल रहा हूं कई बार पत्र भी दिए हैं नगर पालिका के जिम्मेदार और ठेकेदार मिलकर बड़ा खेल कर रहे हैं इंजीनियर साइट पर जाकर देखते भी नहीं है नगर पालिका में सत्ता पक्ष के पार्षदों की कोई सुनता नहीं है चुनाव के बाद मैं भ्रष्टाचार को लेकर बड़ा आंदोलन करूंगा।

सुधीर अंबाडकर पार्षद वार्ड क्रमांक 3 आमला

शिकायतें तो आ रही है समय-समय पर नगर पालिका अधिकारियों को बोला भी जाता है और अभी तो सीएमओ भी नहीं रहते हैं, इस समय इंजीनियर साहब ही अकेले सब देख रहे हैं आचार संहिता का भी पूरा फायदा उठाया जा रहा है।

रोहित हारोड़े सभापति लोक निर्माण समिति नगर पालिका परिषद आमला

न्यू मार्केट में बन रहे यूरिनल का जगह को लेकर थोड़ा सा विवाद था इसलिए उसे थोड़ा छोटा किया गया है बाकी मैं खुद भी सभी साइट पर जाकर काम देखता हूं।

सुभाष शर्मा इंजीनियर नगर पालिका परिषद आमला

ईको क्लब द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं संपन्न

प्रतिभागी हुए सम्मानित

बैतूल। जेएच कॉलेज में संचालित ईको क्लब द्वारा पर्यावरण शिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन, पर्यावरण विभाग मप्र शासन के निर्देशानुसार विद्यार्थियों को पर्यावरण हितैषी जीवनशैली अपनाने के लिए जागरुक करने हेतु विगत दो माह से विभिन्न प्रकार कार्यक्रम, प्रतियोगितायें, प्रदर्शनी, व्याख्यान, नेचर-कैम्प, एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या प्रो.ऊषा द्विवेदी के मुख्य आतिथ्य एवं प्राचार्य डॉ विजेता चौबे की अध्यक्षता में पुरूस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। ईको क्लब प्रभारी डॉ.अल्का पांडे द्वारा प्रतिवेदन वाचन कर महाविद्यालय के पर्यावरण विकास में ईको क्लब की भूमिका पर प्रकाश डाला। उषा द्विवेदी ने ईको क्लब द्वारा महाविद्यालय परिसर में किये गए कार्यों की सराहना कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा करना हम सबका दायित्व है। प्राचार्या डॉ.विजेता चौबे ने कहा कि वृक्षों के साथ अपनापन बढ़ाएं व उनसे संवाद स्थापित करें, जिससे अलग अनुभूति होगी। आपने कहा कि घरो बहुत सारी अनुपयोगी सामग्री होती है जिन्हें कचरे में फेंकने पर पर्यावरण प्रदूषित होता है, इनका उपयोग कर उपयोग सजावटी सामग्री बनाएं। डॉ.चौबे ने विद्यार्थियों को पर्यावरण हितैषी जीवन शैली अपनाने की शपथ भी दिलवाई। इस दौरान निबंध लेखन, स्लोगन निर्माण, पोस्टर मेकिंग, बाल-पेंटिंग, रांगोली, मेहंदी, भाषण, स्वरचित काव्य पाठ, कटारे से सौंदर्य, प्रश्न सत्र, दाना-पानी, मटकी फोड़ प्रतियोगिताएं संपन्न की गई और प्रतिभागियों को उपहार और प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन प्रो.दीपिका साहू एवं जो सुनीता गढ़ेकर ने और आभार प्रो.अर्चना सोनारे ने व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रो.मुकुन्द चन्देल, डॉ.अर्चना मिश्रा,डॉ.अनिता सोनी, डॉ.धर्मेन्द्र कुमार, डॉ.सुखदेव डोंगरे डॉ.प्रतिभा चौरे, डॉ.महेन्द्र नावंगे, डॉ.प्रीतिबाला पाल,डॉ.किरण खातरकर का सराहनीय योगदान रहा।

कांग्रेस से रामू टेकाम ने दाखिल किया अपना नामांकन

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अनुक्रम में बुधवार को संसदीय क्षेत्र बैतूल क्रमांक 29 के लिए नेशनल कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम ने अपना नाम निर्देशन जमा किया। श्री टेकाम के साथ पूर्व मंत्री सुखदेव पांसे, विधायक हरदा डॉ.आर.के.दोगुने एवं टिमरनी विधायक अभिजीत शाह भी उपस्थित थे। नाम निर्देशन के 7वें दिन तक कुल 11 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन प्राप्त किए। इनमें बहुजन मुक्ति मोर्चा, बहुजन समाज पार्टी, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, तीन निर्दलीय, स्वतंत्र किसान पार्टी, भारत आदिवासी पार्टी, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी प्रत्याशियों ने नामांकन फार्म क्रय किए।

प्रेमिका को जलाने वाले आरोपी प्रेमी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बैतूल। शादी से इंकार करने पर सनकी आशिक ने प्रेमिका को पेट्रोल डालकर जला दिया और फरार हो गया जिसे पुलिस ने 24 घंटे के भीतर ही छिंदवाड़ा जिले से गिरफ्तार कर लिया है। घटना 1 अप्रैल की है पीड़िता बबीता पिता मोतीलाल धुर्वे निवासी मलकापुर जोकि वर्तमान में हमलापुर पेट्रोल पंप के पीछे रहती है जिसे उसके प्रेमी आर्यन मालवी ने जान से मारने की नियत से पेट्रोल डालकर आग लगा दी थी। पीड़िता की शिकायत पर गंज पुलिस ने धारा 452,307 के तहत मामला दर्ज कर जांच में लिया था। घटना के बाद पीड़ित लड़की को उसकी मां ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया था जंहा पीड़िता ने मीडिया को बताया था की उसका प्रेमी आर्यन मालवी शराबी है जिसकी वजह से उसने आर्यन से मिलना बंद कर दिया था उसके बाद वह पेट्रोल डालकर आग लगा कर भाग गया। जिला अस्पताल से पीड़िता को गांधी मेडिकल कालेज भोपाल रेफर किया गया है गंज पुलिस ने आरोपी की तलाश जारी रखी जिसके बाद टीम बनाकर अलग अलग जगहों पर आरोपी आर्यन की तलाश की। आर्यन मालवी पिता संजय मालवी उम्र 25 साल नि.अर्जुन नगर गंज को घेराबंदी कर ग्राम डोंगरिया तहसील जुन्नारदेव जिला छिंदवाड़ा से विधिवत गिरफ्तार कर पुलिस हिरासत में लिया गया है। इस कार्यवाही में रविकांत डेहरिया, अजय रघुवंशी, सुरेश शाक्य, किशोरीलाल सल्लाम, संदीप, मयूर, दुर्गेश,आर अनिरुद्ध, नवीन रघुवंशी एवं नरेन्द्र, आरक्षक राजेंद्र की विशेष भूमिका रही है।

लू से बचने स्वास्थ्य विभाग ने की एडवाइजरी जारी

बैतूल। वर्तमान समय में तापमान में तेजी से वृद्धि हुई है। गर्म हवाएं चलने लगी हैं, जिसके कारण लू लगने की आशंका बढ़ गई है। लू से बचने के लिए जन सामान्य को ज्यादा समय तक घर में रहने एवं अनावश्यक बाहर ना निकलने की सलाह दी गई है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उइके ने बताया कि आमजन अति आवश्यक कार्य होने पर ही घर से बाहर निकलें, अनावश्यक बाहर न निकलें। घर से बाहर निकलते समय पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं, खाली पेट घर से बाहर न जाएं, इससे लू लगने का खतरा बढ़ जाता है। दिन में कम से कम 12 से 15 गिलास पानी जरूर पियें। लू से बचाव के लिए देशी घरेलू उपाय आम का पना, नीबू का पानी एवं प्याज के रस का उपयोग करें। बाहर निकलते समय सूती कपड़े से चेहरा और सर ढककर रखें तथा पानी साथ में जरूर रखें। पहनने के लिए सूती कपड़ों का अधिक उपयोग करें। अगर लू के लक्षण जैसे मितली आने, गला सूखने तथा बुखार का प्रकोप होने जैसा लगे तो तत्काल डॉक्टर से संपर्क करके उचित उपचार करायें। स्वास्थ्य विभाग द्वारा ठन्डे वातावरण से गरम या गरम वातावरण से ठण्डे में अचानक न जाने की सलाह दी गई है।

तवा नदी में पानी कम होते ही सारनी रेंज के जंगलों में धड़ल्ले से होने लगती है

बेशकीमती सागौन की अवैध कटाई

- **बैतूल से सागौन की छिंदवाड़ा में हो रही तस्करी, मैदानी अमला बेसुध**

बैतूल। जिले में स्थाई मुख्य वन संरक्षक ना होने के चलते बड़े पैमाने पर वृक्षों की अवैध कटाई के मामले सामने आते रहे हैं। इसी कड़ी में उत्तर वन मंडल बैतूल की सारनी रेंज में बड़े पैमाने पर अवैध सागौन और अन्य प्रजातियों के वृक्षों की कटाई का मामला सामने आया है। गौरतलब है कि जिस स्थान पर कटाई का यह मामला सामने आया है उस संबंध में पूर्व में भी सारनी निवासी वाइल्ड लाइफ एंड नेचर कंजर्वेशन एक्टिविस्ट आदिल खान ने वन विभाग को लिखित शिकायत सबूतों के साथ दी थीं परंतु साल भर बाद फिर यही स्थिति यहां पर निर्मित हो रही है। मिली जानकारी अनुसार वन परिक्षेत्र सारनी के कक्ष क्रमांक 333, 334, 336, 337 में बड़े पैमाने पर सागौन व अन्य वृक्षों की कटाई लगातार की जा रही है। तवा नदी में पानी कम होने के बाद सारनी रेंज के उक्त क्षेत्र में अवैध कटाई होने लगती है और सागौन की बेशकीमती लकड़ियों और अन्य प्रजाति के वृक्षों की लकड़ियों को नदी पार कर वन माफिया द्वारा छिन्दवाड़ा जिले में ले जाया जाता है। जिस क्षेत्र में कटाई हो रही है वह चयन सह सुधार कार्यक्रम वाला जंगल है, यानी ऐसा जंगल जहां वृक्ष कटाई के लिए व्यस्क माने जाते हैं और नया पौधारोपण भी ऐसे जंगल में किया जाता है।

जंगल में बेखौफ हो रहा 70 से 80 फीट पेड़ों का सफाया

सारनी रेंज के जंगल में बड़े पैमाने पर सत्तर से अस्सी फुट ऊंचे वृक्षों को काटा गया है जिसमें सागौन के वृक्ष भी बड़ी मात्रा में शामिल हैं एवं लकड़ियों को तस्करी के लिए जंगल में ही तैयार करके भी रखा गया है, वहीं अधिकांश बेशकीमती लकड़ी की तस्करी भी कर दी गई है। वहीं तवा नदी के किनारे पर वृक्षों की छोटी लकड़ियां और बल्लियों को भी बहुत बड़े पैमाने पर जमा करके रखा गया है। वन माफिया द्वारा ना सिर्फ सागौन, साज के वृक्षों को काटा जा रहा है बल्कि अन्य प्रजातियों के वृक्षों को भी काटा जा रहा है जिसमें भिर्रा जैसे वृक्ष भी शामिल हैं।

आदिल के साथ जंगल की छानी खाक: सारणी रेंज में हो रही अवैध कटाई की शिकायत जब सोशल एक्टिविस्ट आदिल ने वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से की तो आज उत्तर वन मंडल डीएफओ देवांशु शेखर के निर्देश पर एसडीओ, रेंजर सहित अन्य अमले ने जंगल की सुध ली।

राष्ट्रीय हिन्दू सेना की सफलता: 62 गौवंश बचाए, तस्करों को पकड़ा

पुलिस ने तीन आरोपियों को किया गिरफ्तार, गौवंश को गौशाला पहुंचाया

बैतूल। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के सदस्यों ने गोवंश तस्करी को रोकने में सफलता हासिल की। उन्होंने गोवंश तस्करों के जाल से 62 गौवंश बचाए। पुलिस ने इस मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। प्रदेश संयोजक पवन मालवीय ने इस घटना को साझा करते हुए बताया कि सूचना मिली थी जिसमें एक ट्रक में बड़ी संख्या में गौवंश को बंद करके महाराष्ट्र के बीजापुर तक ले जाने की साजिश थी। ट्रक को पुलिस की सहायता से सोनाघाटी पर पकड़ा गया। सभी गौवंश को माँ ताप्ती गौशाला भयावाडी में सुरक्षित रूप से पहुंचाया गया। घायल गौवंश को तत्काल चिकित्सा सहायता भी प्रदान की गई। पवन मालवीय ने बताया कि संगठन को सूचना मिली थी कि लाल कलर के ट्रक में गौवंश भर कर महाराष्ट्र के

कत्लखाने फ़ोरलेन होते हुए ले जा रहे थे। संगठन के सदस्यों ने फोरलेन पर गाड़ी आने का इंतज़ार किया। पुलिस अधीक्षक को जानकारी दी और गाड़ी को पकड़ने की योजना बनाई। ज़िला अध्यक्ष अनुज राठौर ने बताया कि गो तस्करों ने गाड़ी के चारों और भूसों की बोरिया एवं तिरपाल को बांध दिया था। डबल पार्टीशन में गौवंश क्ररूता पूर्वक रखे गए थे। मौके पर कोतवाली टीआई देवकरण डेहरिया, पाढर चौकी प्रभारी दिनेश उइके, एसआई नितिन उइके, एएसआई जगदीश रायकवार सहित पुलिस बल पहुच गया था।

कलयुगी बेटे ने पिता को डंडे से पीटकर मौत के घाट उतारा, आरोपी पुत्र पुलिस की गिरफ्त में

बैतूल। एक कलयुगी बेटे ने अपने ही पिता को डंडे से इस तरह पिटाई की बुजुर्ग पिता की मौत हो गई आरोपी पुत्र को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। घटना 2 अप्रैल की रात की है हंडेड डायल पर सूचना मिली थी की मुलताई थाना क्षेत्र के ग्राम सांडिया में मुंगस्या वागद्रे उम्र 88 वर्ष बुजुर्ग को उसका बड़ा लड़का गणेश वागदरे डंडे से पीट रहा है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पंहुची जंहा बुजुर्ग के छोटे पुत्र बलिराम ने पूरी घटना बताई जिसके बाद पुलिस ने और बुजुर्ग की पत्नी चंद्र भागा, पुत्र बलिराम ने घायल बुजुर्ग को सी एच सी मुलताई में इलाज के लिए भर्ती कराया था लेकिन इलाज के दौरान गंभीर रूप से घायल बुजुर्ग ने दम तोड़ दिया। पुलिस ने आरोपी बड़े पुत्र गणेश पर प्रकरण पंजीबद्ध करते हुए प्रतिबंधात्मक कार्यवाही कर उसे गिरफ्तार कर बंद हवालात किया गया था और गिरफ्तारी की सूचना विधिवत परिवार जनों को दी गई थी बुजुर्ग की मौत के बाद प्रकरण की जांच पुलिस कर रही है।

अवयस्क बालिका का अपहरण कर बलात्कार करने वाले आरोपी को 20 वर्ष के कठोर कारावास व 6000 रुपये के अर्थदंड से किया दंडित

बैतूल। अनन्य विशेष न्यायाधीश, (पॉक्सो एक्ट) ने थाना कोतवाली बैतूल के अंतर्गत निवास करने वाली 17 वर्षीय अवयस्क बालिका का अपहरण कर उसके साथ बार-बार बलात्कार करने वाले आरोपी बनवारी करछले पिता गोण्डू करछले, उम्र-25 वर्ष निवासी थाना कोतवाली का धारा 5(एल)/6, पॉक्सो एक्ट समाविष्ट धारा 376(2)(एन) भा.द.वि, के अपराध का दोषी पाते हुए 20 वर्ष के कठोर कारावास एवं 5,000 रूपए एवं धारा 363 भादवि का दोषी पाते हुए 3 वर्ष के कठोर कारावास एवं 1000 रू अर्थदण्ड से दंडित किया गया। प्रकरण में म.प्र. शासन की ओर से जिला अभियोजन अधिकारी एसपी वर्मा एवं वरिष्ठ सहायक जिला अभियोजन अधिकारी/अनन्य विशेष लोक अभियोजक श्री ओमप्रकाश सूर्यवंशी के द्वारा पैरवी की गयी। प्रकरण की जानकारी देते हुए अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी एडीपीओ अमित राय ने बताया कि दिनांक 26.06.2021 को पीड़िता के पिता ने थाना कोतवाली में उपस्थित होकर इस आशय की प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करवाई की उसकी पुत्री पीड़ित उम्र 17 वर्ष घर में बिना बताए कहीं चली गई है। उसे आशंका है कि कोई अज्ञात आरोपी उसकी पुत्री को बहला-फुसलाकर ले गया है। पीड़िता के पिता की शिकायत पर अपराध दर्ज कर प्रकरण का अनुसंधान प्रारंभ किया गया अनुसंधान के दौरान पीड़िता को दस्तयाब किया गया। पीड़िता ने पूछताछ करने पर यह बताया कि आरोपी बनवारी उसे शादी करने का झांसा देकर पुणे एवं पीथमपुर लेकर गया था। आरोपी ने उसके जबरदस्ती कई बार गलत काम बलात्कार किया है। पीड़िता के कथनों के आधार पर प्रकरण में धाराओं का इजाफा किया गया। विवेचना के दौरान पीड़िता का मेडिकल परीक्षण कराया गया तथा आरोपी को गिरफ्तार किया गया। पुलिस थाना कोतवाली द्वारा आवश्यक अनुसंधान उपरांत आरोपी के विरुद्ध अभियोग पत्र तैयार कर माननीय अनन्य विशेष न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया। प्रकरण की विवेचना पुलिस थाना कोतवाली में पदस्थ उ.नि. प्रीति पाटिल के द्वारा की गई।

रामू के नामांकन में कांग्रेस की गुटबाजी खुलकर आई सामने

जिला कांग्रेस अध्यक्ष शहर ने दिया इस्तीफा

संजय द्विवेदी, बैतूल। लोकसभा चुनाव की प्रचार प्रक्रिया शुरू होने के पहले ही कांग्रेस में घमासान शुरू हो गया है। इसकी परिणति आज बुधवार को जिला कांग्रेस अध्यक्ष शहर सुनील गुड्डू शर्मा द्वारा अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिए जाने की पेशकश से सामने आया है। मिली जानकारी के अनुसार आज कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम के नामांकन रैली कार्यक्रम के दौरान सुनील शर्मा की उपेक्षा से व्यथित होकर उन्होंने उनके राजनीतिक गुरु कमलनाथ को जिला कांग्रेस अध्यक्ष पद से अपना इस्तीफा भेज दिया है। कांग्रेस के बैतूल-हरदा-हरसूद सीट से कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम के नामांकन की रैली में बैतूल आए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, पूर्व राज्यसभा सदस्य विवेक तन्खा एवं पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव व अन्य नेताओं के कार्यक्रम समाप्ति के बाद बैतूल से जाने के 2 घंटे पश्चात ही जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुनील गुड्डू शर्मा ने इस्तीफा दे दिया। गौरतलब है कि कमलनाथ ने प्रदेश अध्यक्ष के रहते हुए मई 2018 में सुनील शर्मा को जिला कांग्रेस अध्यक्ष बनाया था और उनके अध्यक्ष कार्यकाल में 2018 के विधानसभा चुनाव में लंबे समय बाद जिले में पांच में से चार विधानसभा सीटों पर कांग्रेस जीती थी। बताया जा रहा कि आज रामू टेकाम के नामांकन के बाद आयोजित सभा में बैतूल ग्रामीण और हरदा जिला कांग्रेस अध्यक्षों से भाषण दिलवाया, लेकिन जिला कांग्रेस अध्यक्ष (शहर) सुनील शर्मा के मंच पर होने के बावजूद उन्हें भाषण देने का मौका नहीं दिया गया। हरदा के अध्यक्ष ओम पटेल और बैतूल जिला ग्रामीण के अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने भाषण दिया। जबकि कार्यक्रम बैतूल शहर में हुआ, तो इस हिसाब से जिला कांग्रेस अध्यक्ष शहर सुनील शर्मा को अवसर दिया जाना था।

आखिरी समय पर काटा गया नाम-

सूत्रों से मिली जानकारी में पता चला है कि सुनील शर्मा का नाम आखिरी समय पर काटा गया। यह भी जानकारी मिली है कि भाषण देने की बात पर इन्हें बोला गया कि आप आभार प्रदर्शन कर दो, लेकिन सुनील शर्मा ने नाम पुकारे जाने पर भी इसके लिए मना कर दिया। सुनील शर्मा ने दैनिक सुबह सवेरे संवाददाता को बताया कि मैं पिछले 30 वर्षों से निस्वार्थ कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में पार्टी हित में कार्य कर रहा हूं, आज मेरा नाम भाषण की लिस्ट से एन आखिरी मौके पर जानबूझकर कटवाया गया। आज हरदा जिला अध्यक्ष से भाषण करवाया गया, बैतूल ग्रामीण अध्यक्ष से भी भाषण करवाया गया, परंतु बैतूल शहर में कार्यक्रम होने के बावजूद मेरा नाम काट दिया गया। मेरी लगातार उपेक्षा करना ठीक नहीं है। उधर, शीर्ष नेताओं की उपस्थिति में जिले के तीन प्रमुख पूर्व विधायकों निलय डागा, धरमूसिंह सिरसाम और ब्रह्मा भलावी की गैर मौजूदगी भी आज जन चर्चा का विषय रही।

बूथ स्तर पर स्थापना दिवस मनाने हेतु भाजपा की बैठक संपन्न

भाजपा स्थापना दिवस बूथ स्तर पर बनाकर बूथ विजय का संकल्प लेंगे

धार। भारतीय जनता पार्टी धार नगर द्वारा आगामी 6 अप्रैल को अपना स्थापना दिवस बूथ स्तर पर मनाने हेतु जिला कार्यालय पर बैठक संपन्न हुई, बैठक को संबोधित करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय ने कहा कि 6 अप्रैल को अपना गौरवशाली दिन के रूप में अपने-अपने बूथ और घर पर भाजपा का ध्वज फहराकर अपने-अपने बूथ विजय और विकसित भारत बनाने का संकल्प लेंगे, इस दिन प्रत्येक बूथ पर अतिथि वक्ता के रूप में भाजपा नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनता के नाम पत्र का वाचन करेंगे और अपने स्वर्णिम काल, विकास कार्यों और उपलब्धियों को लेकर जन मानस के बीच जाएंगे । डॉ. विजयवर्गीय ने स्थापना दिवस पर करणीय कार्यों को विस्तार से बताकर बूथ स्तर पर स्थापना दिवस मनाने का आग्रह

किया, भाजपा पूर्व नगराध्यक्ष अनिल जैन बाबा ने 5 अप्रैल को आयोजित कार्यकर्ता होली मिलन समारोह के संबंध में सभी बूथों से भाजपा कार्यकर्ताओं की भागीदारी हो इस संदर्भ में संबोधित किया । साथ ही मंडल प्रभारी भगवान खंडेलवाल ने स्थापना दिवस के साथ नववर्ष पर नागरिक अभिनंदन, 14 अप्रैल अंबेडकर जयंती इत्यादि कार्यक्रमों को मानने हेतु संबोधित किया। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि बैठक में भाजपा जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे, नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर, जिला कोषाध्यक्ष मनीष प्रधान, पूर्व नपा उपाध्यक्ष कालीचरण सोनवानिया, अजा मोर्चा जिलाध्यक्ष पूनमचंद फकीरा, जिला सह कार्यालय मंत्री विवेक गौड इत्यादि भाजपा नेता मंचासीन थे। बैठक का संचालन नगर महामंत्री राजेश डाबी और आभार मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर ने माना। इस अवसर पर मंडल पदाधिकारी, मोर्चा पदाधिकारी, शक्ति केंद्र प्रमुख और बूथ प्रभारी उपस्थित थे ।

भाजपा 6 अप्रैल को जनता के बीच में मनाएगी स्थापना दिवस

जिले के वरिष्ठ नेता अलग-अलग बूथों पर जाकर भाजपा का स्थापना दिवस मनाएंगे

धार। लोकसभा चुनाव प्रचार के साथ-साथ बीजेपी अपनी स्थापना दिवस मनाने की तैयारी में भी जुटी हुई है। भाजपा स्थापना दिवस पर हर मंडल एवं बूथ स्तर पर कई तरह के कार्यक्रम करने और जनता के बीच में स्थापना दिवस मनाने का निर्देश दिया गया है। सोमवार को भाजपा जिला कार्यालय में नगर मंडल की बैठक हुई तथा जिले के सभी मंडलों में बैठक का आयोजन किया गया जिसमे बड़ी संख्या में भाजपा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए । इस संबंध में जानकारी देते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी ने बताया कि धार जिले के सभी 37 मंडलो के 1879 बूथों पर भाजपा स्थापना का दिवस मनाया जायेगा। भाजपा के स्थापना दिवस पर सभी कार्यक्रता प्रत्येक बूथ पर 6-6 घंटा रुककर समय दे और करणीय कार्य जिसमे हर बूथ पर झंडा, हमारा वक्ता तय हो, बूथ की बैठक हो उसके बाद बूथ पर रहने वाले सभी लाभार्थी से संपर्क कर उनके घरों में झंडा लगे साथ ही हर लाभार्थी से संपर्क कर केंद्र की मोदी सरकार एवं प्रदेश सरकार की डबल इंजन सरकार की जन हितैषी योजनाओं की चर्चा कर बताना हे। और हर बूथ पर 10 प्रतिशत मतदान बड़ाकर बूथ विजय के संकल्प के साथ आपको बूथ जिताना है । पार्टी के सभी कार्यकर्ता इस दिन अपने अपने घरों पर पार्टी का झंडा लगायेंगे। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि 6 अप्रैल को भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी,सांसद छतर सिंह दरबार,विधायक नीना वर्मा, कालू सिंह ठाकुर,पूर्व मंत्री रंजना बघेल और राजवर्धन सिंह दत्तिगांव,भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर,विनोद शर्मा,रमेश धाड़ीवाल,दिलीप पटोंदिया, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, भाजपा प्रत्याशी श्रीमती सावित्री ठाकुर ,पूर्व विधायक सहित अनेक जनप्रतिनिधि अपने अपने चयनित बूथों पर जाकर भाजपा का स्थापना दिवस मनाएंगे।

उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा 5 अप्रैल को धार प्रवास पर रहेंगे

धार । प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा 5 अप्रैल को धार जिले में प्रवास पर रहेंगे तथा भाजपा के विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे।इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी,जिला प्रभारी श्याम बंसल,विधायक नीना वर्मा,कालू सिंह ठाकुर,प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल,भाजपा प्रत्याशी श्रीमती सावित्री ठाकुर सहित भाजपा वरिष्ठ नेता मौजूद रहेंगे। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा तय कार्यक्रम अनुसार 5 अप्रैल को सुबह इंदौर से प्रस्थान कर जिले के इंडोरमा क्षेत्र धाकड़ होटल में सुबह 11 बजे धार विधानसभा क्षेत्र के तीन मंडलो के अपेक्षित कार्यकताओं की बैठक को संबोधित करेंगे। दोपहर 1 बजे भाजपा जिला कार्यालय में जनजाति के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक में शामिल होंगे। तथा शाम 4 बजे प्रबुद्धजन सम्मेलन शगुन गार्डन आश्रम रोड़ धार एवं वही पर शाम 6 बजे होली मिलन समारोह व कार्यकर्ता सम्मेलन में उपस्थित होंगे। रात्रि 7 बजे लोकसभा चुनाव निमित केंद्रीय चुनाव कार्यालय का उद्घाटन करेंगे।

ट्रेनिंग हासिल करने आई महिलाओं के साथ आए छोटे बच्चों के लिए सुविधा केंद्र की व्यवस्था की गई

धार। गंधवानी विधानसभा के लिए नियुक्त सहायक रिटर्निंग ऑफ़िसर अंकिता प्रजापति द्वारा लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मतदान कर्मियों के सामान्य प्रशिक्षण हासिल करने आई महिलाओं के छोटे बच्चों के लिए सुविधा केंद्र की व्यवस्था की गई है। सीएम राइज स्कूल जहां की प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी है वहाँ के एक कमरे को छोटे बच्चों के लिए सुविधा केंद्र के रूप में तब्दील किया गया है।जिसमें छोटे बच्चों के खेलने हेतु खिलौने रखवाए गए हैं साथ ही उनके लिए पेयजल और बैठने की व्यवस्था की गई है।इनको संभालने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की भी तैनाती की गई है।इस क़वायद दे ना केवल महिला मतदान कर्मी निश्चिंत होकर अपनी ट्रेनिंग पूरी कर पा रही हैं वहीं बच्चे भी खुश हैं। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर और ज़िला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा ने कल गंधवानी में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मतदान कर्मियों के सामान्य प्रशिक्षण के निरीक्षण में महिला मतदान कर्मियों के साथ आए छोटे बच्चों की व्यवस्था हेतु निर्देशित किया था।तदनुसार महिला एवं बाल विकास एवं संबंधित सुपरवाइजर को निर्देशित कर सुविधा केंद्र बनाया गया है।

मतदान केंद्रों से पल-पल की जानकारी जुटाएगी कम्युनिकेशन टीम

- **कर्मियों के साथ मतदान केंद्र की व्यवस्थाओं में जुटे लोगों के भी लिए जा रहे हैं मोबाइल नंबर**

धार। कलेक्टर और ज़िला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा के निर्देशानुसार लोकसभा चुनाव के मद्देनजर व्यापक कम्युनिकेशन प्लान तैयार किया जा रहा है। इसमें जिला निर्वाचन पदाधिकारी से लेकर चुनाव कार्य से जुड़े नीचे के स्तर तक के अधिकारियों का नंबर तो होगा ही मतदान कर्मियों के साथ मतदान केंद्र की व्यवस्थाओं में जुटे लोगों के भी मोबाइल नंबर लिए जा रहे हैं। कम्युनिकेशन टीम मतदान केंद्रों से पल-पल की जानकारी जुटाएगी। आज कलेक्टर कार्यालय के सभागार में कम्युनिकेशन दल के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कम्युनिकेशन दल प्रभारी अपर्णा पांडेय के अनुसार जिलास्तर पर कम्युनिकेशन प्लान तैयार करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। इसका उद्देश्य मतदान के दौरान किसी भी तरह की सूचना की पुष्टि के लिए तत्काल संबंधित लोगों से जानकारी प्राप्त करना है। कम्युनिकेशन प्लान में डीएम, एसपी, एसडीएम,सेक्टर ऑफिसर, जोनल ऑफिसर, पीठासीन पदाधिकारी और निर्वाचन से जुड़े शासकीय सेवकों के मोबाइल नंबर और नाम की लिस्ट होगी।मतदान के दौरान अगर कहीं से किसी तरह की गड़बड़ी की सूचना मिलती है तो मुख्यालय में बैठे अधिकारी तत्काल संबंधित पदाधिकारियों के साथ संपर्क करेंगे।

पाठ्य पुस्तकें क्रय करने नहीं किया जायेगा बाध्य

नरसिंहपुर। मप्र निजी विद्यालय (फीस तथा अन्य संबंधित विषयों का विनियमन) अधिनियम 2017 के प्रावधानों तथा मप्र निजी विद्यालय (फीस तथा अन्य संबंधित विषयों का विनियमन) के नियम 2020 के नियम 6 एवं 9 के तहत निजी विद्यालय प्रबंधन द्वारा छात्र या अभिभावक को पुस्तकें, यूनिफार्म, टाई, जूते, कॉपी आदि केवल चयनित विक्रेताओं से क्रय करने के लिए औपचारिक अथवा अनौपचारिक किसी भी रूप में बाध्य नहीं किया जायेगा। छात्र या अभिभावक इन सामग्रियों को खुले बाजार से ऋय करने के लिए स्वतंत्र होंगे। इस संबंध में रा'य शासन के स्कूल शिक्षा विभाग ने समस्त अशासकीय विद्यालयों को आदेश जारी किया है। उल्लेखनीय है कि विभिन्न माध्यमों से शासन के संज्ञान में आया है कि कतिपय स्कूल प्रबंधन एंव प्राचार्य द्वारा एनसीईआरटी/ एससीईआरटी से संबंधित पुस्तकों के साथ अन्य प्रकाशकों की अधिक मूल्य की पुस्तकें एवं अन्य सामग्री ऋय करने के लिए पालकों पर अनुचित दबाव बनाया जाता है। विषयवार एनसीईआरटी/ सीबीएसई/ एससीईआरटी मुद्रित व निर्धारित पाठ्यक्रम की पाठ्य पुस्ताकें के स्थान पर अन्य प्रकाशकों की पाठ्य पुस्तकों को चयन कर अभिभावक को दुकान विशेष/ निर्धारित स्थान से पाठ्य पुस्तकों व अन्य शैक्षणिक सामग्री अथवा यूनिफार्म करने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से बाध्य किया जा रहा है।

न कांग्रेसियों का काफिला कमजोर नजर आया और ना उनका मनोबल गिरा दिखाई दिया..

भाजपा का दारोमदार उनकी आज होने वाली रैली पर..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

अठाहरवीं लोकसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस और भाजपाई दोनों ही प्रमुख दल के उम्मीदवार एक तरीके से अब एक-दूसरे के आमने-सामने हैं, हालांकि एक निर्दलीय उम्मीदवार ने भी होशंगाबाद नरसिंहपुर संसदीय क्षेत्र में नामांकन पत्र दाखिल कर चुनावी जोर आजमाने की कोशिश की है। आज कांग्रेस उम्मीदवार संजय शर्मा ने कांग्रेसी नेताओं के साथ रैली की शक्ल में कलेक्ट्रेट पहुंचकर नामांकन पत्र दाखिल किया और अपना चुनाव प्रचार आरंभ कर दिया, नामांकन पत्र दाखिल करते समय न उनका काफिला कमजोर नजर आया और ना किसी कांग्रेसी का मनोबल गिरा दिखाई दिया। कांग्रेस उम्मीदवार संजय शर्मा ने पहले नर्मदा घाट पहुंचकर मां नर्मदा की पूजा अर्चना की इस मौके पर स्थानीय कार्यकर्ता नर्मदा घाट पर उपस्थित थे जो बजरिया स्कूल के सामने बनाएं सभा स्थल पहुंचते पहुंचते कारवां में बदल गये। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी ने अपनी शैली में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा पहले किसानों के लिए लड़ने वाले और अब भाजपा की टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार का मैंने नाम पूछा तो उनका नाम कोई नहीं बता पाया जबकि संजय शर्मा का नाम हर मतदाता क्षेत्र में तो जानता है। श्री

पटवारी ने कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था। कांग्रेसियों का पैसा स्विस बैंक में जमा है सत्ता में आते ही यह पैसा वापस लाएंगे। यह आप ही बताइए जिनके खाते में 15 लाख रुपए आए हैं वह अपना हाथ उठा दें, उन्होंने कहा कि देश में बेरोजगारी का मुद्दा विकराल रूप ले रहा है। फिर श्री पटवारी ने एमएसपी मूल्य पर गेहूं खरीदी को लेकर कहा कि अभी किसानों का गेहूं 2100 सौ रुपए क्विंटल खरीदि जा रहा ऐसे में अगर किसी किसान के पास 20 एकड़ जमीन है तो उसे15,000 का घाटा हो रहा है। यह बचा पैसा भाजपा लाडली बहना योजना के रूप दे रही है। पटवारी ने यहां कहा अगर हमारी सरकार आती है तो लाडली बहना योजना का पैसा भी बढा कर दिया जाएगा श्री पटवारी ने कहा कि भाजपा कहती कि इस बार 400 पार तो यह उनका भ्रम है। क्योंकि कुछ राज्यों में भाजपा की टिकट पर उम्मीदवारों ने लोकसभा का चुनाव लड़ने से ही मना कर दिया है। श्री पटवारी ने कांग्रेस पार्टी के जो सदस्य भाजपा में जा रहा है उन्हें लेकर कहा कि वह किसी न किसी डर से भाजपा में जा रहे हैं जिन्हें मेरे प्रदेश अध्यक्ष रहते कम-से-कम उन कांग्रेसियों को वापस कांग्रेस में नहीं लिया जाएगा। श्री पटवारी ने आगे कहा भारतीय जनता पार्टी ने पिछली बार हमारे विधायकों की खरीद फरोस्त कर मध्य प्रदेश में सरकार बनाई थी। अठाहरवीं लोकसभा चुनाव में अब पूरे कांग्रेसी एक हैं। इस विशाल आम सभा को देखकर उम्मीदवार की लोकप्रियता अंदाज लगाया जा सकता है। नामांकन सभा में एआईसीसी महासचिव भवर जितेंद्र सिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव, राज्यसभा सांसद विवेक तनखा, पूर्व केंद्रीय मंत्री रामेश्वर नीखरा, पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय दुबे काकू भाई, संजय कपूर, गुड्डन पांडे, गिरजा शंकर शर्मा कपिल फौजदार और कांग्रेस के सभी पदाधिकारी और खासी बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे। अच्छी खासी भीड़ के साथ सम्पन्न हुई कांग्रेस उम्मीदवार की सभा में इस दौरान ब्राह्मण समाज का अंडर करंट और भाजपा के अंदर खदक रही गुटबाजी का नतीजें पर प्रवाह का जिक्र सुनाई दिया। कहा जा रहा था कि भाजपा ने गांव से लेकर दिल्ली तक दूसरे दलों से आने वालों के लिए दरवाजे खोल रखे है और तेजी से लोग आ भी रहे हैं।और लाया भी जा रहा है पर नर्मदापुरम जिले में इसे लेकर अलग ही एक कहानी है। जो यहां भाजपा का मूल केडर है, वर्षों से भाजपा के लिए समर्पित रहा उनमें अब एक नहीं अनेक कार्यकर्ताओ की एक बड़ी सूची है जिनकी या तो विधायको से नही बन रही या जिलाध्यक्ष से, संगठन से उन्हें दूर किया जा रहा है, कमोवेश यह स्थिति पूरे जिले की है जो दर्शन सिंह चौधरी को किसी भी हालात में पिछले चुनावी आंकड़े तक पहुंचने में दिक्कत पहुंचायेगा।

ब्रह्मलीन गुरूदेव मुद्गल महराज की अस्थि विसर्जन सांगाखेड़ा में

सुबह सवेरे सोहागपुर। ब्रह्मलीन गुरूदेव पंडित मनमोहन मुद्गल महाराज जी की अस्थि विसर्जन नर्मदा घाट सांगाखेड़ा में किया गया। इस अवसर पर गणमान्य नागरिकों एवं अन्य नगरों से विसर्जन करने पहुंचे उनके शिष्य भी थे। परिवारिक सदस्यों ने बताया कि श्री शंभू दरबार से गुरूवार को गुरूजी की अस्थियों को लेकर प्रयागराज प्रस्थान किया जाएगा।

नवपीढ़ी वरिष्ठों के अनुभव व मार्गदर्शन का लाभ लें

नरसिंहपुर। मां सरस्वती व हनुमान जी के पूजन अर्चन वंदन से धनारे कालोनी नरसिंहपुर में वरिष्ठ जन परिषद की बैठक का शुभारंभ हुआ।परिषद के 83 वर्षीय वरिष्ठ सदस्य मदन कुमार श्रीवास्तव का पुष्पमाला पहनाकर शाल श्रीफल से सम्मान करते हुये मुख्य अतिथि डा.अनंत दुबे ने कहा कि यह परिषद वरिष्ठ जनों की वो पाठशाला है जिससे अनुभव और मार्गदर्शन के रत्न प्राप्त होते हैं।नई पीढ़ी को इनका लाभ लेना चाहिए।आओ हम सब मिलकर पर्यावरण जलसंरक्षण सहित सभी चुनौतियों का सामना करें।अतिथि देवेन्द्र दुबे ने कहा कि बुजुर्गो को एक मंच पर लाकर उन्हें खुश रखने और उमंग उत्साह सहित भरपूर ऊर्जा देने के लिये परिषद द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है।हम मस्त आनंददायक भरपूर जिंदगी जियें।उक्त अवसर पर एप्रिल डे मनाते हुये सदस्यों ने हंसी मजाक की फुहार बिखेरी।

पीठासीन अधिकारी का दायित्व निभा रहे शासकीय शिक्षक की निर्वाचन प्रशिक्षण दौरान हृदयघात से मृत्यु

सुबह सवेरे सोहागपुर

सेंट पैट्रिक स्कूल में लोकसभा निर्वाचन 2024 प्रशिक्षण के दौरान आज शासकीय शिक्षक विनीत मालवीय की हृदयघात से मृत्यु हो गई। उल्लेखनीय है कि 51 वर्षीय विनीत मालवीय पुत्र शंकरलाल मालवीय सोहागपुर ब्लॉक के ग्राम बोरनामिट्ठा में शासकीय माध्यमिक स्कूल प्रधान पाठक थे। आप पीठासीन अधिकारी के रूप में लोकसभा निर्वाचन के लिए बुधवार सुबह निर्धारित समय पर प्रशिक्षण लेने सेंट पैट्रिक्स स्कूल सोहागपुर पहुंचे थे। बताया जाता है कि प्रशिक्षण दौरान बुधवार दोपहर लगभग एक बजे मालवीय को सीने में दर्द हुआ तो साथी सोहागपुर अस्पताल लेकर पहुंचे। हृदयघात से शिक्षक विनीत मालवीय की मृत्यु हो गई है। स्थानीय अस्पताल में पोस्टमार्टम कर शव शाम को परिजनों को सौंपा गया। बुधवार शाम को ही जमनी मुक्तिधाम पर दिवंगत शिक्षक विनीत मालवीय का अंतिम संस्कार किया गया। क्षेत्रवासियों ने दिवंगत शिक्षक के परिजनों के प्रति शोक व्यक्त किया है। प्रशासन ने भी दिवंगत शिक्षक को श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। प्रशासन ने हर संभव सहायता का आश्वासन परिजनों को दिया है।

जिले में लगातार हो रहे मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

रंगोली, मेहंदी, दीवार लेखन, मानव श्रृंखला आदि के माध्यम से मतदाता हो रहे जागरूक

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन-2024 के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार जिले में दो चरणों में मतदान होना है, जिसमें संसदीय निर्वाचन क्षेत्र मण्डला के अंतर्गत आने वाली जिले की एक विधानसभा क्षेत्र 118- गोटेगांव में 19 अप्रैल को और नर्मदापुरम संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली जिले की तीन विधानसभा क्षेत्र 119- नरसिंहपुर, 120- तेंदूखेड़ा व 121- गाडरवारा में 26 अप्रैल को मतदान होना है। इसके तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शीतला पटले एवं सीईओ जिला पंचायत व नोडल अधिकारी स्वीप श्री दलीप कुमार के मार्गदर्शन में जिले में मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूकता लाने विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। मतदाता जागरूकता अभियान के तहत मतदाताओं को मतदान के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से रंगोली, मेहंदी, दीवार लेखन, मानव श्रृंखला, रैली, विभिन्न स्तर की प्रतियोगितायें जैसी विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। इस दौरान महिलायें, छात्र-छात्रायें और अन्य नागरिकों इन गतिविधियों में शामिल हो रहे हैं। जिले के शासकीय स्कूलों में विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा मानव श्रृंखला, रंगोली, स्लोगन, पोस्टर, मेहंदी आदि प्रतियोगितायें और विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर मतदाताओं को मतदान करने का संदेश दिया। इसी क्रम में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भैंसापाला, बूथ ऋमांक 174 सालीचौका, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरहेटा, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इमलिया, शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल बारहाबड़ा, शासकीय कन्या नवीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गाडरवारा, शासकीय हाई स्कूल कमोद, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोरखपुर, शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल और अन्य शासकीय स्कूलों में भी विद्यार्थियों व शिक्षकों ने मानव श्रृंखला, रंगोली, मेहंदी, रैली, पोस्टर आदि के माध्यम से मतदाताओं को मतदान करने के लिए प्रेरित किया।

महिलाओं ने मतदाताओं को दिलाई मतदान करने की शपथ

इसी क्रम में जिले की सभी विधानसभाओं में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत महिलाओं द्वारा नैतिक मतदान करने की शपथ ली गई और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। विधानसभा क्षेत्र गोटेगांव के देव मुरलीधर वार्ड में महिलाओं द्वारा स्लोगन, गाडरवारा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली चीचली जनपद पंचायत के ग्राम रायपुर में महिलाओं ने मतदाता जागरूकता रैली, ग्राम रायपुर में महिला और पुरूष मतदाताओं को मतदान करने की शपथ दिलाई और महिलाओं को गांव में ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं को मतदान करने के लिए प्रेरित किया।इसी तरह जिले के ग्राम रायपुर में महिलाओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकालकर घर- घर जाकर मतदाताओं को मतदान करने के लिए प्रेरित किया। ग्राम बोहानी में महिलाओं ने मतदान करने और अन्य मतदाताओं को प्रेरित करने की शपथ ली। सांईखेड़ा विकासखंड के ग्राम भटेरा में स्वसहायता समूह की महिलाओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली।

जिले में सी-विजिल एप के माध्यम से प्राप्त 61 शिकायतों का किया गया त्वरित निराकरण

निर्वाचन संबंधी शिकायतों के त्वरित निराकरण में मददगार हो रहा है सी-विजिल एप

धार। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में निर्वाचन संबंधी शिकायतों का त्वरित और समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है। निर्वाचन संबंधी शिकायतों के त्वरित निराकरण में सी-विजिल एप बेहद मददगार हो रहा है। जिले में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर लागू आचार संहिता के बाद से सी-विजिल एप के माध्यम से अब तक प्राप्त 61 शिकायतों का त्वरित और निर्धारित समय-सीमा में निराकरण किया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा ने निर्वाचन संबंधी शिकायते प्राप्त करने तथा उनके निराकरण के लिए जिला पंचायत कार्यालय में कंट्रोल रूम भी स्थापित किया है। यह कंट्रोल रूम 24ङ्ग7 कार्य कर रहा है। प्रदेश में 16 मार्च से आदर्श चुनाव आचरण संहिता लागू होते ही सी-विजिल एप पर शिकायतें प्राप्त होने लगी हैं। आज तक जिले में उक्त एप के माध्यम से कुल 61 शिकायतें प्राप्त हो चुकी हैं। इन सभी शिकायतों का त्वरित निराकरण कर दिया गया है। नागरिकों से अनुरोध किया गया है कि यदि वे निर्वाचन में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से जुड़ी किसी भी प्रकार की सीधी शिकायत करना चाहते हैं, तो वे सी-विजिल एप के माध्यम से कर सकते हैं। इसके लिए संबंधित नागरिक को गूगल प्ले स्टोर पर जाकर सी-विजिल एप डाउनलोड करना होगा। इसके लिए नागरिक को ऐसी किसी भी घटना की जानकारी होने पर फोटो या वीडियो सी-विजिल एप पर अपलोड करना होगा। शिकायत मिलने पर अगले 100 मिनट के भीतर कार्यवाही की जाएगी। उल्लेखनीय है कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा आदर्श चुनाव आचरण संहिता के उल्लंघन वाली शिकायतों के निवारण के लिए सी-विजिल एप तैयार किया गया है। इस एप के जरिए कोई भी नागरिक राजनैतिक दलों या प्रत्याशियों द्वारा मतदाताओं को लुभाने के लिए किसी भी तरह से धन, सामग्री, कपड़े, जेवरात आदि का वितरण करने, मतदाताओं को उनके पक्ष में मतदान करने के लिए धमकाने, मतदाताओं को स्वयं के वाहन से परिवहन करने, किसी भवन स्वामी की अनुमति के बिना उसके भवन या दीवारों या परिसर पर प्रचार सामग्री लगाने या दीवार पर विज्ञापन लिखवाने सहित अन्य प्रकार की शिकायतें कर सकता है।

राइट क्लिक

धृतराष्ट्री परिवारवाद और सुदामाई परिवारवाद में एक नैतिक जंग...

अजय बोकिल

महाभारत काल में पुत्र मोह में अंधे हुए राजा धृतराष्ट्र और मित्र प्रेम लाचार हुए सुदामा कभी आपस में मिले थे, इसका कोई पौराणिक जिक्र भले न हो, लेकिन कलियुग में यह भेंट संभव हुई है। न केवल संभव हुई बल्कि इस डायलॉग के साथ हुई कि सुदामा तुम तय कर लो कि तुम्हें सुदामा ही रहना है या फिर धृतराष्ट्र बनना है। इस संवाद में चेतावनी भी है और धमकी भी। चेतावनी इस बात की कि गरीब सुदामा को कभी सम्राट धृतराष्ट्र बनने का ख्वाब नहीं देखना चाहिए और धमकी इस बात की कि अगर तुमने सुदामा की औकात से बाहर निकलने की कोशिश की तो राजनीतिक आख्यानों में भले तुम्हे अमरत्व हासिल हो जाए, लेकिन सियासी जिंदगी में तुम्हारी भ्रूणहत्या भी हो सकती है।

द्वापर युग का यह समूचा संदर्भ (पौराणिक स्रोतों के अनुसार) वर्तमान कलियुग के 5126 वें वर्ष में लोकतांत्रिक भारत में हो रहे 18 वीं लोकसभा चुनाव के पहले चरण में होने वाले छिंदवाड़ा लोकसभा सीट पर चुनाव जीतने के उद्देश्य से दो नेताओं के बीच हुए संवाद का है। संवाद कहने के बजाए उसे एकालाप कहना ज्यादा उचित होगा। मीडिया में आई रिपोर्टों को सही मानें तो जो नैतिक डायलॉग बोला गया वो कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कमलनाथ का था, जो दूसरी बार अपने पुत्र को छिंदवाड़ा से लोकसभा में भेजने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं तो दूसरी तरफ चार दशकों से कमलनाथ के सेवक रहे दीपक सक्सेना हैं, जो आर्थिक रूप से भले ही गब्बर बन गए हों, लेकिन राजनीतिक रूप से सुदामा ही रहे। सुदामा होना केवल आर्थिक असमानता का प्रतिफल ही नहीं है बल्कि ऐसा भाग्यफल भी है, जिसमें लक्ष्मी और सत्ता सुंदरी दोनों गठबंधन कर याचक को ठेंगा दिखाती रहतीं हैं। दीपक सक्सेना नामक पात्र की सियासी ट्रेजिडी यही है कि तमाम वफादारियों के बाद भी उनके हिस्से में दरी उठाने का काम ही आया है। उनका कमलनाथ भक्त होना ही मानो इस राजनीतिक अभिशाप का कारण है। लिहाजा इस चुनाव में उन्होंने कमलनाथ से नाल तोड़कर कमलदल से जोड़ने की जुर्रत की तो बदले में उलाहना मिला कि धृतराष्ट्र बनने की कोशिश भी न करना। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि एक हस्तिनापुर में एक ही धृतराष्ट्र रह सकता है। या यूं कहें कि पुत्र मोह पालने का विशेषाधिकार भी उन्हीं को है, जो सत्ता सम्पन्न हैं। सत्ता में जमे हुए हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी जमे रहना चाहते हैं। यह जनता का पुनीत कर्तव्य है कि वह एक पीढ़ी के इन्वेस्टमेंट पर कई नस्लों को राजनीतिक लाभांश देती रहे। राजनेताओं के लिए अपने पुत्र/पुत्री/ पत्नी आदि के सियासी कॅरियर के आगे हर शै बेमानी है। कोई सुदामा अगर उसे चुनौती देने की धृष्टता करेगा भी तो वह आंखों के साथ हाथ- पैरों से भी हाथ धो बैठेगा।

यूं तो धृतराष्ट्र और सुदामा की कहानी में कहीं कोई सीधा सम्बंध नहीं है। ये सारा ताना बाना उस कूटनीतिज्ञ और भगवान कृष्ण के माध्यम से है, जो धृतराष्ट्र को पुत्र मोह से बचने की समझाइश देते हैं और नाकाम रहते हैं दूसरी तरफ सुदामा को दोस्ती का वास्ता देकर भौतिक आकांक्षाओं को तृप्त करने की कोशिश करते हैं। पुराणों में सुदामा के पिता का तो उल्लेख है कि वो राक्षसराज शंखचूड़ के पुत्र थे। शंखचूड़ को ब्रह्मा से अमरत्व का वरदान था। लेकिन सुदामा के पुत्रों का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। चूंकि सुदामा राजनेता नहीं थे, इसलिए उनके पुत्रो के राजनीतिक और आर्थिक भविष्य की चिंता करने की गरज पुराणकारों को भी महसूस नहीं हुई होगी। ब्राह्मण सुदामा मूलतः उस समाजवादी सोच की उपज थे, जिसमें अमीरी के बजाए गरीबी के समान वितरण पर ज्यादा जोर रहा है। इसका सीधा अर्थ है कि दीपक सक्सेना के भाग्य में सुदामा होना ही बदा है। द्वापर युग में योगीराज कृष्ण ने अपने इस बाल मित्र को दोस्ती की खातिर जो कुछ माल-ताल दे दिया, उसे सुदामा को अपना सौभाग्य समझ कर संतुष्ट रहना चाहिए। इससे ज्यादा की उम्मीद पालना भी अपने आप में राजनीतिक अपराध है। आखिर नौकर, नौकर है और मालिक, मालिक। यह सही है कि दीपक सक्सेना कमलनाथ की कृपा से ही चार बार विधायक, एक बार मंत्री और एक बार प्रोटेम स्पीकर बने। लेकिन जब उनके राजनीतिक अरमान उरूज पर थे, तभी उनका पत्ता काट दिया गया। स्वामी की खातिर पद और पावर गंवाने की ऐवज में उन्हें कुछ नहीं मिला। जब छिंदवाड़ा से लोकसभा के लिए किसी को भेजने की बात आई तो कमलनाथ ने अपने पुत्र नकुलनाथ को चुना। गौरतलब है कि राजनीति में सेवा के बदले मेवा मिलने का गणित इस बात पर निर्भर करता है कि आपका स्वामी कौन है, स्वयं धृतराष्ट्र है अथवा कृष्ण।

बहरहाल कांग्रेस में अपनी उपेक्षा और स्वामीभक्ति के बदले मिली दुत्कार से दुखी दीपक सक्सेना ने भाजपा में जाने की हिमाकत की, जो उन कमलनाथ को रास नहीं आई, बावजूद इसके कि खुद उनके पुत्र समेत पाला बदलने की सुर्खियां मीडिया में चली थीं। तब भी लक्ष्य एक ही था पुत्र की कुर्सी बचाना। अब भी मकसद वही है। फर्क इतना है कि पुत्र प्रेम का यही पासवर्ड दीपक सक्सेना ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की लिंक ओपन करने के लिए डालना चाहा तो वो कमलनाथ का कोपभाजन बन गए। और तो और कमलनाथ की पुत्रवधु प्रिया नाथ ने भी दीपक पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कमलनाथजी ने जिनकी मदद की, वही अग्नि परीक्षा के वक्त उन्हें छोड़कर जा रहे हैं। उधर लगातार मिल रहे दास ट्रीटमेंट से आहत दीपक ने पहले तो अपने बेटे अजय को भाजपा में भेजा और खुद भी भगवा धारण करने की तैयारी में थे। तभी उन्हें अल्टीमेटम दिया गया कि वो धृतराष्ट्र और सुदामा में से कोई एक ऑप्शन को आप्ट कर लें।

यहां दीपक सक्सेना की 'गलती' यही है कि उन्होंने धृतराष्ट्री परिवारवाद के बदले सुदामाई परिवारवाद को खड़ा करने की कोशिश की। चरण वंदन के बदले माथे पर तिलक चंदन मांगा। परिवारवादी राजनीतिक संस्कृति में यही महापाप है। वरना धृतराष्ट्र खुद अपनी निष्प्राण आंखों के साथ पाला बदल लें तो यह राजनीतिक पैंतरा होता है और सेवक अपनी जीवित आंखों के साथ दूसरे का दामन थाम ले तो स्वामीद्रोह कहलाता है। है न गजब थ्योरी! वैसे भी धृतराष्ट्रवादी चिंतन में सत्ता की रेवड़ियां अपनो के अकाउंट में ही ट्रासंफर होती हैं। लोकतंत्र में इसके औचित्य को सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जिस ढंग से तार्किक जामा पहनाया, वह अनूठा है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा वाले (हालांकि परिवारवाद वहां भी है) हम पर परिवारवादी होने का आरोप लगाते हैं, इसीलिए मैंने इस बार अपने परिवार के लोगो को ही ज्यादा से ज्यादा टिकट दिए हैं।

फिलहाल इस धृतराष्ट्रवादी चुनावी एपीसोड में कमलनाथ ने इमोशनल कार्ड का ब्रह्मास्त्र चल दिया है। जिसका एक निशाना खुद दीपक सक्सेना भी हैं। जानकारों का कहना है कि वहां भाजपा की गंगा में कितने ही आयातित नेताओं का शुद्धिकरण हो जाए, लेकिन कमलनाथ का भावनात्मक दांव बीजेपी की तमाम कोशिशों पर भारी पड़ सकता है। भाजपा अपने मिशन- 29 के तहत छिंदवाड़ा में कमलनाथ की नाल हर कीमत पर काटना चाहती है, लेकिन साम-दाम-दंड-भेद के बाद भी छिंदवाड़ा में इस बार चुनाव में 'कमल' नहीं खिल पाया तो मुश्किल कमलनाथ के बजाए कमलदल के कर्णधारों की बढ़ेगी।

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

भोपाल में प्राईवेट स्कूलों की अब मोनोपॉली नहीं चलेगी: कलेक्टर

हर साल यूनिफॉर्म-बुक्स नहीं बदल सकेंगे; किताबें खरीदने शहर की दुकानों पर लगी लाइन, 2 दुकानों पर कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। प्राइवेट स्कूल अब हर साल यूनिफॉर्म और बुक्स नहीं बदल सकेंगे। जिस शिक्षण सत्र में वे यूनिफॉर्म या बुक्स बदलेंगे, उसकी जानकारी पेरेंट्स को एक साल पहले देना पड़ेगी। वहीं, बुक्स और यूनिफॉर्म सभी दुकानों पर मिलेगी।

भोपाल में बुधवार को प्रशासन ने 2 बुक स्टोर पर छापामार कार्रवाई की है। कलेक्टर के निर्देश पर एसडीएम आईके खरे की टीम ने एमपी नगर के बुक्स एंड बुक्स और स्नेह बुक सेंटर पर पहुंची। दोनों दुकानों पर किताबें और ड्रेस खरीदने अभिभावकों की भीड़ लगी थी। यहां से प्रशासन प्राइवेट स्कूलों के मोनो लगी ड्रेस मिली है। इसके बाद टीम ने पंचनामा बनाया है।

भोपाल कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने बताया कि आदेश से प्राइवेट स्कूलों की मोनोपाली में ब्रेक लगेगा। कोई स्कूल संचालक पेरेंट्स पर यूनिफॉर्म और बुक्स के लिए कोई दबाव नहीं डाल सकेंगे। वर्ना, उन पर एफआईआर दर्ज की जाएगी। इसके लिए मार्च में धारा-144 के तहत आदेश जारी कर चुके हैं। एसडीएम-तहसीलदार स्तर पर टीमें भी बनाई गई हैं, जो शिकायत आने पर कड़ी कार्रवाई करेगी। अभी ज्यादातर पेरेंट्स बुक्स और यूनिफॉर्म खरीद चुके हैं, लेकिन अगले सत्रों के लिए आदेश प्रभावी ढंग से लागू हो जाएगा।

कोलार रोड स्थित गुरुकुल स्टेशनरी शॉप पर तीसरी कक्षा के बच्चे की किताबें 5355 रुपए की आई। जबकि ये किताबें दूसरी दुकानों पर नहीं मिली।

सोमवार रात 10 बजे टोकन दिया, मंगलवार शाम को किताबें- सेंट जोसेफ को-एड स्कूल कोलार रोड में पढ़ने वाले कक्षा तीसरी के एक छात्र के परिजन बुक्स लेने कोलार रोड स्थित गुरुकुल स्टेशनरी शॉप पर पहुंचे। यहां दुकान की शटर आधी खुली हुई थी।

दुकान के अंदर ही टोकन के लिए स्टूडेंट्स के परिजनों की लाइन लगी थी। तब लाइन में करीब 20 लोग थे। एक घंटे बाद बुक स्टोर के सेल्समैन ने एक टोकन दिया, जिसका सी-008 नंबर था। साथ की बुक्स की डिलीवरी मंगलवार दोपहर बाद देने का वादा किया। मंगलवार दोपहर बाद शाम करीब 4.30 बजे बुक स्टॉल पर पहुंचे स्टूडेंट के परिजन को बुक्स के सेट की डिलीवरी दी गई।

एमपी नगर और 11 नंबर मार्केट स्थित बुक स्टॉल पर नहीं मिली बुक्स- सेंट जोसेफ को-एड स्कूल की कक्षा तीसरी की किताबों के लिए कोलार स्थित बुक स्टॉल पर लंबी लाइन होने के चलते छात्र के परिजनों ने एमपी नगर जोन-2 स्थित बुक्स एंड बुक्स और 11 नंबर मार्केट स्थित गुरुकुल बुक स्टॉल पर बुक्स खरीदने पहुंचे। लेकिन, दोनों ही बुक स्टॉल के सेल्समैन ने कोलार स्थित सेंट जोसेफ को-एड स्कूल की बुक्स स्टॉल पर नहीं होने की जानकारी दी। साथ ही बुक्स के लिए कोलार रोड स्थित गुरुकुल बुक स्टॉल पर जाने की सलाह दी।

नए आदेश में यह होगा

- कोई भी प्राइवेट स्कूल हर साल सिलेबस नहीं बदल सकता।
- जब भी बदलेगा, तब कलेक्टर और डीईओ से परमिशन लेना जरूरी होगा।
- जिन प्रकाशक की पुस्तक या ड्रेस है, उसे सभी के लिए पब्लिश कर देंगे। कोई भी दुकानदार उसे लेकर बेच सकेंगे।
- प्रकाशक को भी सभी पुस्तक विक्रेताओं को पुस्तकें देना पड़ेगी।
- यूनिफॉर्म भी सभी दुकानों से मिलेगी।

अभी यह है स्थिति

सभी प्रकाशक की पुस्तकें एक ही दुकानदार के पास रहती है। ऐसे में पेरेंट्स की मजबूरी हो जाती है कि वह एक ही दुकान से बुक्स खरीदें। इसकी मनमानी कीमत भी चुकाना पड़ती है।

मार्च में धारा-144 के तहत आदेश जारी हो चुके

इससे पहले कलेक्टर सिंह ने 12 मार्च को धारा 144 के तहत आदेश भी जारी किए थे। इसमें भी मोनोपॉली को लेकर आदेश दिए गए थे। इसके लिए एसडीएम के नेतृत्व में टीमें भी बनाई गई हैं।

भोपाल में तीन दिवसीय अनंत महोत्सव

5 से 7 अप्रैल तक आयोजित महोत्सव में विभिन्न विषयों पर होगी कार्यशाला

भोपाल (नप्र)। श्यामला हिल्स स्थित गांधी भवन भोपाल में अनंत महोत्सव का आयोजन 5 से 7 अप्रैल तक किया जाएगा। अनंत महोत्सव में अलग-अलग विषयों पर कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी। पहले दिन ओपन माइक, दूसरे दिन तान्या और गौरव द्वारा गीतों की प्रस्तुति, तीसरे दिन तत्संग बैंड द्वारा कबीर और सूफी संगीत का आयोजन होगा।

ऑर्गेनिक फ़ूड फेस्टिवल रहेगा मुख्य आकर्षण- इस साल अनंत महोत्सव में ऑर्गेनिक फ़ूड फेस्टिवल रहेगा मुख्य आकर्षण, जिसमें 10 से ज्यादा फ़ूड स्टॉल्स रहेंगे। मेनू में मिलेट्स के व्यंजन जैसे ज्वार, बाजरे की रोटी, ज्वार की खिचड़ी, बाजरे की खीर, रागी दोसा, मल्टीग्रेन इडली, रागी पैन केक होंगे। इसके अलावा अंबाडी का जूस, गन्ने का रस, योगर्ट, मफिंस ,केक्स ,कटलेट कई तरह की चाट, डोसे, छोले भटूरे, वेज बिरयानी, सैंडविच और कई सारे व्यंजन मिलेंगे।

अनंत मंडी भोपाल शहर में जैविक उत्पादों और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए हर रविवार गांधी भवन में मंडी का आयोजन करता है, जहां जैविक खेती करने वाले किसान सीधे तौर पर फल-सब्जियां-अनाज लाकर बेचते हैं। साथ ही जैविक उत्पादों और हस्तशिल्प के स्टॉल लगाए जाते हैं। अनंत मंडी सफलतापूर्वक 5 वर्ष पूरे कर रहा है, इस अवसर पर अनंत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। अनंत महोत्सव में अलग-अलग विषयों पर कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी। तीनों दिन पॉटरी वर्कशॉप जिसका समय शाम 4:30 से 7:00 तक रहेगा। 5 अप्रैल, पहले दिन, गौरव नेमा द्वारा म्यूजिकल वर्कशॉप रहेगी। 6 अप्रैल, दूसरे दिन, आशिमा विश्नोई द्वारा महिलाओं के लिए थिएटर कार्यशाला, एकलव्य संस्था द्वारा बच्चों के लिए 'चिल्ड्रन कॉर्नर' और आप जो कहते हैं, आप वह हैं विषय पर चर्चा रहेगी।

कस्टम के नाम पर 71 लाख ठगने वाला गिरफ्तार

- **सोशल मीडिया पर बनी दोस्त को तोहफा देने के नाम पर की थी ठगी**

भोपाल (नप्र)। भोपाल साइबर क्राइम ब्रांच ने 3 अप्रैल बुधवार को 71 लाख रुपए के फ्रॉड करने वाले बदमाश मोहम्मद इरशाद (48) को बरेली उत्तर प्रदेश से गिरफ्तार किया है। बदमाश ने सोशल मीडिया पर एक महिला से दोस्ती कर कस्टम के नाम पर धोखाधड़ी की थी। इस मामले में एक मूल रूप से दिल्ली का रहने वाला अन्य विदेशी आरोपी भी शामिल था। जिसकी गिरफ्तारी की कोशिश अभी जारी है।

क्या था पूरा मामला?

साइबर क्राइम भोपाल को नरेश मुगद्ल (45) नाम के एक व्यक्ति ने शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत के मुताबिक नरेश की बहन प्रीति मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया में रहती हैं। प्रीति की दोस्ती सोशल मीडिया पर एक अंजान व्यक्ति से हुई। दोस्ती के चलते उस व्यक्ति ने प्रीति को एक करोड़ का कीमती तोहफा पार्सल से भेजने की पेशकश की थी। इसमें पार्सल भेजने के अलावा पार्सल डिलीवर करने वाला एक अन्य व्यक्ति भी शामिल था। पार्सल प्राप्त करने के लिए उन्होंने प्रीति से 71 लाख रुपए टैक्स आदि के तौर पर ऐंठे थे।

बदमाशों ने 13 अलग-अलग खातों में 71 लाख रुपए जमा कराए

बदमाशों ने प्रीति को पार्सल प्राप्त करने के लिए डिलीवरी चार्ज, एंटी मनी लॉण्डरिंग फीस, एंटी टेरेरिज्म फीस, टैक्स आदि के नाम पर 13 अलग-अलग खातों में पैसे जमा करने को कहा था। पैसे प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपने मोबाइल नंबर बंद कर लिए। आरोपियों के मुताबिक उन्होंने बैंक खाता धारकों से कमीशन लेकर उनका करंट अकाउंट बनवाया। जिसे उन्होंने फ्रॉड का पैसा ट्रांसफर करने में इस्तेमाल किया।

बड़े तालाब में मिले शव की शिनाख्त हुई

परिजनों ने मौत को संदिग्ध बताया, 12वीं की परीक्षा देने के बाद बुआ के घर मेहमानी में आया हुआ था

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में स्थित बड़े तालाब में सोमवार की रात को मिले नाबालिग किशोर के शव की शिनाख्त कर ली गई है। मृतक उदयपुरा रायसेन का रहने वाला था। 15 दिन पहले पिपलानी में रहने वाली बुआ के घर मेहमानी में आया था। सोमवार की दोपहर को रिश्ते के चाचा के साथ भोपाल में घूमा। प्रभात चौराहा से उसने चाचा को घर लौटा दिया और दोस्त से मिलकर लौटने की बात कही।

इसके बाद से वह लापता था। परिजनों ने उसकी गुमशुदगी अशोका गार्डन थाने में दर्ज करा दी। तलैया पुलिस ने सोमवार की ही रात को किशोर के शव को राजा भोज प्रतिमा के पास से बरामद किया था। मंगलवार की रात को बॉडी की शिनाख्ती की जा सकी थी। जानकारी के मुताबिक अमित लोधी (17) पुत्र राजेश लोधी निवासी शिमलिया गांव तहसील उदयपुरा रायसेन का रहने वाला था। हाल ही में उसने 12 कक्षा की परीक्षा दी थी। उसके रिश्ते के चाचा रोहित ने बताया कि भतीजा 15 दिन पहले गांव से पिपलानी में रहने वाली अपनी बुआ के घर मेहमानी में आया था। वह मुझ से केवल दो साल छोटा है, लिहाजा हम दोनों में दोस्ताना रिश्ता था। मैं भी उसके साथ आया हुआ था। सोमवार को हम घूमने निकले थे। अशोका गार्डन व आस पास के इलाकों में घूमने के बाद प्रभात चौराहा पर बस के इंतेजार में खड़े थे। तभी अमित ने बताया कि पास में उसका दोस्त देवी सिंह रहते हैं। वह उससे मिलने उसके घर जा रहा है, इसके बाद से वह देर शाम तक नहीं लौटा। उसे कॉल किए तो पहले तो कॉल नहीं किया गया। बाद में नंबर ब्लैक लिस्ट कर दिया गया। संदेह होने पर उन्होंने अशोका गार्डन थाने में इसी रात को गुमशुदगी दर्ज करा दी थी।

मंगलवार की रात हो सकी पहचान- सोमवार की रात को करीब दस बजे तलैया पुलिस ने अमित के शव को बड़े तालाब से बरामद किया था। उसकी शिनाख्त नहीं हो सकी थी। पुलिस ने शव मिलने की सूचना आस पास के सभी थानों में दी थी। मंगलवार को अशोका गार्डन पुलिस ने बॉडी के फोटो मृतक के परिजनों को दिखाए, जिससे उसकी पहचान हो सकी।

परिजनों को अनहोनी की आशंका- मृतक के चाचा बब्लू लोधी ने बताया कि भतीजे के साथ कुछ अनहोनी हुई है। वह देवी के घर जाने का बोलकर निकला था। अब देवी बता रहा है कि अमित उसके घर तक आया ही नहीं।

एसआई बोले जांच में होगा खुलासा

मामले की जांच कर रहे एसआई अखिलेश कुमार ने बताया कि देवी से पूछताछ की है, उसने अमित द्वारा उसके घर आने की बात से इनकार किया है। बॉडी की शिनाख्ती के बाद बुधवार को शव परिजनों को सौंप दिया है। मामले की जांच कर रहे हैं, जिससे खुलासा हो सके कि अमित की मौत का असल कारण क्या है। हालांकि प्रारंभिक जांच में तालाब में डूबने से मौत होना लग रहा है। उसकी जेब से सुसाइड नोट नहीं मिला है। पीएम रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कार्रवाई तय करेंगे।

म.प्र. में इस सप्ताह बूंदाबांदी-बादल का अनुमान

अप्रैल में बारिश का ट्रेंड, इस बार भी सिस्टम की एक्टिविटी; अभी खंडवा-मंडला सबसे गर्म

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अप्रैल महीने में बारिश का ट्रेंड है। इस बार भी सिस्टम की एक्टिविटी है। 5 अप्रैल को उत्तर भारत में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो सकता है। जिसका प्रदेश में 2-3 दिन बाद असर होने की संभावना है। यदि सिस्टम आता है तो बूंदाबांदी-बादल छा सकते हैं। इससे पहले प्रदेश में गर्मी का असर है। मंगलवार को खंडवा और मंडला सबसे गर्म रहे। भोपाल में शाम को बादल भी छाए। ऐसा ही मौसम प्रदेश के कई शहरों में देखने को मिला। मौसम विभाग के अनुसार- अगले 4 से 5 दिन तक दिन के टेम्प्रेचर में 2-3 डिग्री की बढ़ोतरी हो सकती है। रात में भी गर्मी का असर देखने को मिल सकता है।

अप्रैल का दूसरा दिन भी गर्म रहा

अप्रैल का दूसरा दिन भी गर्म रहा। खंडवा और मंडला में तापमान 40 डिग्री के पार दर्ज किया गया। रतलाम, दमोह, सिवनी, बैतूल, खरगोन में पारा 39 डिग्री या इससे अधिक रहा। सबसे कम पारा पचमढ़ी में 32.8 डिग्री दर्ज किया गया। हालांकि, कुछ शहरों में हवा में ठंडक भी देखने को मिली। हवाओं की वजह से ऐसा हुआ।